वक्तृत्त्वकला के बीज

दसवां भाग

समन्वय प्रकाशन

☐ प्रबन्ध सम्पादक
मोतीलाल पारख

☐ प्रकाशक
मोतीलाल पारख
श्यामसुखा हाऊस
ढढो का चौक, बीकानेर

☐ संस्करण
वि० स० २०३२ चैत्रसुदी १३
श्री महावीर निर्वाणशताब्दी वर्ष
ई० स० १९७५, अप्रेल

☐ मुद्रक
श्रीचन्द मुराना के लिए
दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स,
दरेसी आगरा—२

☐ मूल्य · पांच रुपए

"वक्तृत्वकला के बीज" के अमर संग्रहकर्त्ता



बहुश्रुत मनीषी मुनि श्री धनराज जी

समर्पण

पथ से भी पथिक बडा होता है। अति प्रलब पथ भी वढते हुए पथिक के अध्यवसायी चरणो के आगे क्रमश छोटा बनता हुआ चला जाता है और एक क्षण ऐसा आता है, जहा पथ का अतिम छोर मजिल का दर्शन करवा देता है। मजिल को पाकर कृतकृत्य पथिक मार्गानुभूत सभी कठिनाइयो को विस्मृत-सी कर देता है।

मेरा भी यह द्वादशवर्षीय अनवरत परिश्रम इसी परिस्थिति का द्योतक है। अनेक अतर्कित वाधाओ तथा हृदय को हताश करने वाली विचित्र रुकावटो के वावजूद मेरे दृढ सकल्पवल और अडोल आत्मविश्वास ने मुझे इस "वक्तृत्वकला के वीज" रूपी सहकार को पुष्पित एव फलित देखने का सुअवसर प्रदान किया। आज अपने परिश्रम को पूर्णता के परिवेश मे पदन्यास करते हुए देख, मैं भारमुक्त-सा वन गया।

दिव्य आत्मशक्ति के प्रेरणास्रोत मेरे आराध्यदेव भगवान् महावीर की पच्चीसवी निर्वाणशताब्दी का स्वर्णिम अवसर मुझे अनायास प्राप्त हो रहा है। अत फूल-फूल की पाँखुडी जैसा मेरा यह लघुतम उपहार उनके ही पावन चरणकमलो मे उपहृत करता हुआ मैं अपने आपको कृतकृत्य मानता हूँ, साथ-साथ यह मगलकामना भी करता हूँ कि हसवुद्धि वाले पाठक अनेक ज्ञातव्य विषयो मे से श्रेय को आत्मसात् करते हुए हेय का त्याग करेगे।

—धनमुनि (प्रथम)

प्रबन्धकीय

"भवितव्य भवत्येव" इस युक्ति को चरितार्थ करते हुए जीवन मे मनुष्य द्वारा कुछ ऐसे कार्य बन पडते हैं कि जिन्हे देखकर वह स्वय यह विश्वास नही कर पाता कि क्या ये कार्य मेरे द्वारा हुए हैं। वस्तुत मनुष्य का बाह्य क्रिया-कलाप निमित्त मात्र ही है, अन्दर का उपादान कुछ अनूठा ही काम करता रहता है।

वैसे बाल्यकाल से मैं बहुत कम साधु सन्तो के सम्पर्क मे रहा हूं। कभी-कभी माता जी के साथ अवश्य आचार्य श्री, मुनि श्री धनराज जी, मुनि श्री चन्दनमल जी एव साध्वी श्री दीपा जी के दर्शन करता रहा हूं। कारण मेरी माताजी स्वनामधन्य श्री केवलचन्द जी स्वामी की पुत्री एव धन-चन्दन मुनि श्री की सहोदरा लघु-भगिनी हैं, अत भानेज होने के नाते मुझे यत्किंचित् उनके दर्शनो का मौका मिलता रहा है। पूज्य नानाजी, महाराज मुनि श्री केवलचन्द जी के दर्शन का सौभाग्य मुझे नही मिला। वे मेरे जन्म से पहले ही स्वर्गवासी हो गये थे।

वि० स० २०२३ की साल जब आचार्य श्री तुलसी का, दक्षिण यात्रा को जाते हुए, मध्यवर्ती क्षेत्र अहमदाबाद मे चार्तुमासिक प्रवास हुआ, तब मुनि श्री चन्दनमल जी भी साथ थे। मैं उस समय सागरमल शुभकरण की—अहमदाबाद लक्ष्मी कोटन मिल्स मे सर्विस पर था। आचार्य श्री तुलसी का निवास भी सागरमल शुभकरण के बगले-दूगड निवास मे था। उस समय मुझे सत-सम्पर्क का काफी मौका मिला।

साहित्य प्रकाशन की ओर

मुनि श्री चन्दनमल जी ने चार्तुमासिक चतुर्दशी से सम्वत्सरी तक लगभग ५० दिनो का मौन-व्रत स्वीकार किया था, अत वे अहमदाबाद के उपनगर उस्मानपुरा मे चम्पालाल जी ओस्तवाल के बगले मे एकान्त के लिए विराजमान थे। मैं प्राय वहा दर्शन हेतु जाया करता था।

वि० स० २०२२ मे वृद्ध मुनियो की सेवा हेतु मुनि श्री चन्दनमल जी का राजलदेसर (राजस्थान) मे १० महीनो का लम्बा प्रवास हुआ था। उस

समय वहा के श्री सोहनलाल जी चण्डालिया ने मुनि श्री का सस्कृत एव प्राकृत का काफी साहित्य धारकर लिपिबद्ध किया था जो बहुत ही सुन्दर अक्षरो मे सशोधित किया हुआ तैयार था। वे पाण्डुलिपियाँ मेरे देखने मे आयी। मेरे अन्तर से ऐसी आवाज आई कि क्यो न मैं ऐसे साहित्य-प्रकाशन के कार्य मे सहयोगी बनूँ। यद्यपि यह कार्य मेरे जैसे नौकरी-पेशे वाले के लिए शक्य नही था, फिर भी मेरा सकल्प मुझे उस तरफ प्रेरित कर रहा था। एक रोज मैंने अपनी भावना मुनि श्री के सामने रखी। मुनि श्री ने मेरी मनोभावना का ममादर करते हुए मेरे मकल्प को प्राणवान बनाया और फरमाया कि सकल्पबल से प्रत्येक असम्भावित कार्य को व्यक्ति सम्भावित बना सकता है, सिर्फ कार्य-सलग्नता होनी चाहिए।

अकल्पित सफलता

मैं इस दिशा मे प्रयत्नशील बना। मुनि श्री की सेवा मे आने वाले कुछ विशिष्ट व्यक्तियो से परिचय करता रहा तथा साहित्य-विषय की परिचर्चा उनसे चलाता रहा। ३-४ पुस्तको के प्रकाशन मे सहयोगी बनने वाले कुछ व्यक्ति मुझे अनायास मिल गए। सहयोगियो द्वारा अर्थ-राशि भी मेरे पास एकत्रित होने लगी। मुनि श्री के प्रति एव उनके साहित्य के प्रति समाज इतना आकृष्ट है, यह जानकर मैं भी आश्चर्यचकित रह गया। इम अकल्पित सफलता का श्रेय मुनि श्री के उच्चकोटि के साहित्य को ही था, मैं तो केवल निमित्त मात्र ही था। उसके बाद मैंने कई प्रेस प्रकाशन की दृष्टि से देखे तथा बेचरदास जी दोशी, दलसुखभाई मालवणीय जैसे कुछ साहित्यिक व्यक्तियो को मुनि श्री के मौन खोलने के बाद दर्शन भी करवाए। किन्तु मेरे सर्विस मे होने के कारण उचित ममय के अभाव मे यह योजना सफल न हो सकी। उम वर्ष का पावस-प्रवास मुनि श्री का बेंगलोर सीटी मे घोषित हुआ। वहा श्री ताराचन्द जी छाजेर तथा उनके लघु भ्राता श्री मनोहर जी छाजेर 'भारतीय' जो स्वय साहित्यकार है, उन्होंने इस प्रकाशन कार्य को हाथ मे लिया। अहमदाबाद के मौनावस्था मे लिखी हुई पुस्तक "मौन वाणी" सर्वप्रथम उन्होंने प्रकाशित करवाई। उसमे श्रीमती कान्ता कोचर जिनके प्रकाशन के लिये मैंने कुछ पहले सम्पर्क साधा था, वह कार्यरूप मे परिणित हो गया।

फिर "ज्योति-स्फुलिंगा" पुस्तक छाजेर प्रकाशन की ओर से निकली। इस भांति यह क्रम आगे बढने लगा, फिर भी प्रूफ सशोधन आदि की बडी कठिनाइयाँ पडती रही।

श्रीचन्द जी सुराना से सम्पर्क

मुनि श्री धनराज जी का कुछ साहित्य आगरा स्थित श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' द्वारा निकला था। साहित्य शुद्ध एव सुन्दर लगा, अत मैंने भी उनसे सम्पर्क किया। मुनि श्री के साहित्य के लिए उन्होने अपनी सेवा देने के लिए उत्सुकता व्यक्त की। बस फिर तो यह क्रम बहुत तेजी से चला। "आर्जुन-मालाकारम्", "उपदेशामृतम्", "प्रभव प्रबोध काव्यम्", एव "रयणवाल कहा" आदि पुस्तकें मेरे ही सम्पर्क सूत्र से निकली। अनेक हिन्दी, सस्कृत एव प्राकृत की पुस्तकें, जहाँ-जहाँ मुनि श्री के चातुर्मास हुए, वहाँ के स्थानीय श्रावको द्वारा निकलती चली गई। इस भाँति दक्षिण यात्रा के चार वर्षों मे मुनि श्री का विशाल साहित्य प्रकाश मे आया और मेरा इस दिशा मे साहस एव उत्साह बढता चला गया।

वक्तृत्वकला के बीज

इस प्रकार श्री चन्दनमुनि के साहित्य-प्रकाशन मे यत्किंचित् सहयोगी बनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, परन्तु श्री धनमुनि के साहित्यिक कार्य मे मैं कुछ भी सहयोगी न बन सका। अनेकधा मैं उस तरफ भी कुछ करने की सोचता रहा। पर कैसे क्या किया जाये—कुछ समझ नही पा रहा था।

इधर मुनि श्री चन्दनमल जी चातुर्वार्षिक दक्षिण यात्रा-प्रवास सम्पन्न कर बम्बई से सूरत होते हुए केशरियाजी के मार्ग से उदयपुर पहुँच रहे थे, तब कुछ रास्ते की सेवा करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। मैंने उनसे श्री धनमुनि के साहित्य को लेकर अपनी भावना व्यक्त की। मुनि श्री ने कहा—"उनका तो बडे मे बडा साहित्य, जो अभी प्रकाशित नही है, वह है—"वक्तृत्वकला के बीज" जिसकी पाण्डुलिपि चिकमगलूर से होती हुई बैंगलौर आचार्य श्री के पास पहुँची थी। परन्तु वह बहुत बडा काम है शायद उसके ७-८ भाग बन सकते हैं। इतने भारी काम को पार पहुँचाना तेरे लिये शक्य है क्या ?"

मैंने कहा—"आपका आशीर्वाद चाहिये। पूर्वकृत कार्य के अनुभव से मुझे

पूर्ण विश्वास है कि मैं इस कार्य मे निश्चित ही कृत्य-कृत्य बनूंगा।" मैंने श्री धनमुनि से भी एक बार ऐसी प्रार्थना की थी।

आखिर इस भागीरथ कार्य को मैंने हस्तगत कर ही लिया और भिन्न-भिन्न भागो के अलग-अलग प्रकाशक होने के कारण 'समन्वय प्रकाशन' नाम से इस प्रकाशन कार्य को चालू किया। उस वर्ष मुनि श्री धनराज जी का वार्षिक प्रवास छापर मे वृद्ध सन्तो की सेवा के लिए हुआ। वह प्रूफ आदि की दृष्टि से बहुत ही सुविधाजनक रहा। एक ही वर्ष मे "वक्तृत्व कला के बीज" के पाँच भाग प्रकाशित हो गए। किन्तु कुल ८ की जगह १० भाग होते नजर आने लगे।

सघर्षों के बीच

इस ग्रथ के प्रकाशन कार्य मे अनेको सघर्षो के बीच से मुझे गुजरना पडा। अनेक अवरोध आए। प्रशसा के स्थान पर अनेक उलाहने सहने पडे। परन्तु धन-चदन मुनि की कृपा से बादलो की भान्ति वे सारे सघर्ष स्वत क्षीण होते चले गये। प्रकाशित भाग जनता के सामने आये तो बडी सुन्दर प्रतिक्रिया हुई। अनेको के शुभ सवाद मिले। तथा अन्यान्य सम्प्रदायो के अनेक विज्ञ मुनिवरो तथा साहित्यिक विद्वानो ने बडे चाव से उन नवप्रकाशित भागो की माग की। सभी को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इतने विशाल कार्य मे मुझे अर्थ की दृष्टि से किंचित भी कठिनाई नही पडी। हितैषियो का सहयोग अधिक से अधिक मिलता रहा।

उन महानुभावो को मैं कभी नही भुला सकता जिन्होने मेरा हर तरह से इस पुनीत कार्य मे सहयोग किया है। उल्लेखनीय नामो मे अहमदाबाद के श्री भगवतप्रसाद रणछोडदास पटेल एव श्री गणेशमल दूगड हैं जिनके असाधारण सहयोग के बिना शायद इस कार्य को मैं पूरा नही कर पाता।

आज मेरा यह कार्य अपनी सम्पन्नता के साथ विज्ञ पाठको के हाथो मे प्रस्तुत हो रहा है। मैं अपने आपको भार मुक्त-सा महसूस कर रहा हूँ। भविष्य मे ऐसे सुअवसर मुझे प्राप्त होते रहे—इसी शुभ सकल्प के साथ—

ग्वालियर
दि. ५।८।१९७४

—मोतीलाल पारख

कृतज्ञता के परिप्रेक्ष्य में

सर्वप्रथम मैं अपने प्रात स्मरणीय **श्रीकालू गुरुदेव** के चरणारविन्दो मे इस महान् ग्रन्थ की सम्पन्नता पर नतमस्तक हूँ। मैंने जो भी कुछ पाया, सीखा, समझा और आत्मसात् किया, वह सब उनके अलौकिक अनुग्रह का ही सुपरिणाम है। मैं क्या था, मुझे किस योग्य बना दिया यह उन्ही के कलाकार हाथो का चमत्कार है। उनकी कृतज्ञता शब्दो द्वारा ज्ञापित करना शायद कुछ बालोचित प्रयास ही होगा। वह तो वचनातीत एव वर्णनातीत है। बस उनके अकथनीय उपकार का मैं प्रतिपल स्मरण करता रहूँ—यही मेरे लिए आनन्द का विषय है, जैसा कि महर्षि वाल्मीकि श्रीराम के मुह से हनुमान के लिए कहलाते हैं —

"मय्येव जीर्णतां यातु यत्त्वयोपकृत हरे !"



इस पावन प्रसग पर भावितात्मा पितृचरण **श्री केवलमुनि** की स्मृति भी मेरे मानसपटल पर सहज उभर आती है। ससार मे लाखो पुरुष पितृपद को सुशोभित करते हैं, परन्तु श्री केवलमुनि—जैसे आत्मगवेषी और सतान-वत्सल पिता इतिहास के अमरपृष्ठो पर खोजने से विरले ही दृष्टिपथ को पावन करते हैं। बस **"सागर सागरोपम"** उन जैसे वे ही थे—इतना ही कहना पर्याप्त है! उन्होने किस भाँति अपनी सन्तानो को सयममार्ग पर अग्रसर किया—यह किसी से छुपा नही है। आज मेरे द्वारा जो भी कुछ विशिष्ट कार्य हो रहा है, वह उन्हीं की पावन प्रेरणा का सुफल है।



उसी भाति मेरे अनन्य सहयोगी लघुभ्राता **श्री चन्दनमुनि** का भी इस जटिल कार्य मे विशिष्ट आभ्यन्तर योगदान रहा है। राम की सर्वजनविदित विजययात्रा मे लक्ष्मण के सतत सहयोग को कैसे गौण किया जा सकता है? इतना ही कहना उचित होगा कि उनके प्रबलतम सहयोग के परिणामस्वरूप

ही यह विशालकाय ग्रन्थ जन-जन की पठन सामग्री के रूप मे प्रस्तुत हो रहा है। उन के लिए क्या आभार व्यक्त किया जाय, वास्तव मे ऐसे सुयोग्य एव विनयी कनिष्ठ भ्राता का पाना ही मेरे लिए गौरव का विषय है।



साहित्यकार साहित्य निर्माण कार्य मे तभी स्वय को यशस्वी बना पाता है, जब उसे मनोनुकूल अनुगामी का सामीप्य प्राप्त हो। **श्री झूमर मुनि** का भी मुझे ऐसा ही सहयोग प्राप्त हुआ है। इस ग्रथ की सकलना मे मुझे अनेकानेक दुर्गम ग्रन्थो का पारायण तथा दोहन करना पडा है। इस बौद्धिक परिश्रम को बुद्धिजीवी ही जान सकता है। ऐसे आन्तरिक श्रम के लिए शरीर का स्वस्थ रहना नितान्त आवश्यक है। कार्य-सलग्न बुद्धिजीवी को स्वय का ख्याल कम रह पाता है, किन्तु पार्श्ववर्ती योग्य सहयोगी ही उन सब चीजो का विशेष ध्यान रखता है और सामयिक आवश्यकताओ की पूर्ति करता है। श्री झूमरमुनि बडे ही समयज्ञ एव कुशल सेवाभावी हैं प्राय अस्वस्थ रहने वाले मेरे शरीर को उन्होने यथासाध्य स्वस्थ रखने का प्रयत्न किया है। बस, यही कारण है कि मैं इस विशाल सग्रहग्रन्थ को सानन्द सम्पन्न कर सका हूं।



इन सभी सहयोगियो के साथ मैं मुनि श्री राकेशजी को कैसे भुला सकता हूं, जो मेरे इस ग्रन्थ के निर्माण मे प्रबल प्रेरक रहे हैं। वे बडे ही विनम्र एव गुणग्राही वृत्ति के धनी हैं। गुरुओ के गौरव को अक्षुण्ण रखना उनकी सहज प्रवृत्ति है।

विक्रम सवत् २०१७ के वर्ष मेवाड से थली जाते समय विहार मे वे मेरे साथ हो गए। मेरे द्वारा सगृहीत व्याख्यान सामग्री को देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने कहा—"मुनिश्री! यह तो अद्भुत सग्रह है। यत्र-तत्र उपलब्ध होना असभव है। इसे आप यदि एक ग्रथ का रूप दे दे तो भावी पीढी के लिए यह अमूल्य निधि के रूप मे सुरक्षित रह सकता है।" आखिर यह उनकी बलवती अन्त प्रेरणा साकार बन कर रही। फलस्वरूप यह विशालकाय ग्रन्थ "वक्तृत्वकला के बीज" नाम से जनता के सामने आया।

उत्तर पक्ष मे जिनके प्रति सहज ही कृतज्ञता प्रादुर्भूत होती है, वे हैं कवि-वर्य **उपाध्याय श्री अमरमुनि जी**। श्री भर्तृहरि के वे पद **"परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्य, निजहृदि विकसन्त' सन्ति सन्त कियन्त"** जिनमे मूर्त्तरूप ले चुके हैं। उनका कितना सरस, सहृदय एव गुणग्राही मानस है, यह उनकी अमृतस्राविणी लेखनी ही अभिव्यक्त कर देती है। । वे कही भी, उन्हे जो अच्छा, सहज और विशिष्ट लगता है, उसे अभिव्यजना देने मे बिलकुल नही सकुचाते। उनकी प्रमोदमेदुरा गुणानुरागिता को सप्रदाय भेदो की समुन्नत दीवारे किंचित भी तिरोहित नही कर सकती। मेरे इस "वक्तृत्वकला के बीज" पर उनके द्वारा लिखी गई भूमिका उसी का स्पष्ट निदर्शन है। काश ! यह गुणज्ञता का महान् सद्गुण अन्यान्य विज्ञजनो मे भी उनकी भाति विकास पाता।



इस ग्रन्थ की पूर्णाहुति के मगल-प्रसग पर मैं **युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी** को भी स्मृति पटल से ओझल नही कर सकता, जिन्होने मेरे इस प्रयास का मूल्याकन करके शुभकामना के रूप मे अपना अमूल्य सदेश बिना मागे ही वितरित किया। यह उनकी गरिमा के अनुरूप है। मैं भी अध्ययनकाल मे उनका सहपाठी था। शायद उस बाल्यकालिक मैत्री को पुनर्नवीन करते हुए आपने ऐसा किया हो ! कुछ भी हो, दुग्धधाराधवल यह अयाचित मगलसदेश निश्चित ही मेरे श्रम पर चार चाँद लगानेवाला सिद्ध होगा।



अन्त मे वे विद्यार्थी, युवक और वृद्ध भी भुलाए नही जा सकते, जिन्होंने इस ग्रन्थ को सविधि धारकर तैयार किया है। श्री डूँगरगढ के उत्साही श्रावको ने इस कार्य का श्रीगणेश किया और जोधपुर के विवेकी श्रावको ने इसे सपन्नता दी। बीच के लम्बे समय मे अनेकानेक गावो-नगरो के भक्त इसमे अपना योगदान देते रहे और इस कार्य को आगे बढ़ाते रहे। पाण्डुलिपि की लगभग सौ कॉपियो मे यह समावेश पाया।

इतने बडे ग्रथ को प्रकाश मे लाना भी साधारण काम नही था। किन्तु बीकानेर-निवासी कर्त्तव्यनिष्ठ, उत्साही **मोतीलाल पारख** ने अपनी अत प्रेरणा से प्रेरित होकर सहसा इस कार्य को हस्तगत कर लिया और भारी विघ्न-बाधाओ को चीरते हुए बडी प्रामाणिकता एव निष्ठा के साथ इसे पार पहुँचाया। उक्त कार्य मे उसे **श्रीचन्दजी सुराना** 'सरस' का विशिष्ट सहयोग रहा है। उन्होने पूर्ण मनोयोगपूर्वक इस ग्रन्थ को यथाशक्य सुन्दर, शुद्ध एव आकर्षक बनाने की चेष्टा की है।

इस भाति मेरे इस भगीरथ-कार्य मे अनेक सहयोगियो का सहयोग और अनेक मनीषियो की सहानुभूति रही है। नामोल्लेख करके यहाँ किस-किस को याद किया जाए ! किस-किस को भुलाया जाए ! सभी का समुचित सहयोग, फिर वह चाहे स्वल्पतम भी क्यो न हो, मेरे लिये चिरस्मरणीय रहेगा।

एक उर्दू के शायर ने क्या ही खूब कहा है—

"जिस ने कुछ अहसाँ किया, इक भार हम पर रख दिया।
सर से तिनका क्या उतारा, सर पै छप्पर रख दिया।"

इन्ही शब्दो के साथ विनयावनत—

—धनमुनि (प्रथम)

मत-सम्मत

तेरापंथ धर्म संघ के अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी

मनुष्य विभिन्न शक्तियों का स्रोत है। नही, वह अनन्त-शक्तियो का स्रोत है।

पर, जिन-जिन शक्तियो को अभिव्यक्त होने का समय और साधन मिल पाता है वही हमारे सामने विकसित रूप से प्रगट होती है, शेष अनभिव्यक्त रूप मे अपना काम करती रहती हैं।

सग्राहक शक्ति भी उन्हीं मे से एक है, जो अन्वेषण-प्रधान है और दूसरो के लिए बहुत उपयोगी बन जाती है।

मक्खन का आस्वादन करना एक बात है, पर उसे दही मे से मथकर निकालकर सग्रहीत करना एक विशिष्ट शक्ति है।

मुनि श्री धनराजजी (सिरसा) मे यह शक्ति अच्छी विकसित हुई है। शुरू से ही उनकी यह धुन रही है, आदत रही है, वे बराबर किसी न किसी रूप मे खोज करते रहते हैं और फिर उसको सग्रहीत कर एक आकार दे देते हें। वह साहित्य बन जाता है, जन-जन की खुराक बन जाता है।

-"वक्तृत्वकला के बीज" एक ऐसी ही कृति हमारे समक्ष प्रस्तुत है, जो मुनि श्री धनराजजी की सग्राहकशक्ति का एक विशिष्ट उदाहरण है। उसमे प्राचीन, अर्वाचीन अनेक ग्रन्थो का मन्थन है, अनेक भाषाओ का प्रयोग है। मूल उद्धरण के साथ हिन्दी अनुवाद देकर और सरसता उसमे लाई गई है। बडा सुन्दर प्रयास है। अपनी वक्तृत्वकला का विकास चाहनेवाले वक्ता के लिए बहुत उपयोगी है यह ग्रन्थ, जो अनेक भागो मे विभक्त है। मेरा विश्वास है—यह प्रयत्न बहुजन हिताय—बहुजन सुखाय सिद्ध होगा।



श्री श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी वर्धमान श्रमणसंघ के आचार्य श्री आनन्द ऋषि

'वक्तृत्व कला के बीज' के कुछ भाग देखे। मुनि श्री धनराज जी का अथक श्रम, वहुश्रुतता तथा दृढ अध्यवसाय अत्यत सराहनीय है। इस विशाल सग्रह को वक्ता और लेखक गण--एक अमूल्य निधि की भाति सजोकर रखेगे।

□

राष्ट्रसंत उपाध्याय श्री अमर मुनि

प्रस्तुत कृति मे जैन आगम, वौद्ध वाड्मय, वेदो से लेकर उपनिषद्, ब्राह्मण पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोक कथानक, कहावते, रूपक, ऐतिहासिक घटनाए, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाए इस प्रकार शृखलावद्ध रूप मे सकलित हैं कि किसी भी विषय पर हम वहुत कुछ विचार सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सचमुच वक्तृत्व कला के अगणित वीज इसमे सन्निहित हैं। सूक्तियो का तो एक प्रकार मे यह रत्नाकर ही है। अग्रेजी साहित्य व अन्य धर्म ग्रन्थो के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसग व स्थल तो ऐसे हैं जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नही है, उनमे विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है। और उस पर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक बना सकता है। लगता है, जैसे मुनि श्री जी वाड्मय के रूप मे विराट् पुरुष हो गए है। जहाँ पर भी दृष्टि पडती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है, जो हृदय को छू जाता है, और यदि प्रवक्ता प्रसगत अपने भाषण मे उपयोग करे तो अवश्य ही श्रोताओ के मस्तक झूम उठेगे।

पुस्तक मे विषयो का उपयुक्त चयन एव तत्सम्वन्धित सूक्तियो आदि का सकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का सकलन अन्यत्र इस रूप मे नही देखा गया।

□ सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार मुनि श्री बुद्धमलजी

'वक्तृत्वकला के बीज' मुनिश्री धनराजजी के श्रम-सातत्य और दृष्टि-नैपुण्य का एक पुण्य फल है। अनेक भागो मे सकलित इस ग्रन्थ मे विभिन्न विषयो पर विभिन्न ग्रन्थो एव चिन्तको की विचार-सामग्री एकत्रित की गई है। वक्तृता के अभ्यासियो को अपनी योग्यता बढाने तथा अभ्यस्तो को अपनी वक्तृता मे निखार लाने के लिए इन भागो मे बीजात्मक सामग्री प्रचुर मात्रा मे सहज ही उपलब्ध हो सकती है। ज्ञान-वृद्धि मे भी यह सकलन अच्छा सहयोगी बन सकता है। मैं मुनिश्री के अध्यवसाय की भूरि-भूरि प्रशसा करता हूँ और आशा करता हूँ कि जनता इससे लाभान्वित होगी।

□ प्रसिद्ध साहित्यकार श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री

'वक्तृत्वकला के बीज—देखकर मन रीझ गया। इतना सुन्दर सतुलित और व्यापक तथा विशाल सग्रह किसी भी साधारण वक्ता को वाग्मी और सामान्य लेखक को कलम कलाधर बना सकता है। मुनि श्री धनराजजी ने जिस उदारता और तटस्थता के साथ अपनी साठ वर्षीय ज्ञान निधि का सचित कोष सर्वसाधारण के लिए समर्पित किया है, वह साहित्य के इतिहास मे एक अनूठा उदाहरण होगा।

□

बहुश्रुत श्री मधुकर मुनि

ज्ञानार्जन से भी अधिक महत्व का कार्य है—ज्ञानदान ! मुनिश्री धनराजजी ने दीर्घकाल तक ज्ञानार्जन कर स्वय का उपकार किया पर अब उस अमूल्य ज्ञाननिधि का सर्व सामान्य के लाभार्थ जो वितरण प्रारभ किया है, वह उनकी महान जनोपकारिता का निदर्शन है ।

'वक्तृत्व कला के बीज' पुस्तक के ६ भाग—एक अद्‌भुत ज्ञान-कोष है । जैसे-जैसे समय बीतेगा, पाठक इनका महत्व समझेंगे । और फिर इनके लिए तरसेंगे । असग्रही मतो के लिए भी यह ग्रन्थ सग्रहणीय है ।

□

महासती उमरावकंवर 'अर्चना'

'वक्तृत्वकला के बीज' देखे, बीज मे विशाल वृक्ष लहरा रहा है । ग्रन्थ का एक-एक भाग, एक-एक कोष्ठक और उसका एक-एक प्रकरण अपूर्व दुर्लभ सामग्री का सग्रहालय है ।

प्राचीन जैन साहित्य मे एक कहावत है–'उपोमास्वाति सग्रहीतार ' सग्रह कर्त्ताओ मे उमास्वाति प्रमुख है, मुनिश्री धनराज जी ने भी आज सग्रह कर्त्ताओ मे एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है ।

आने वाले कुछ वर्ष बाद पाठक शायद यह विश्वास न करेगा कि एक ही व्यक्ति ने इतना विशाल सग्रह कैसे कर डाला ? ग्रन्थ की उपयोगिता असदिग्ध है ।

□

शतावधानी मुनि श्री महेन्द्र कुमार 'प्रथम'

मुनिश्री धनराजजी 'प्रथम' की पैनी दृष्टि अनवरत श्रम से अनुस्यूत होकर बहुमूल्य मणिमुक्ताओ की उपहृति का सहज निमित्त बन जाती है। वे जन-भावना को भलीभाति पहचानते हैं, अत उनके गीत लोकगीत तथा उनका साहित्य लोक-साहित्य हो जाता है। जनता बडे आदर के साथ उन गीतो को सुनती है तथा उस साहित्य को श्रद्धा के साथ पढती है। उन्होने अब तक साहित्य के भण्डार को जितना समृद्ध किया है, उतना थोडे ही साहित्यकार कर पाते हैं। उनकी वक्तृत्वशैली भी अद्भुत है। अध्यात्म, लोक-भजन तथा सरस उदाहरणो का सगम वनकर उनकी वक्तृता जन-मानस पर छा जाती है।

मुनिश्री धनराजजी 'प्रथम' का साहित्य जन-सामान्य मे जितनी विपुल मात्रा मे पढा जाता है, तेरापथ साधु-समाज के लेखको के अन्य साहित्य की तुलना में वह सर्वाधिक है। यह उनके साहित्य की मौलिक विशेषता है। 'वक्तृत्वकला के वीज' पुस्तक का सचयन करके तो उन्होने जन-सामान्य तथा विद्वज्जनो मे विशेषत अग्रणी स्थान वना लिया है। यह उनकी अद्भुत सूझ, गहन अध्ययनशीलता तथा प्रस्तुतीकरण की कलात्मक क्षमता की परिचायक है। हम आशा करेंगे कि भविष्य मे मुनिश्री इस प्रकार के और भी साहित्यिक रत्न समाज के समक्ष उपहृत करेगे।

दिनाक २३ सितम्बर १९७४
वाराणमी

□

मेवाडभूषण श्री प्रतापमल जी महाराज

श्वेताम्वर तेरापथ सम्प्रदाय के आचार्य श्री तुलसी के अनुयायी श्री धन मुनि 'प्रथम' द्वारा सग्रहीत एव सकलित 'वक्तृत्वकला के वीज' के प्रथम प्रभृति सात भागो का अवलोकन करने का मुझे भी अवसर मिला। सचमुच ही मुनिश्री का पुरुषार्थ अनुमोदनीय है। समन्वय की दृष्टि मे मुनि श्री ने जैन बौद्ध-वैदिक, इस्लाम, सिक्ख, फारसी, व पाश्चात्य धर्म ग्रन्थो की गहरी अन्वेषणा करके जीवनोपयोगी तत्वो का अनुपम-अद्वितीय चयन प्रस्तुत किया है। जो अपने आप मे तत्व-पीयूष का कुम्भ भी कहा जा सकता है। यह सुन्दर चयन ऐसे तो प्रत्येक बुद्धिजीवी के लिए सदैव उपयोगी एव प्रेरणा देने वाला है, पर, अधिक रूप से लेखक एव वक्ताओ के लिए अति उपयोगी है। सभी वाचनालयो मे इन भागो का उपयोग होना श्रेयस्कर रहेगा।

आशा है मुनि श्री के परिश्रम का पवित्र स्रोत अधिकाधिक साहित्योद्यान को पल्लवित करता रहे।

□

मानसजी शास्त्री, हाथरस

श्री धन मुनिजी 'प्रथम' द्वारा सकलित 'वक्तृत्वकला के वीज' नामक पुस्तक के कई खड प्राप्त हुए। श्री मुनि जी ने अथक परिश्रम करके सस्कृत, प्राकृत, हिंदी, अगेजी, गुजराती, राजस्थानी आदि विभिन्न भाषाओ मे प्रचलित विविध विषयो पर सूक्तियाँ एक स्थान पर सकलित करके कई खडो मे पुस्तकाकार करके वक्ताओ तथा मनीषियो के लिये बडा ही उपकार किया है। मेरे विचार मे इतना सुदर सग्रह अन्य किसी ने भी अद्यावधि नही किया है।

इन महापुरुष के परिश्रम का साफल्य यही है कि विद्वज्जन लाभ ले। आशा ही नही विश्वास है कि सहृदय मनीषीगण अवश्य विशद वाणी के लिये' वक्तृत्व कला के वीज' का पूर्ण समादर करेगे।

□

हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी, पजाबी आदि भाषाओ के विद्वान है और उनका अध्ययन अत्यन्त व्यापक है अत उनके मूलाधार ग्रन्थ जैन, बौद्ध और वैदिक धर्म, पाश्चात्य दर्शन, लोकसाहित्य, आयुर्वेद, सामाजिक विज्ञान, इतिहास, पुराण, मनोविज्ञान आदि सभी क्षेत्रो से सम्बद्ध रहे है। मूल उद्धरणो के साथ हिन्दी मे अर्थ देने व सदर्भ ग्रन्थो के उल्लेख से इनकी उपयोगिता अधिक बढ गई है। इन पुस्तको का सहयोग पाकर कोई भी व्यक्ति अभ्यास और परिश्रम मे अच्छा वक्ता और लेखक बन सकता है। ऐसे ज्ञानवर्द्धक, बहुआयामी उपयोगी प्रकाशन के लिए मुनि श्री व प्रकाशक बधाई के पात्र है।

—डा. नरेन्द्र भानावत



वक्तृत्वकला के बीज भाग १ से १०

भाग	पृष्ठ संख्या
पहला भाग	३०६
दूसरा ,,	३६४
तीसरा ,,	३४०
चौथा ,,	३७२
पाचवाँ ,,	३६८
छठा ,,	३५०
सातवा ,,	३००
आठवा ,,	३५२
नौवा ,,	३७०
दसवा ,,	१४८

appended at the end of each volume This was needed for satisfaction of the curiosity of the reader

As said above, the main purpose of the project under review is to serve as a ready aid to speaking As such, the passages assembled therein have been carefully chosen so as to be consistent with the aim in view of the compiler The other and equally valuable feature of the work is information of intimate interest which has been supplied in it, here and there A few illustrations in this regard may suffice

(i) Volume I section I head 7 throws light on some important World Religions and numbers of their adherents

(ii) III 3 13 has to give us some useful information about science and scientists of the world

(iii) IV 4 19 speaks about some renowned saints and great souls of the world

(iv) VI 3 26 tells us something about Income and Income Tax

(v) IX 2 16-17 comprise lists of Indian Embassies and High Commission Offices abroad and *vice versa* And so on And so forth.

Muni Shri Dhana Raj-ji the compiler of this miniature encyclopaedia of quotations and information, is rightly conscious that a work such as the present one must be totally free from all bias, whether in the field of Religion or in that of Politics The consciousness has been maticulously maintained by him throughout Thus, the work must prove very useful for readers of all tastes and shades of opinion alike

आभार दर्शन

मेरे इस भागीरथ कार्य मे सम्पादन सहकारी के रूप मे जिनका तन, मन, धन मे विशिष्ट सहयोग प्राप्त हुआ है उन श्री मदनचद सम्पतराय बोरड को किसी भाति मैं भुला नही सकता। वैसे श्री मदनचदजी मेरे सगे मौसाजी लगते है और उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री सम्पतराय बोरड मौसेरा भ्राता। यद्यपि यह पूर्ण ग्रन्थ उनकी विद्यमानता मे प्रकाशन नही पा सका फिर भी प्रथम पाच भाग उनके समक्ष प्रकाशित हो चुके थे। मैं उनकी कृतज्ञता ज्ञापित किए बिना नही रह सकता। वे कितने सीधे-सादे एव मिलनसार थे यह जानने के लिए उनका सक्षिप्त जीवन परिचय विज्ञ पाठको के समक्ष प्रस्तुत है।

प्रबन्ध सम्पादक

—मोतीलाल पारख

स्व० सेठ श्री मदनचन्दजी बोरड : एक परिचय

यह सृष्टि का अटल नियम है कि "जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु" जन्म का अतिम परिणाम मृत्यु ही है। वस्तुत एक ही जीवन के ये दोनो छोर है। पर जीवन को सजीवन कोई सौभाग्यशाली ही बना पाता है। जिनका जीवन और मरण समरूप से सफल रहा हो, जो ससार से जाते वक्त हसते चले जायें और लोग उनके उपकारी कार्यों को याद करते रोते ही रह जायें, ऐसे विरल व्यक्ति ही जीवन कला के पारगामी होते है।

सेठ श्री मदनचन्दजी बोरड उसी कलात्मक जीवन के धनी थे। आपका जन्म वि० स० १९४९ के वर्ष माघ शुक्ला ? के शुभ दिन मुकाम कलरखेडा (पजाब) मे एक समृद्ध परिवार मे हुआ। आप बाल्यकाल मे बडे परिश्रमी एव सादगी प्रिय थे। जमीनो के मालिक होने के कारण वही आपका प्रमुख आय का साधन था। गगानगर जिले मे गगानहर आने के बाद जमीने एक

कि इस युग मे जीकर भी कभी आपने साबुन का शरीर पर प्रयोग नही किया। छाछ दही आदि द्रव्यो से आप स्नान करना पसन्द करते थे। डाक्टरी दवा, इन्जेक्शनो आदि से आपका वास्ता नही था। आपका शरीर प्राय नीरोग रहा था। वर्फ-मिश्रित शीतलपेय कोका कोला आदि आप कभी नही पीते थे। इसी के परिणाम स्वरूप आपके भरेपूरे पाच पुत्रो के परिवार मे किसी प्रकार का दुर्व्यसन स्थान नही पा सका। वहुत वर्षों से आप निवृत्त जीवन जी रहे थे। आपके सुयोग्य पुत्रो ने सारा कार्यभार समाल लिया था। विनीत एव धर्म-परायण आपकी धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरीदेवी का आपको हर एक व्यावहारिक एव धार्मिक कार्यो मे सुन्दर सहयोग मिला। आपके पाँचो पुत्र श्री सम्पतराय जी, कुन्दनमल जी, चैनरूप जी, नवरतनमल जी व अमरचन्द जी वडे ही विनीत एव धार्मिकता मे विशेष रुचि रखने वाले हैं। आज भी घर मे एकता का स्वर्गीय वातावरण है।

सामाजिक कार्यो में रुचि

यद्यपि प्राचीन विचारधारा से आपका चिन्तन विशेष अनुप्राणित था, फिर आप ऐदयुगीन सामाजिक कार्यो को कभी उपेक्षित नही करते थे। श्रीगगानगर के जैन भवन के निर्माण मे जो आपने प्राथमिकता स्वीकार कर असाधारण उत्साह दिखलाया वह आपकी धार्मिक प्रभावना एव क्रियाशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण था। वैसे ही जैन सभा मे सभी जैन सम्प्रदायो को समाविष्ट करके समन्वय एव सौमनस्य का वातावरण वनाने मे आपश्री का अनुकरणीय योगदान रहा। इसी भाँति प्रत्येक नगर के सामाजिक, एव व्यावहारिक कार्यो मे आप सदा अग्रगण्य वने रहे। साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में भी आपने सोलह सतिया, मनोनिग्रह के दो मार्ग आदि पुस्तके सहर्ष प्रकाशित करवाई। वक्तृत्व कला के वीज के महान प्रकाशन कार्य मे भी आपका प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष रूप से विशिष्ट सहकार रहा।

इस प्रकार अपने जीवनकाल के ७९ वसन्तो को पारकर चैत्र कृष्णा १३ स० २०२८ दि० १३-३-७२ के दिन समाधिपूर्ण स्थिति में भौतिक शरीर का परित्याग किया परन्तु उनकी यश सौरभ युग युगान्तरो तक अपनी सुवास फैलाती रहेगी। □ □

अनुक्रम

	पृष्ठ
बीसवी शताब्दी के विशिष्टजन जैन साहित्यकार	
शतावधानी मुनि श्री धनराज जी	१
वक्तत्व कला के बीज की विषयानुक्रमणिका	
पहला भाग ,, ,,	१२-१४
दूसरा भाग ,, ,,	१२-१७
तीसरा भाग ,, ,,	१८-२०
चौथा भाग ,, ,,	२०-२३
पाँचवा भाग ,, ,,	२४-२६
छठा भाग ,, ,,	२६-२९
सातवाँ भाग ,, ,,	२९-३२
आठवाँ भाग ,, ,,	३२-३५
नौवा भाग ,,	३५-३९
उप विषयानुक्रमणिका	४०-४६
विषयो का अकारादिक्रम	४७-७३
उद्धृत ग्रन्थ सूची	७४-८४
व्यक्ति नामावली	८५-९५

शुद्धि पत्र

पहला भाग	९६
दूसरा भाग	९७
तीसरा भाग	९९
चौथा भाग	१००
पाचवाँ भाग	१०१
छठा भाग	१०३
सातवाँ भाग	१०४
आठवाँ भाग	१०५
नौवाँ भाग	१०७
मुनि श्री धनराज जी का साहित्य	१०९-११
...क विहगावलोकन	

भाग १०

वक्तृत्वकला के बीज

बीसवीं शताब्दी के विशिष्ट जैन-साहित्यकार

शतावधानी मुनिश्री धनराजजी

नाना प्रकार के सूक्ति, पद्य, गाथा, सद्विचाररूप मणियो से परिपूर्ण "वक्तृत्वकला के बीज" जैसे महान् गन्थरत्नाकर का अवगाहन कर प्रत्येक विज्ञ विचारशील मनुष्य के हृदय मे यह कुतुहल उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि इस अद्भुत ग्रन्थरत्न के सकलयिता कौन हैं ? कौन महान् प्रतिभाशाली मनीषी प्रवर हैं, जिन्होने महर्षि व्यास और आचार्य हेमचन्द्र की परम्परा को इस युग मे भी जीवित रखा है। वे किस वशावलि को पावन किए हुए हैं और स्वनामधन्य ये महामना किस धर्म-सम्प्रदाय विशेष से सम्बद्ध हैं ?

लीजिए उनका सक्षिप्त-सा जीवन-परिचय यहाँ प्रस्तुत है। पाठको की जिज्ञासा तृप्ति के लिए।

यह तो निश्चित है ही कि सहकारी कारणो को पाकर एक छोटा-सा बीज अकुरित, विकसित, पुष्पित एव फलित हो जाता है, किन्तु सारे परिणाम अपने उपादान के अनुरूप ही अभिव्यक्त होते हैं। जैसे-आम-आम के रूप मे ही शोभित होता है और नीम-नीम के रूप मे ही विकास पाता है। वस्तुत प्रत्येक बीज अपने गुण-धर्मो को साथ लेकर ही पैदा होता है, किंचित् अनुकूल सयोग के मिलते ही वह अपने रूप मे निखार ले आता है।

मुनिश्री धनराजजी भी अपनी विशिष्ट उपादान सामग्री को लेकर ही यहाँ अवतरित हुए हैं। जैसा कि गीता का सकेत है—"शुचीना श्रीमता गेहे, योग भ्रष्टोऽभिजायते" सच है। शुद्ध निर्मल आत्माएँ अपनी साधना को विशेष उज्ज्वल बनाने के लिए ही सर्वथा अनुकूल वातावरण मे पुनर्जन्म धारण करती हैं।

आपश्री का शुभ जन्म वि० स० १९६७ के वर्ष हरियाणा प्रदेशान्तर्गत 'सिरसा' शहर मे हुआ । आपके पिताश्री का नाम केवलचन्दजी एव माता का नाम जडाववाई था । आप जाति से ओसवाल जैन एव नौलखा गोत्र से सम्बद्ध है । छह वहन-भाईयो मे आप सबसे वडे हैं । ८-९ वर्ष की आयु मे ही आप अपने पिता श्री के साथ दार्जिलिंग, कलकत्ता, जहाँ आपकी दुकानें थी, रहने लगे । धर्मवृत्ति पिता श्री के सम्पर्क से वहुत छोटी वय मे ही आपने सामायिक, वन्दना पच्चीस वोल, चर्चा, प्रतिक्रमण, तेरह द्वार आदि तात्विक चीजें कण्ठस्थ कर ली थी । वैसे तेरापन्थी विद्यालय, कलकत्ता मे आपका विद्याभ्यास चलता था । वाल्यकाल से ही आपकी ग्रहण-शक्ति वहुत तेज थी ।

अप्रत्याशित घटना

स० १९७९ की साल श्री केवलचन्द जी अपने ज्येष्ठ पुत्र धनराज के साथ कलकत्ता से चलकर सिरसा आए । सपरिवार वहाँ से आपने तेरापन्थ सघ के अधिनायक अष्टमाचार्य श्रीकालूगणि के राजलदेसर मे दर्शन किए । वहाँ से गुरुदेव के साथ वीदासर आए । वहाँ आपकी माता विषम ज्वर से पीडित हो गईं और उसी ज्वर ने डवल निमोनिया का रूप ले लिया । कोई उपचार अनुकूल नही पडा । आखिर उसी असाध्य वीमारी मे आपकी स्नेहमयी माता दिवगत हो गई । इस अप्रत्याशित एव अकल्पित घटना ने जीवन की क्षणभगुरता के विषय मे एक प्रश्नचिह्न उपस्थित कर दिया । गहरे सोचते-सोचते आप जीवन की कृतार्थता किसमे है, इस विषय पर चिन्तन करने लगे । प्रात सभी के साथ माता के दाह-सस्कार के लिए आप श्मशान घाट पर गए । चिता पर लेटाए गए माता के शव पर, ज्येष्ठपुत्र होने के नाते लोगो ने आप से चिता प्रज्वलित करने के लिए कहा । कापते हुए हाथो से आपने इस रस्म को अदा किया, किन्तु यह क्या लीला है—आपका अवोध हृदय कुछ समझ नही पा रहा था । चिता प्रज्वलित हो उठी । आप ध्यान से उसे निहार रहे थे ।

पिताश्री का उपदेश

उमी समय पिताश्री ने आपको धर्म का मार्मिक वोध पाठ दिया—"देखा पुत्र ! तूने ससार का विचित्र नाटक । वोल, कहा है तेरी वह वात्सल्यम…

माता! अल्पज्ञ मनुष्य क्या-क्या सोचता है, लेकिन विधि की बलवती रेखा क्या कुछ अतर्कित घटित कर देती है। मनुष्य देह पाने का यही सार है कि बुद्धिमान व्यक्ति इस भव-दावानल मे अपनी आत्मा को बाहर निकाल ले" इस भाति पिताश्री का आध्यात्मिक उपदेश सुनकर आपकी वृत्ति सहसा अन्तर्मुखी बन गई।

दाह-सस्कार के बाद कुए पर स्नान करके तत्काल पिताश्री के साथ आपने आचार्यचरण के दर्शन किए और भागवती दीक्षा प्रदान करने की सविनय प्रार्थना की। किंबहुना, यह भावना उत्तरोत्तर ऐसी तीव्र बनी कि आपके साथ आपकी छोटी बहन भवरी (स्व० साध्वी श्री दीपाजी) तथा नन्हा भाई चन्दन (मुनिश्री चन्दनमल जी) भी दीक्षा के लिए तत्पर हो गया। पिताश्री तो स्वय तैयार थे ही।

दीक्षा और शिक्षा

परिणामस्वरूप वि० स० १९८० प्रथम ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा के दिन लघु भाई-बहन के साथ आपकी भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न हो गयी। तथा पिताश्री ने भी फैले हुए व्यापार को समेटकर सवा पाँच महिनो के बाद मुनिव्रत स्वीकार किया। इस प्रकार भव्यात्माएँ कुछ सामयिक स्थितियो से प्रेरणा पाकर अपनी उपादानशुद्धि के कारण भवसमुद्र से तरने को तत्पर हो गईं।

दीक्षा के बाद आप आचार्य प्रवर के सान्निध्य मे ज्ञानार्जन बडी तत्परता के साथ करने लगे। कण्ठस्थ ज्ञान की अपनी निजी विशेषता है। आप इस दिशा मे बडे उत्साह के साथ बढ़े। सर्वप्रथम कुछ महिनो मे ही आपने दशवैकालिक सूत्र कण्ठस्थ किया। उसके बाद अभिधानचिन्तामणि, हेमी नाममाला, जिसके लगभग पन्द्रह सौ श्लोक हैं, कण्ठस्थ किये। व्याकरण मे—सम्पूर्ण सिद्धान्त-चन्द्रिका, भिक्षु शब्दानुशासन की अष्टाध्यायी धातुपाठ की दो हजार धातुएँ, गणपाठ के लिए गणरत्नमहोदधि जैसे दुर्गम ग्रन्थो को तथा हेम लिंगानुशासन को कण्ठस्थ किया। दर्शनशास्त्र के अवगाहन के लिए षड्दर्शन समुच्चय तथा प्रमाणनयतत्त्वालोकालकार जैसे दुरूह शास्त्रो को कण्ठस्थ किया। जैनागम के शास्त्रीय ज्ञान के लिए भी आपने तेरहद्वार, लघुदण्डक, गतागति, अल्प-बहुत्व, सजया, नियन्ठा, गमा, डाला-पाला आदि गहनतम थोकडे कण्ठस्थ

मे से आपने प्रचुर व्याख्यान-सामग्री एकत्रित की। इसी प्रकार अन्यान्य मुनियो से भी आप तत्प्रायोग्य सामग्री सविनय ग्रहण करते रहे। विशेषत श्री सन्तमलजी, जो उस समय गण मे थे, तथा मुनिश्री सोहनलाल जी, चौथमलजी आदि अनेक तदानीन्तन मुनिवरो से कुछ-न-कुछ विशिष्ट व्याख्यान-सामग्री, मधुकर की ज्यो नाना पुष्पो से मकरन्द की तरह, सचित कर लेते थे। माधुकरी वृत्ति के सस्कार तो प्रारम्भ से ही आप मे थे। परिणाम-स्वरूप आपके पिता मुनिश्री केवलचन्दजी जव अग्रगण्य के रूप मे विहार करने लगे तव रात्रिकालीन प्रवचन का दायित्व आपको ही सोपा गया। शनै शनै आपकी व्याख्यानशक्ति की महक सर्वत्र फैलने लगी। आपका नाम सुनते ही जनता व्याख्यान सुनने के लिए लालायित हो जाती। इस प्रकार दिन-प्रति-दिन आप इस दिशा मे प्रगति करते गए।

कवित्वशक्ति

कवि वनाया नही जाता, जन्मजात सस्कारो मे ही वह उस शक्ति को लेकर आता है। आप मे भी यह स्फुरणा स्वत जाग्रत हुई। दीक्षा के कुछ वर्ष वाद ही आपकी प्रतिभा कविता की ओर झुकने लगी। प्रथम आचार्य देव के गुणानुवादरूप कुछ दोहा, सवैया, कवित्त, गीतिका आदि वनाने लगे। वैसे ही कुछ सस्कृत भाषा मे भी पद्यादि रचने लगे थे। वि० स० १९९१ के वर्ष सिरसा चातुर्मास मे आपने 'प्रास्ताविक श्लोकशतकम्' नामक एक काव्य लिखा। सम्वत् १९९२ से आप 'कथाप्रवन्ध' की गीतिकाएँ वनाने लगे। कुछ औपदेशिक गीतिकाए भी समय-समय पर वनाने लगे थे। हर्ष का विषय था कि आपकी कृतियो को विविध प्रान्तो मे विहार करने वाले मुनिवर वडे चाव से लिपिवद्ध करते थे। मर्यादा—महोत्सव के अवसर पर वीसो पचासो प्रतिलिपियां वन जाती थीं। फिर तो यह क्रम वडे जोरो से चला। कथा प्रवन्ध गीतिकाओं के सकलन रूप १०८ लघु व्याख्यानो की व्याख्यान-मणिमाला, व्याख्यान रत्न मजूषा तथा चन्दनवाला, आनन्दकुमार, कान्हो कुमार, पद्मसेन, सक्षिप्त जैनरामायण, सक्षिप्त जैन महाभारत, नव्य चन्दचरित्र, पतिव्रता पद्मिनी, आदि अनेकानेक व्याख्यान वनते गए। वैसे ही सौराष्ट्र के त्रैवार्षिक प्रवास मे आपने गुजराती भाषा मे भी 'गुर्जर भजन पुष्पावलि' तथा 'गुर्जर व्याख्यान

रत्नावलि' की सुन्दर एव अधिकारपूर्ण रचनाए की। आपकी ये रचनाए अत्यन्त सरल भाषा मे एव चालू रागिनियो मे होने के कारण वे समाज मे खूब प्रचलित हुई।

प्रथम शतावधानी

तेरापथ शासन मे सर्वप्रथम शतावधानी होने का श्रेय आपश्री को ही मिला। वि० स० २००४ मे जब आपका प्रवास बम्बई मे था तब प्रसिद्ध अवधानकार श्री धीरजलाल टोकरसी भाई से आपका सम्पर्क हुआ। आपने अवधान-विद्या सीखने की उत्सुकता व्यक्त की। उन्होने आप श्री को योग्य पात्र मानकर सहर्ष अपना समय आपकी सेवा मे लगाया। कभी सप्ताह, कभी १०-१२ दिनो के बाद वे आते और स्मृति के विशिष्ट-प्रयोगो का अभ्यास बतला जाते। इस भाति सिर्फ तेरह बैठको मे इस अद्भुत अवधान विद्या को आपने आत्मसात् कर लिया। पहले आपने ३६ अवधान प्रयोग सफलतापूर्वक किए, बाद मे १०१ प्रयोग बिना स्खलना के करके जनता को विस्मित बना दिया। फिर भिवानी मे आचार्य श्री के सान्निध्य मे भी कुछ सफल अवधान प्रयोग करके दिखलाए। तदनन्तर पजाब, हरियाणा, राजस्थान आदि क्षेत्रो मे भारी मानवमेदिनी के समक्ष आपने अनेको बार बडे विचित्र प्रश्नो को समाहित करते हुए अवधान-प्रयोग किए। सभी जगह आप शतप्रतिशत यशस्वी सिद्ध हुए। धर्म सघ के अनेको युवामुनियो ने भी आपके द्वारा अवधान विद्या सीख कर देश-विदेश मे जिन शासन की प्रभावना की। उल्लेखनीय नामो मे—मुनिश्री पूनमचन्दजी (गगाशहर), चम्पालाल जी (सरदारशहर) मगनमल जी, धर्मचन्द जी आदि है।

लेखक के रूप मे

यद्यपि **"वैदिक विचार विमर्शन"** नामक एक बडा ग्रन्थ आप स० २०११-१२ मे लिख चुके थे। जिसमे वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराण आदि वैदिक ग्रन्थो पर जैन दर्शन की दृष्टि से विमर्शन किया गया है। वैसे ही बम्बई प्रवास मे तेरापथ का तात्विक ज्ञान कराने, आचार और विचार पक्ष की यथार्थता दिखलाने के लिए **"परीक्षक बनो"** तथा **"धर्म एटले शू"** ऐसी दो पुस्तके आप लिख चुके थे। फिर भी आपकी रुचि नवीन-नवीन भजन एव व्याख्यान आदि बनाने मे अधिक रहती थी।

एक बार श्रीचन्दन मुनि के चिर साथी मुनिश्री लालचन्दजी ने आपसे प्रार्थना की, कि आपने भजन एव व्याख्यान आदि तो बहुत बना लिए, अब आप कुछ तत्वज्ञान की पुस्तकें लिखे तो जनसाधारण के लिए उनका अच्छा उपयोग हो सकता है। उनका यह सहज कथन आपके मन मे घर कर गया और तभी से आपकी लेखनी इस ओर विशेष रूप से चलने लगी। सर्वप्रथम आपने "प्रश्न-प्रकाश" नामक पुस्तक लिखी जो जैन धर्म के मौलिक तत्वो को जानने के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई। इस पुस्तक के अनेक सस्करण भी निकल चुके हैं।

वैसे ही पजाब मे विहार करते हुए एक बार नेममुनि ने कहा—"मुनिश्री! आप अपनी सरल भाषा मे ऐसा जैन-साहित्य बनाइये जो कभी पुराना न हो।" उनके सुझाव को भी आपने प्रश्रय दिया और "जैनजीवन" "चमकते चाँद" एव "सच्चा धन" नाम की तीन पुस्तकें लिखी जो प्रत्येक जैन पाठक के लिए अवश्य पठनीय हैं। फिर तो आपका यह लेखन का क्रम विशेष रूप से आगे बढा। 'प्रश्न प्रकाश' की शैली पर 'लोक प्रकाश', 'ज्ञान प्रकाश', 'दर्शन प्रकाश', 'चारित्र प्रकाश', 'मोक्ष प्रकाश', 'श्रावक धर्मप्रकाश' आदि पुस्तकें आपने लिखी जो अपने-अपने विषय पर पूर्णरूप से प्रकाश डालती हैं। दुर्गम एव दुरवगाह शास्त्र के गम्भीर विषय भी आपकी प्रश्नोत्तरो की शैली मे इस प्रकार सरलता के साथ प्रस्तुत किए गए हैं कि प्रत्येक जिज्ञासु पाठक इन्हे पढकर निश्चित ही तत्वज्ञान के गहरे समुद्र मे गोता लगा सकता है। ज्ञान प्रकाश मे पाँच ज्ञान का बडा विस्तृत विवेचन है। दर्शनप्रकाश मे स्याद्वाद, सप्तभगी, नय निक्षेप का बहुत विशद विवेचन है। साथ-साथ बौद्ध, नैयायिक, साख्य, वैशेषिक, वेदान्त आदि षड्दर्शनो का तथा यहूदी, पारसी, सिक्ख आदि प्रचलित दर्शनो का सक्षिप्त दिग्दर्शन है। "मोक्षप्रकाश" तो अपने आप मे एक बहुत ही अनूठा ग्रथ है। कर्म फिलोसाफी जैसे दुर्गम विषय को अत्यन्त सरल एव सुगम भाषा मे प्रस्तुत कर वास्तव मे पाठको के लिए बडा उपकार किया है। इसके अतिरिक्त गुणस्थानो के विवेचन के साथ आश्रव, सवर, निर्जरा आदि का भी बहुत विशद विवेचन है। इसे पढने वाला गुणज्ञ अवश्य ही आपश्री की ज्ञानगरिमा का गौरव गाए बिना नही रह सकता। वस्तुत ये सारे प्रकाश

लिखवा लेते थे। इस भाँति नाना प्रकार की व्याख्यान-सामग्री सगृहीत होने लगी। फिर जब पिताश्री के दिवगत होने पर स्वय अग्रगामी के रूप मे स्वतत्र विहार करने लगे। वहाँ भी आपने इसी क्रम को चालू रखा। बम्बई एव सौराष्ट्र के लबे प्रवास मे गुर्जर भाषा गत विशिष्ट साहित्य के पठन मे प्रचुर व्याख्यान-योग्य चीजें आपको उपलब्ध हुयी। पजाब मे भी आपका बहुत रहना हुआ। वहाँ से भी आपको पजाबी भाषा सम्बन्धी विशिष्ट व्याख्येय तथ्य प्राप्त हुए। हरियाणा प्रात मे भी उन दिनो उर्दू भाषा का बहुत बोलबाला था। अत वहाँ से उर्दू, फारसी, अरबी आदि सूक्तियो का भण्डार मिला। वैसे ही अनेक अन्यान्य ग्रथो के अवलोकन से विचित्र सामग्री आपके हस्तगत होती गयी। सस्कृत भाषा पर आपका पूर्ण अधिकार होने के कारण जैन साहित्य, वैदिक साहित्य एव बौद्ध साहित्य आदि के अवगाहन का सुन्दर अवसर मिला। उनसे भी अनेक सूक्त एकत्रित होते गए। आपने इस विशाल सग्रह को "व्याख्यान के मसाले" नामक शीर्षक मे काफी सूक्ष्म लिपि मे हस्तलिखित पत्रो मे लिपिबद्ध कर लिया। उससे भी अनेक सत-सतिया लाभान्वित होते रहे। इस भाति यह विशाल सग्रह निजी उपयोग के लिए ही था, किन्तु इसे ग्रथ रूप देने का आपका कोई विचार नही था।

राकेश मुनि की प्ररेणा

वि० स० २०१७ मर्यादा महोत्सव की सपन्नता कर आपने गगाशहर की ओर विहार किया। रास्ते मे मुनिश्री राकेशकुमार जी भी आपके साथ थे। उन्होंने एक बार विनय पूर्वक आप से कहा—"मुनिश्री, आपका सानिध्य प्राप्त करने का मुझे बहुत कम अवसर मिला है। प्राय नही मिला है, ऐसा कहा जा सकता है। इस वर्ष सद्भाग्य मे सहज ही यह सुयोग मुझे प्राप्त हो गया है। अत मैं चाहता हूँ कि आपसे कुछ विशिष्ट व्याख्यान कला सीखूं एव तद्योग्य सामग्री प्राप्त करूँ।"

आपने कहा—राकेशजी, तुम स्वय अच्छे व्याख्याता हो, फिर भी कुछ मुझे आता है, मैं सुनाता एव बतलाता रहूगा—यो कहकर आपने तुरन्त व्याख्यान के मसाले वाले पत्र उन्हे दिये और उन्हे पढकर देखो, ऐसा परामर्श दिया।

श्री राकेश मुनि उस विशिष्ट सगृहीत व्याख्यान सामग्री को पढकर बहुत

तक विस्तृत व्याख्या कर सकता है और यह व्याख्या श्रोताओ को नित्य नई प्रतीत होगी। अत कई विद्वानो ने इसे विश्वकोप (इनसाइक्लोपीडिया) के नाम से पुकारा है। इसको ग्रन्थ रूप देने के वाद इसकी तैयारी मे १३-१४ वर्ष लगे हैं। वैसे यह ४० वर्षों का सग्रह एव अनुभवो का निचोड है, सार है, नवनीत है। जव इसे गृहस्थो ने धारना (लिपिवद्ध करना) शुरू किया तो करीव छोटी-वडी १०० कापियो मे यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ। पाठको को यह जानकर और आश्चर्य होगा कि यह कार्य कही एक स्थान पर वैठकर नही हुआ है। साधुचर्या के नियमानुकूल आपके अनवरत नवकल्प विहार होते रहे हैं। कभी पजाव, कभी हरियाणा, कभी वीकानेर, कभी जोधपुर आदि प्रातो मे परिव्रजन होता रहा है। साथ मे काम करने वाला कोई पण्डित नही रहा है। जहा गए वहा के स्थानीय कार्यकर्ता ही इसमे सहयोगी वने हैं। अत भिन्न-भिन्न कापिया भिन्न-भिन्न व्यक्तियो के हाथ की लिखी हुई हैं। उसका सशोधन आदि सारा कार्य स्वय मुनि श्री ने किया है। इन सव स्थितियो को जानकर कोई अनुभवी चितक आपके अदम्य उत्साह की भूरि-भूरि प्रशसा किए बिना नही रह सकता।

आज भी उसी उत्साह के साथ

मुनिश्री की वर्तमान वय लगभग ६४ वर्ष की है। शरीर भी काफी दुवल एव रुग्ण रहता है। मस्तक की वेदना वार-वार सताती रहती है, किन्तु आपका उत्साह आज भी वैसा का वैसा है। सुवह से शाम तक व्याख्यानादि निजी कार्य करते हुए मुनिश्री साहित्य कार्य मे भी सलग्न रहते हैं। वस्तुत साहित्य-सृजन ही आपके जीवन का व्यसन वन गया है।

ऐसे महान् उत्साही साहित्यकार मुनि-पुगव को पाकर तेरापथ सघ तो गौरवान्वित है ही, वल्कि समूचे मानव समाज को आप जैसे महामनीषियो पर सात्विक गर्व होना स्वाभाविक है। जैन गगनागण के ये ऐसे उज्ज्वल नक्षत्र हैं कि जिनका प्रकाश युग युगातरो तक फैलता रहेगा। ऐसे दृढनिष्ठावान, साधना-शील, मनस्वी साहित्यिक मुनिवर्य चिरजीवी वने रहे—इसी शुभकामना के साथ।

—श्रीचन्द्र सुराना 'सरस'

वक्तृत्वकला के बीज-विषयानुक्रमणिका

पहला भाग

पहला कोष्ठक

	पृष्ठ
१ मंगलाचरण	१
२ मांगलिक तत्त्व	२
३ मांगलिक पद्य	४
४ देव (ईश्वर)	६
५ ईश्वर का जगत्कर्तृत्व चिन्तनीय	१३
६ अपेक्षा से ईश्वर का कर्तृत्व	१४
७ पुराणानुसार विष्णु के दस अवतार	१५
८-९ प्रतिमा-निषेध	१६
१० प्रतिमापूजा-निषेध	१७
११ पूजा	१९
१२ पूजा के आठ फूल	२०
१३ द्रव्य पूजा का रहस्य	२१
१४ ईश्वरीय ज्ञान एवं दर्शन	२२
१५ भगवान का निवास	२५
१६ प्रभु-आज्ञा	२८
१७ भक्ति का स्वरूप	३१
१८ भक्ति की महिमा	३३
१९ भक्ति के भेद	३४
२० भक्ति के विषय में स्फुट विचार	३६
२१ भक्त	३९
२२ सच्चे भक्त	४४
२३ भक्तों के लिए शिक्षा	४७
२४ भक्तों के वश भगवान	४९
२५ ठग भक्त	५२
२६ इकरंग-दुरंगे भक्त	५६
२७ प्रभु-भजन	५७
२८ जप	६१
२९ भजन बिना जीवन सूना	६३
३० दुःख में प्रभु का स्मरण	६४
३१ ईश्वर की निन्दा भी	६५

दूसरा कोष्ठक

	पृष्ठ
१ गुरु (गुरु की व्याख्याएँ)	६
२ गुरु-महिमा	
३ गुरु की आवश्यकता	
४ गुरु-आज्ञा	
५ गुरु-शिक्षा	
६ गुरु के छत्तीस गुण	
७ सुयोग्य आचार्य	

		पृष्ठ
८	आचार्य का शिष्य के प्रति कर्त्तव्य	८३
९	शिष्यों को आचार्य का उपदेश	८५
१०	आचार्यों के प्रकार	८७
११	अयोग्य आचार्य	८९
१२	गुरु भक्ति की विधि	९२
१३	विनीत शिष्य	९८
१४	गुणी शिष्य के कर्त्तव्य	१००
१५	अविनीत शिष्य	१०२
१६	शिष्यों पर अनुशासन करते समय	१०२
१७	गुरु शिक्षा के समय विनीत अविनीत शिष्यों का चिन्तन	१०४
१८	गुरु की आशातना	१०६
१९	धर्म	१०८
२०	धर्म के लक्षण	११०
२१	जैन धर्म एवं उसका महत्त्व	११३
२२	धर्म की महिमा	११४
२३	धर्म की प्रेरणा	११८
२४	धर्म की आवश्यकता	१२३
२५	धर्म के फल	१२८
२६	धर्म के भेद	१२८
२७	धन में धर्म नहीं,	१२९
२८	दुष्प्राप्य धर्म	१३२
२९	धर्म प्राप्ति के उपाय	१३३
३०	धर्म समझने के बाद	१३४
३१	धर्म की उत्पत्ति आदि	१३६
३२	धर्म के विविध प्रसंग	१३८
३३	सच्चा धर्माचरण	१४१
३४	धर्मोपदेश किसके लिए ?	१४
३५	धर्मोपदेश के अधिकारी	१४५
३६	विधि-अविधि में किया हुआ धर्म	१४७
३७	स्वधर्म-परधर्म	१४८
३८	धर्मज्ञ	१५०
३९	धर्मी	१५१
४०	दृढधर्मियों के उदाहरण	१५३
४१	धर्म के ठेकेदार	१५५

तीसरा कोष्ठक

१	अधर्म	१५८
२	पाप	१६०
३	पाप को छिपाओ मत !	१६
४	महापाप	१६
५	पापी	१६
६	पाप-निवृत्ति का उपदेश	१६
७	पाप का पश्चात्ताप	१७
८	पाप के प्रकार	१७
९	पाप-बंध	१७
१०	अहिंसा	१७
११	अहिंसा की महिमा	१७
१२	अहिंसा के फल	१८
१३	अहिंसा का उपदेश	१८

पृष्ठ

७ ब्रह्मचारी शिक्षा — १२
८ ब्रह्मचर्य की नव गुप्तियां (वाडें) — १५
९ ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी उदाहरण — १८
१० अब्रह्मचर्य — २०
११ विषय-वासना — २३
१२ काम — २७
१३ काम के भेद — ३०
१४ भोग — ३४
१५ काम-भोग — ३७
१६ कामासक्त — ३९
१७ कामान्धो के उदाहरण — ४२
१८ विवाह
१९ विवाह का प्रभाव — ४५
२० विवाह का समय — ४६
२१ विवाह किसके साथ ? — ४९
२२ कन्यादान — ५१
२३ विवाह के भेद — ५४
२४ विवाह के मंत्र — ५६
२५ वैवाहिक रीति-रिवाज का रहस्य — ५८
२६ विवाह के विचित्र रूप — ५९
२७ पुनर्विवाह — ६५
२८ विवाह सम्बन्धी कहावतें — ६७
२९ बींद-बींदणी की अद्भुत जोडी — ६८
३० पति-पत्नी की एकता — ६९

पृष्ठ

३१ पति-पत्नी का सहवास अनियमित न हो — ७०
३२ सहवास के लिए निषिद्ध समय एवं स्थान — ७१
३३ अतिसहवास का निषेध — ७४
३४ गर्भाधान के विषय मे विवेक — ७६

दूसरा कोष्ठक
१ परस्त्री गमन-निन्दा एवं निषेध — ७८
२ परस्त्रीगामी — ८०
३ परस्त्री-त्यागी — ८२
४ पति का सर्वस्व पत्नी — ८५
५ पतिव्रता एवं साध्वी स्त्री — ८७
६ सुभार्या — ९१
७ पतिव्रता के लिए पति-सर्वस्व — ९३
८ अनेक पति-प्रथा — ९५
९ सती-प्रथा — ९६
१० कुभार्या — ९७
११ कुलटा स्त्री — ९९
१२ स्त्री-स्वभाव — १०२
१३ स्त्री के दोष — १०४
१४ स्त्री के लिए निकृष्ट उपमाएँ — १०९
१५ स्त्री की निरंकुशता — ११०
१६ स्त्रियों की सरलता — ११२

	पृष्ठ
१७ सुस्त्री-प्रशसा	११४
१८ स्त्री-सम्मान	११७
१९ स्त्री-नाश के कारण	११९
२० स्त्री धन	१२१
२१ स्त्री के विषय मे कहावतें	१२२
२२ वेश्या-निन्दा	१२४
२३ लन्दन मे सवा लाख वेश्याएँ	१२७
२४ अपरिग्रह	१२९
२५ आवश्यकता	१३०
२६ परिग्रह	१३२
२७ परिग्रह के प्रकार	१३५
२८ आशा	१३७
२९ आशा की प्रशसा	१४३
३० इच्छा	१४५
३१ विविध इच्छाएँ	१४८
३२ नि स्पृहता	१५१
३३ A तृष्णा	१५३
३३ B तृष्णाविजय	१६०
३४ आसक्ति	१६२
३५ ममता	१६४
३६ ममता और समता	१६६
३७ ममता के विषय मे कहावतें	१६७
तीसरा कोष्ठक	
१ सतोष	१६८
२ सतोष से लाभ	१७१
३ सतोष का उपदेश	१७२
४ सतोषी	१७४
५ असतोष	१७६
६ लोभ	१७८
७ लोभ त्याग	१८१
८ लोभी	१८२
९ क्षमा	१८५
१० क्षमा का उपदेश	१८८
११ क्षमावान्	१८९
१२ असह्य बातें	१९१
१३ क्षमा के उदाहरण	१९२
१४ क्षमापना	२००
१५ शम (शान्ति)	२०५
१६ शान्ति की महिमा	२०८
१७ शान्त	२०९
१८ समता	२११
१९ क्रोध	२१३
२० क्रोध के दुर्गुण	२१५
२१ क्रोध की उत्पत्ति आदि	२१७
२२ क्रोध की स्थिति	२२१
२३ क्रोध-त्याग	२२२
२४ क्रोधी	२२६
२५ क्रोध पर काबू पाने वाले महापुरुष	२२८
२६ वैर	२३०
२७ वैर-त्याग	२३२

	पृष्ठ		पृष्ठ
२८ वैरी	२३४	२१ प्रेम	२८२
२९ वैरी के साथ व्यवहार	२३६	२२ सहज एव सच्चा प्रेम	२८५
३० वैर के बदले	२३९	२३ प्रेम की महिमा	२८६
		२४ प्रेम-बन्धन	२८७
चौथा कोष्ठक		२५ प्रेम का निर्वाह	२८८
१ ईर्ष्या	२४२	२६ प्रेम का नाश	२९०
२ ईर्ष्यालु	२४४	२७ प्रेम के भेद	२९१
३ ईर्ष्या सम्बन्धी दृष्टान्त और कहावतें	२४६	२८ प्रेम की प्रेरणा	२९२
		२९ प्रेमी	२९४
४ कलह	२४९	३० जाति प्रेम के उदाहरण	२९७
५ कलह से हानि	२५१	३१ मोह	२९८
६ कलहकर्ता	२५३	३२ मोहक्षय	३००
७ पैशून्य (चुगली)	२५५	३३ मित्र	३०३
८ पिशुन (चुगल)	२५६	३४ मित्र के गुण-दोष	३०६
९-A अभ्याख्यान	२५७	३५ सुमित्र एव सच्चा मित्र	३०७
९-B निन्दा	२५८		
१० निन्दा-निषेध	२६०	३६ मित्र की आवश्यकता	३१०
११ निन्दा मे समभाव	२६२	३७ कुमित्र	३११
१२ आत्मनिन्दा	२६४	३८ मित्र बनाने के विषय मे	३१३
१३ निन्दक	२६६	३९ मित्रता	३१६
१४ द्वेष	२६८	४० शिष्टो एव दुष्टो की मित्रता	३१८
१५ राग	२७०		
१६ अनुरागी	२७२	४१ मित्रता न करने योग्य व्यक्ति	३२०
१७ राग-द्वेष	२७४		
१८ राग-द्वेष के क्षय से लाभ	२७६	४२ मित्रता की प्रेरणा	३२१
१९ स्नेह	२७९	४३ सगठन	३२२
२० स्नेह-त्याग	२८१	४४ भिन्नता	३२८

तीसरा भाग

पहला कोष्ठक	पृष्ठ		पृष्ठ
१ विनय की परिभाषा	१	२५ इज्जत-सम्मान	४४
२ विनय की महिमा	२	२६ सम्मान की इच्छा का निषेध	४६
३ विनय का उपदेश	४	२७ प्रशसा	५०
४ विनय के भेद	५	२८ आत्मस्तुति(स्व-प्रशसा)निषेध	५२
५ विनीत	७	२९ स्वप्रशसक	५४
६ अविनीत	८	३० ख्याति-प्रसिद्धि	५५
७ नम्रता	९	३१ यश-कीर्ति	५८
८ नम्रता से लाभ	१०	३२ आर्जव-सरलता	६०
९ नम्र	११	३३ सरल एव कुटिल व्यक्ति	६२
१० वन्दना	१२	३४ माया-कपट	६३
११ नमस्कार	१३	३५ मायावी व्यक्ति	६५
१२ लघुता	१५	३६ माया-त्याग	६७
१३ अभिमान	१७	३७ कषाय	६९
१४ अभिमान के दुर्गुण	१९	३८ कषाय-त्याग	७१
१५ तू-मैं	२१	३९ मदकषायी-तीव्रकषायी	७५
१६ अभिमान के भेद आदि	२३	४० प्रमाद-आलस्य	७६
१७ मान-त्याग	२४	४१ प्रमाद के भेद	७८
१८ व्यर्थ अभिमान	२७	४२ प्रमाद-त्याग	७९
१९ तुच्छ व्यक्तियो मे अधिक अभिमान	२९	४३ प्रमादी (आलसी)	८१
२० अभिमानी	३१	४४ प्रमादी के विषय मे कहावतें	८३
२१ अभिमान के उदाहरण	३३	**दूसरा कोष्ठक**	
२२ अपमान	३७	१ निद्रा	
२३ अपमान-निषेध	३९	२ निद्रा से लाभ	
२४ महत् पुरुषो का धन—मान	४१	३ निद्रा-निषेध	
		४ सोने का समय	
		५ स्वप्न	

	पृष्ठ		पृष्ठ
६ निद्रा के भेद	१००	३३ गरज	१४७
७ नीद की अद्भुत करतूतें	१०१	३४ हाँजीडे (खुशामदी)	१४८
८ जागरण	१०२	३५ भूल	१४६
६ जागृत और सुप्त	१०५	३६ भूल पर हास्य	१५१
१० चिन्ता	१०७	३७ भूलसुधार	१५२
११ चिन्ता मे हानि	१०८	३८ भूल को स्वीकार करना कठिन	१५४
१२ चिन्ता-निषेध	११०	३६ भूल के विषय मे विविध	१५६
१३ शोक	११२		
१४ शोक-निषेध	११४		
१५ घृणा	११७	४० भयकर भूलें	१५८
१६ रोदन	११८	४१ हठ (आग्रह)	१६०
१७ आसू	१२१	४२ रिवाज (रूढि)	१६२
१८ भय	१२२	४३ प्रसन्नता (खुशमिजाजी)	१६५
१६ भय आवश्यक	१२४	४४ प्रसन्न	१६६
२० अभयदाता	१२५		
२१ भयभीत	१२७	तीसरा कोष्ठक	
२२ भय सम्बन्धी कहावते	१२८	१ वैराग्य	१६८
२३ भय सम्बन्धी दृष्टान्त	१२६	२ वैराग्य की महिमा	१६६
२४ हास्य	१३१	३ वैराग्यवान	१७१
२५ हास्य-निषेध	१३३	४ ज्ञान (ज्ञान की उत्पत्ति-आदि)	१७२
२६ उपहास-मजाक-विनोद	१३४		
२७ उपहास-निषेध	१३६	५ ज्ञान की आवश्यकता	१७६
२८ लज्जा	१३८	६ ज्ञान से लाभ	१७८
२६ लज्जा-निषेध	१४०	७ ज्ञान की महिमा	१८०
३० निर्लज्ज	१४२	८ ज्ञान का उपदेश	१८२
३१ स्वार्थ	१४३	६ ज्ञान के भेद	१८४
३२ मतलब	१४५	१० सम्यग्ज्ञान	१८६

	पृष्ठ
११ अतिज्ञान और अल्प ज्ञान	१८८
१२ ज्ञानी	१९०
१३ विज्ञान एव वैज्ञानिक	१९४
१४ ज्ञान और क्रिया	२०५
१५ बिना ज्ञान की क्रिया	२०८
१६ अज्ञान	२०९
१७ अज्ञानी	२११
१८ ज्ञानी-अज्ञानी मे अन्तर	२१५
१९ विद्या	२१७
२० विद्या की महिमा	२१८
२१ विद्याप्राप्ति के साधन	२२०
२२ विद्याध्ययन की प्रेरणा	२२३
२३ विद्या की आवश्यकता	२२५
२४ विद्या के पात्र-अपात्र	२२७
२५ विद्या के भेद	२२९
२६ विद्यार्थी	२३१
२७ विद्यार्थी और परीक्षा	२३३
२८ शिक्षा	२३६
२९ शिक्षा-ग्रहण	२३८
३० शिक्षादान	२४२
३१ शिक्षा के योग्य-अयोग्य पात्र	२४३
३२ महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ	२४५

चौथा कोष्ठक

	पृष्ठ
१ विद्वान	२४८
२ बुद्धि का महत्त्व	२५२
३ बुद्धि के भेद	२५४
४ सुबुद्धि एव कुबुद्धि	२५७
५ बुद्धि एव उसके फल और गुण	२५८
६ अक्ल के विषय मे कहावतें	२६०
७ बुद्धिमत्ता	२६२
८ बुद्धिमान	२६४
९ विशिष्ट बुद्धि वाले व्यक्ति	२६६
१० बुद्धिमानो के कर्तव्य	२७०
११ बुद्धिमान एव मूर्ख मे अन्तर	२७२
१२ पण्डित	२७४
१३ पण्डितो की विशेषता	२७६
१४ परोपदेश-कुशल पण्डित	२७८
१५ चतुर	२८०
१६ हाजिर जवाब	२८२
१७ मूर्ख	२८७
१८ मूर्ख को उपदेश	२९१
१९ मूर्खों की मान्यता	२९३
२० निन्दनीय मूर्खजीवन	२९४
२१ मूर्ख का सग त्याज्य	२९५
२२ मूर्खता	२९७
२३ मूर्खता के उदाहरण	३०२

चौथा भाग

पहला कोष्ठक

१ विवेक

	पृष्ठ
२ विवेक-महिमा	२
३ विवेकी	३
४ अविवेकी	४
५ विवेकहीन	६
६ चिन्तन-मनन	७
७ विचार	८
८ सम्मति	१२
९ सलाह लेना जरूरी	१४
१० सलाह के विषय मे विविध	१५
११ उपदेश	१८
१२ कला	२१
१३ विविध कलाएँ	२२
१४ कविता	३२
१५ कविता का महत्त्व	३३
१६ अच्छी कविता	३४
१७ कविता-विरोध	३७
१८ कवि	३९
१९ कवि-प्रशसा	४१
२० कवियो की प्रकृति	४२
२१ कवियो की शक्ति	४३
२२ कवियो के लिये विचारणीय बातें	४५
२३ निन्दनीय कवि	४६
२४ विभिन्न भाषाओ के महान कवि	५३
२५ रसिक श्रोताओं के अभाव मे कवि	४८

	पृष्ठ
२६ निर्भीक कवि गण	४९
२७ प्राचीन एव आधुनिक कवि	५१
२८ महान् कवि	५२
२९ कल्पना	५४
३० कल्पना के उदाहरण	५६
३१ कहावतें	६१
३२ साहित्य	६२
३३ इतिहास	६४
३४ सयोजक	६५
३५ लेखक	६७
३६ बुरे लेखक	७०
३७ लेखनी	७०
३८ अध्ययन	७१
३९ स्वाध्याय	७३
४० अनाध्याय	७६
४१ अधिक अध्ययन	७७

दूसरा कोष्ठक

१ पुस्तक (शास्त्र)	७८
२ पुस्तको का चयन	८०
३ विभिन्न दर्शनो के धर्मग्रन्थ	८१
४ प्रामाणिक ग्रन्थ	८३
५ युक्ति एव न्याय से ग्रन्थो की प्रामाणिकता	८५
६ पुस्तक-प्रकाशन	८७

	पृष्ठ
७ विश्व के प्रख्यात पुस्तकालय	९०
८ अनुभव	९२
९ अनुभवहीन	९६
१० परीक्षा	९९
११ परीक्षा आवश्यक	१००
१२ परीक्षा-विधि	१०१
१३ परीक्षा का समय	१०४
१४ दर्शन	१०६
१५ आस्तिक	११०
१६ नास्तिक	१११
१७ नास्तिकों का कथन	११३
१८ सम्यग्दर्शन-सम्यक्त्व	११४
१९ सम्यक्त्व की दुर्लभता	११८
२० सम्यक्त्व से लाभ	११९
२१ सम्यक्त्व का महत्त्व	१२०
२२ सम्यग्दृष्टि	१२३
२३ श्रद्धा	१२७
२४ श्रद्धावान	१२९
२५ अश्रद्धावान् (शंकाशील)	१३१
२६ संशय	१३४
२७ विश्वास	१३६
२८ विश्वास के अयोग्य	१३९
२९ विश्वासघात	१४२
३० मिथ्यादर्शन	१४३
३१ मिथ्यात्व के भेद	१४४
३२ मिथ्यादृष्टि	१४७

तीसरा कोष्ठक	पृष्ठ
१ तत्त्व	१४८
२ द्रव्य	१५०
३ नय-प्रमाण	१५४
४ निश्चय-व्यवहार नय	१५५
५ स्याद्वाद	१५६
६ उत्सर्ग-अपवाद	१६१
७ सिद्धान्त	१६३
८ चारित्र	१६५
९ चारित्र का महत्त्व	१६७
१० ज्ञान के साथ चारित्र आवश्यक	१७०
११ चारित्र की रक्षा	१७२
१२ चारित्र से लाभ	१७६
१३ त्याग	१७७
१४ त्याग के भेद	१७८
१५ त्यागी	१८०
१६ प्रत्याख्यान	१८१
१७ आचार (आचरण)	१८४
१८ आचरण विना ज्ञान	१८८
१९ आचारवान	१८९
२० आचारहीन	१९२
२१ कथन के समान आचरण आवश्यक	१९३
२२ शील	१९६
२३ व्रत	१९[illegible]

पृष्ठ

२४ महाव्रत २०२
२५ सभ्यता २०४
२६ योग २०६
२७ योगमहिमा २०८
२८ योगी २११
२९ योगियों के चमत्कार २१५

चौथा कोष्ठक

१ संयम २२२
२ संयम से लाभ २२४
३ संयम की दुष्करता २२६
४ संयम में सुख-दुःख २२८
५ संयम (दीक्षा) का समय आदि २२९
६ संयम से भ्रष्ट होने के अठारह स्थान २३१
७ संयम के भेद २३४
८ साधना २३८
९ साधु २३९
१० मुनि २४३
११ अनगार २४७
१२ भिक्षु २५०
१३ श्रमण २५२
१४ निर्ग्रन्थ २५४
१५ स्थविर २५८
१६ तापस २६१
१७ फकीर २६२
१८ सन्त २६४
१९ कतिपय जगत्प्रसिद्ध सन्त-महात्मा २६७
२० साधुओं के गुण २८५
२१ साधुसंगति २८७
२२ सन्तों का सन्ताप २८९
२३ साधुओं की गोचरी २९१
२४ गोचरी के भेद २९५
२५ गोचरी के नियम २९६
२६ साधु का आहार ३०२
२७ आहार किसलिये? ३०५
२८ साधुओं का निवास-स्थान ३०८
२९ साधुओं के वस्त्र ३१०
३० साधुओं के पात्र ३१२
३१ साधुओं का विहार ३१४
३२ साधु की भाषा ३१७
३३ साधुओं के लिए कल्प-अकल्प ३२२
३४ साधुओं के सुख ३२५
३५ साधुओं के बारह सम्भोग और उनका विच्छेद ३२७
३६ साधुओं की शिक्षा ३२८
३७ नामधारी साधु ३३०
३८ पापी साधु ३३२
३९ कन्दर्पादि में लीन साधुओं की गति ३३५

पाचवा भाग

पहला कोष्ठक	पृष्ठ
१ श्रावक (श्रावक की पूर्व भूमिका)	१
२ श्रावक का स्वरूप	६
३ श्रावक के गुण	८
४ श्रावक-धर्म	१२
५ श्रावक के विषय मे विविध	१५
६ सामायिक	१६
७ सामायिक के विषय मे विविध	२२
८ सामायिक का प्रभाव	२५
९ नाम की सामायिक	२६
१० पौषध	२८
११ तप	२९
१२ तप से लाभ	३०
१३ तप कैसे और किसलिए ?	३२
१४ तप के भेद	३४
१५ अनशन	३६
१६ उपवास	३८
१७ प्रायश्चित्त	४०
१८ प्रायश्चित्त के भेद	४२
१९ आलोचना	४६
२० आलोचना के विषय मे विविध	४९
२१ आलोचना के दोष	५२
२२ आवश्यक	६१
२३ वैयावृत्य	६५

दूसरा कोष्ठक	पृष्ठ
१ ध्यान	६७
२ ध्यान से लाभ	७४
३ ध्याता (ध्यान करने वाला)	७६
४ स्वाध्याय-ध्यान की प्रेरणा	७८
५ समाधि	८०
६ आहार	८१
७ भोजन	८४
८ भोजन की विधि	८५
९ भोजन कैसा हो ?	८८
१० भोजन के भेद	९१
११ भोजन मे आवश्यक तत्व	९५
१२ रासायनिक तुलनात्मक चार्ट	९६
१३ भोजन का ध्येय	१०१
१४ भोजन की शुद्धि	१०२
१५ भोजन का समय	१०३
१६ भोजन के समय दान	१०५
१७ भोजन के बाद	१०७
१८ भोजन की मात्रा	१०८
१९ मितभोजन	११०
२० अतिभोजन	११२
२१ अधिक खाने वाले आदमी	११४
२२ राक्षसी खुराक वाले व्यक्ति	११७
२३ मुफ्त का खाने वाले	११९
२४ रात्रिभोजननिषेध	१२१
२५ रात्रिभोजन से हानि	१२

	पृष्ठ
२६ रात्रिभोजन के त्याग से लाभ	१२७
२७ भूख	१२८
२८ भूख मे स्वाद	१३०
२९ भूखा	१३२
३० भूखा क्या नही करता !	१३३
३१ पेट	१३४
३२ पानी	१३८

तीसरा कोष्ठक

	पृष्ठ
१ मोक्ष (मुक्ति)	१४२
२ मोक्ष की परिभाषाएँ	१४३
३ मोक्षस्थान	१४५
४ मोक्ष-मार्ग	१४७
५ मोक्ष के साधन	१४८
६ मोक्षगामी कौन ?	१५०
७ मुक्त आत्मा	१५२
८ सिद्ध भगवान	१५३
९ मुक्ति के सुख	१५६
१० ससार	१५७
११ ससार का स्वरूप	१५९
१२ ससार के भेद	१६१
१३ दुख रूप ससार	१६३
१४ सब को दुख	१६६
१५ सुख-दुखमय ससार	१६७
१६ गतानुगतिक ससार	१६९
१७ परिवर्तनशील ससार	१७०
१८ ससार का पागलपन	१७१
१९ ससार का स्वभाव	१७४
२० दृष्टि के समान सृष्टि	१७६
२१ ससार की उपमाएँ	१८०
२२ दुनिया की ताकत	१८३
२३ जगत को वश करने का उपाय	१८४
२४ ससार की विशालता	१८६
२५ नरक-ससार	१९०
२६ नरक के दुख	१९३
२७ नरक मे जाने के कारण	१९६
२८ नरकगामी कौन ?	१९७
२९ देव-ससार	२००
३० दैविक चमत्कार की विचित्र बाते	२०३

चौथा कोष्ठक

	पृष्ठ
१ तिर्यञ्च ससार	२१७
२ आश्चर्यकारी तिर्यञ्च	२२१
३ दृश्यमान विश्व मे पशु-पक्षी	२३१
४ मनुष्य-ससार	२३३
५ मनुष्य का स्वभाव	२३५
६ मनुष्य का कर्तव्य	२३७
७ मनुष्य के लिये शिक्षाएँ	२३८
८ मनुष्य का महत्त्व	२४०
९ मनुष्य की दस अवस्थाएँ	२४२
१० मनुष्य के प्रकार	२४६

	पृष्ठ		पृष्ठ
३१ उतावल	७३	१४ गुणो मे दोष	१२३
३२ तेजस्वी-पुरुष	७५	१५ दृष्टिदोष एव उसके आश्चर्य	१२४
३३ समर्थ-पुरुष	७७	१६ उपकार-अहसान	१२६
३४ शूर-वीर पुरुष	७८	१७ परोपकार	१२८
३५ कायर	८१	१८ प्रत्युपकार (उपकार का वदला)	१३०
३६ शूरता और कायरता	८३	१९ कृतज्ञता और कृतज्ञ	१३२
३७ वलवान व्यक्ति	८४	२० परोपकारी	१३३
३८ अद्भुत वलिष्ठ व्यक्ति	८६	२१ निरुपकारी	१३५
३९ निर्वल	८८	२२ कृतघ्न	१३६
४० वल-पराक्रम	९०	२३ उदार और उदारता	१३८
४१ कुलीन पुरुष	९२	२४ दाता	१३९
दूसरा कोष्ठक		२५ दाता के उदाहरण	१४२
१ गुण	९४	२६ दान	१४३
२ गुणो का महत्त्व	९६	२७ दान की महिमा	१४४
३ विभिन्न प्रकार के गुण	९८	२८ दान की प्रेरणा	१४६
४ गुणो का नाश एव प्रकाश	१०२	२९ दान मे विवेक	१४९
५ गुणज्ञ	१०३	३० दान के भेद	१५२
६ गुणी	१०४	३१ अभयदान	१५४
७ गुणग्राहक वनो !	१०६	३२ सुपात्रदान	१५६
८ गुणग्राही के अभाव मे	१११	३३ कुपात्रदान	१५८
९ गुणहीन	११२	३४ पात्र-कुपात्र	१६०
१० गुणशून्य नाम	११४	३५ ज्ञान-दान	१६२
११ दोष	११६	३६ कृपण	१६३
१२ स्वदोष	११९	३७ याचक	१६८
१३ पर-दोष	१२१	३८ याचना	१७१

	पृष्ठ
१७ आत्मा की महिमा	२६६
१८ आत्मा के भेद	२७०
१९ इन्द्रियाँ	२७२
२० इन्द्रियो की शक्ति	२७४
२१ इन्द्रियदमन	२७६
२२ जितेन्द्रिय	२७८
२३ कान और बधिरता	२७९
२४ आँखें	२८१
२५ अधा	२८३
२६ जिह्वा	२८५
२७ मन	२८८
२८ मन का स्वभाव	२९१
२९ मन के आश्रित बन्ध-मोक्षादि	२९२
३० मन की मुख्यता	२९४
३१ मन के बिना कुछ नही	२९७
३२ मन शुद्धि (मन का निरीक्षण आवश्यक)	२९९
३३ मन शुद्धि दुष्कर	३०१
३४ मन शुद्धि के अभाव मे	३०२
३५ मन को शिक्षा	३०३
३६ मनोनिग्रह	३०४
३७ मनोनिग्रह के मार्ग	३०६
३८ मनोनिग्रह से लाभ	३०८
३९ मन का तार	३१०
४० विल पावर (दृढ संकल्प)	३१२
४१ मन की उपमाएँ	३१३
४२ मन के विषय मे विविध	३१६

सातवा भाग

पहला कोष्ठक

	पृष्ठ
१ भावना	१
२ भावना की प्रमुखता	३
३ भावनानुसार फल	४
४ भावना से लाभ	६
५ भावना के भेद	७
६ अनित्य-भावना	८
७ असरण-भावना	११
८ एकत्व-भावना	
९ भाषा (वाणी)	१६
१० देशी-विदेशी भाषा	१७
११ विश्व की भाषाओ के विषय मे ज्ञातव्य	१८
१२ भाषा के प्रकार	२१
१३ वाणी का फल	२२
१४ वाणी की महिमा	२३
१५ वाणी का प्रभाव	२४
१६ किन्तु शब्द की करामात	२६
१७ वाणी-वाणी मे अन्तर	३२
१८ मीठी वाणी	३३
१९ सुनाविन-सुविन	३५
२० बोलने योग्य वाणी	३८
२१ विचारयुक्त वाणी	४०
२२ समयोपयोगी वाणी	४२
२३ संक्षिप्त वाणी	४५

पृष्ठ

९ वस्त्र-आभूषण १३५
१० स्वास्थ्य-आरोग्य १३८
११ स्वास्थ्य-नीरोग १४०
१२ रोग १४३
१३ रोग के प्रकार १४५
१४ रोगी १४७
१५ रोगी की सेवा १४९
१६ औषधि १५०
१७ कतिपय औषधियां १५१
१८ उत्तम औषधियां १५३
१९ पथ्य १५४
२० वैद्य १५५
२१ वैद्यो के प्रकार १५७
२२ श्रेष्ठ वैद्य १५८
२३ निकृष्ट वैद्य १५९
२४ चिकित्सा १६१
२५ आयुर्वेद एव नाडी-विज्ञान आदि १६४
२६ जन्म १६६
२७ जन्म सम्बन्धी अनोखी प्रथाएँ १६७
२८ पुनर्जन्म की वास्तविकता १६८
२९ गर्भ १७२
३० सोलह सस्कार १७५
३१ बालक १७६
३२ बालको के गुण और दोष
३३ बालको के निर्माण की कुछ विधियाँ १७६
३४ जन्म-मृत्यु एव बालमृत्यु १७८
३५ बालको को बिगाडने एव सुधारने वाले अभिभावक १८०
३६ बालको की सरलता १८८
३७ बालको की उच्छृखलता १९१
३८ आश्चर्यकारी बालक-बालिकाएँ १९२

चौथा कोष्ठक
१ यौवन १९६
२ यौवन का अनर्थकारित्व १९८
३ जरा (वृद्धावस्था) १९९
४ वृद्ध २०२
५ वृद्धो का सम्मान २०५
६ वृद्धो के प्रकार २०७
७ वृद्ध ऐसा चिन्तन करें ! २०९
८ जीवन २११
९ जीवन के हेतु आदि २१३
१० जीवन की अस्थिरता २१४
११ जीवन से लाभ २१६
१२ श्रेष्ठ जीवन २१७
१३ निकृष्ट जीवन २२०
१४ आयु २२२
१५ लम्बी आयु वाले व्यक्ति २२५
१६ कतिपय देशो की औसत आयु २२९

पृष्ठ

१७ आयुक्षय २३१
१८ मरण २३४
१९ मृत्यु की निर्दयता २३६
२० मृत्यु की अप्रियता २३८
२१ मृत्यु-विज्ञान २३९
२२ मृत्यु का भय २४०
२३ मरते समय भी निर्भय २४१
२४ उत्तम मरण २४२
२५ अमरत्व २४३
२६ मरने के बाद २४४
२७ मरने के भेद आदि २४८
२८ आत्महत्या २५०
२९ अन्तिम सस्कार की अनोखी प्रथाएँ २५२

आठवा भाग

पहला कोष्ठक

१ काल १
२ जैनसिद्धान्तानुसार काल के भेद ३
३ पौराणिक-काल गणना पद्धति ८
४ सुषम-दुःषम काल के लक्षण १०
५ सुभिक्ष-दुर्भिक्ष के लक्षण १२
६ कलिकाल के कौतुक १५
७ कलिकाल मे प्रभावित भारत की स्थिति १९
८ कलिकाल के प्रभाव से वस्तुओ के मूल्य मे उत्तरोत्तर वृद्धि २२
९ कलिकाल के प्रभाव मे न आनेवाले २६
१० भविष्य की सूचनाएँ २७
११ स्वरो का रहस्य एव उनके आधार पर भविष्य की सूचनाएँ २९
१२ समय ३४
१३ समय की कीमत ३५
१४ समय का सदुपयोग ३७
१५ समयानुसार काम ४१
१६ आज का काम कल पर मत छोडो । ४३
१७ कल का काम आज ही कर लो । ४६
१८ थोडी-सी देर से नुकसान ४७
१९ गया वक्त वापस नही आता ४९
२० अवसर ५०
२१ अवसर चूकने के बाद ५१
२२ परिस्थिति ५७
२३ स्वभाव ५८
२४ वस्तुओ का स्वभाव ६०
२५ स्वभाव का परिवर्तन कठिन ६३
२६ स्वभाव न छोडने वाले ६५
२७ स्वभाविकता नही छिपती ६

यानुक्रमणिका भाग ८ कोष्ठक २

	पृष्ठ		पृष्ठ
प्रकृति	६७	२१ रामकृष्ण परमहस का अद्भुत अभ्यास	१०७
प्रकृति नही बदलती	६९	२२ कारण	१०८
आदत	७१	२३ काम (कर्म)	१०९
कुदरत	७३	२४ काम का महत्त्व	१११
तीसरा कोष्ठक		२५ अच्छा काम	११२
उद्यम	७५	२६ करने योग्य काम	११३
उद्यम मे कार्यसिद्ध	७७	२७ न करने योग्य काम	११५
उद्यम की प्रेरणा	७९	२८ व्यर्थ काम	११८
उद्यमी	८०	२९ निकम्मा-बेकार	१२१
उद्यम मे प्रकृति का परिवर्तन	८२	३० विचारपूर्वक काम	१२४
पुरुषार्थ	८३	३१ अपना-पराया काम	१२५
श्रम	८५	३२ यथाशक्ति काम	१२७
श्रम की कमाई	८७	३३ अति काम	१२९
परिश्रम की व्यर्थता	८९	३४ अतिपरिचय अपमान का हेतु	१३०
विश्राम	९०	३५ उलटा काम	१३४
सफलता	९१	३६ मनचाहा काम	१३५
असफलता मे धैर्य	९३	३७ हाथ कमाया काम	१३६
सावधानी और असावधानी	९३	३८ दो-दो काम नही होते	१३७
उत्साह	९५	३९ एक पथ, दो काज	१४०
उत्साहहीनता	९६	४० काम को अधूरा मत रखो!	१४१
साहस	९७	४१ कार्य-सिद्धि	१४२
हिम्मत	९९	४२ कार्य की असिद्धि	१४३
हिम्मतहार मत बनो!	१००	४३ कर्त्तव्य	१४५
अभ्यास	१०२	४४ विशेष कर्त्तव्य	१४६
अभ्यास का महत्त्व	१०४		

	पृष्ठ
४५ व्यवहार	१४८
४६ लोकव्यवहार	१४९
४७ लोकप्रियता	१५१

तीसरा कोष्ठक

	पृष्ठ
१ कर्म	१५३
२ स्वकर्म ही सुख-दुःख के दाता	१५५
३ कर्मानुसार फल	१५७
४ कर्मों का अवश्य भोग	१५९
५ कर्मकर्त्ता के पीछे-पीछे	१६१
६ कर्मों की विचित्र गति	१६२
७ कर्म-बन्ध	१६५
८ कर्म-क्षय के बाद	१६६
९ विधि-भाग्य	१७०
१० भाग्यानुसार लाभ	१७३
११ विधि की विचित्रता	१७४
१२ सद्भाग्य-पुण्योदय	१७६
१३ भाग्यवान	१८०
१४ दुर्भाग्य-पापोदय	१८२
१५ भाग्यहीन	१८५
१६ भवितव्यता-होनहार	१८७
१७ भवितव्यता के दृष्टान्त	१९०
१८ आनन्द	१९३
१९ आनन्द की स्थिति	१९५
२० सुख	१९७
२१ वास्तविक सुख	२००

	पृष्ठ
२२ सासारिक सुख	२००
२३ सुख मे धर्म की विस्मृति	२०३
२४ दुःख के बाद सुख	२०४
२५ सुख के भेद	२०६
२६ सुख का स्त्रोत	२०८
२७ सुखी	२०९
२८ सुख-दुःख	२१२
२९ मन के पीछे सुख-दुःख	२१३
३० सुख-दुःख का जोडा	२१४
३१ दुःख	२१६
३२ दुःख की अधिकता	२१७
३३ महान् दुःख	२१८
३४ दुःख मे दुःख	२१९
३५ दुःख के भेद	२२०
३६ दुःख का महत्त्व	२२२
३७ आपत्ति	२२३
३८ दुःखनाश के उपाय	२२५
३९ दुःखी	२२६
४० पर दुःख से दुःखी	२२७
४१ कठिनाई	२२८
४२ दुविधा	२२९
४३ कमी	२३१
४४ तितिक्षा सहनशीलता	२३२
४५ सयोग के साथ वियोग	२३३
४६ सहयोग	[illegible]
४७ सहारा-सहानुभूति	[illegible]

	पृष्ठ		पृष्ठ
		२३ सन्तान	२८४
चौथा कोष्ठक		२४ अधिक सन्तान कष्ट का कारण	२८६
१ गृहस्थ	२३६	२५ अधिक सन्तान वाले मा-बाप	२८७
२ गृहस्थ को शिक्षा	२३६	२६ पुत्र	२८६
३ प्रशसनीय-गृहस्थाश्रम	२४१	२७ माता-पिता के अनुरूप पुत्र	२६१
४ निन्दनीय-गृहस्थाश्रम	२४२	२८ पुण्यो से पुत्र प्राप्ति	२६४
५ अतिथि-सत्कार	२४४	२६ पुत्र के विना	२६५
६ अतिथि के लक्षण	२४६	३० पुत्रो के लिये अनर्थ	२६६
७ मेहमान (पाहुना)	२४७	३१ सुपुत्र	२६८
८ घर	२४६	३२ कुपुत्र	३००
६ स्थान	२५१	३३ शत्रु के रूप मे पुत्र	३०२
१० स्थान भ्रष्ट	२५३	३४ सुपुत्र-कुपुत्र	३०३
११ स्थान-त्याग	२५५	३५ पुत्रो के प्रकार	३०४
१२ भारत के कुछ दर्शनीय-स्थान	२५७	३६ पुत्री-कन्या	३०६
१३ कला के लिए प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान	२६२	३७ पुत्री की विदाई	३०७
१४ जन्मभूमि-स्वदेश	२६६	३८ पुत्री के योग्य-अयोग्य वर	३०६
१५ देश भक्त	२६८	३६ जामाता-दामाद	३१०
१६ देश-विशेष के दोष गुण	२७०	४० ससुराल	३११
१७ स्वपक्ष	२७२	४१ बहू	३१२
१८ स्वजन-ज्ञाति	२७३	४२ विनीत बहू की सेवा और अमर सुहाग	३१५
१६ माता	२७७	४३ भाता-भाई	३१७
२० पिता	२८१	**नौवा भाग**	
२१ माता-पिता	२८२	**प्रथम कोष्ठक**	
२२ पुत्र के प्रति माता-पिता का कर्त्तव्य	२८३	१ ब्राह्मण	१

	पृष्ठ		पृष्ठ
२ ब्राह्मण के लक्षण	४	२१ तीर्थ, यज्ञ एव बाह्य-क्रियाकाडो को महत्त्व देने वालो के लिये	३८
3 ब्राह्मण के अनेक रूप	७	२२ श्राद्ध	४०
४ ब्राह्मण के विषय मे विशेष ज्ञातव्य	८	२३ श्राद्ध के योग्य-अयोग्य ब्राह्मण	४२
५ वैदिक सस्कृति मे ब्राह्मण और शूद्र	९	२४ श्राद्ध को न मानने वालो का मतव्य	४३
६ शूद्र के विषय मे विशेष	११	२५ श्राद्ध आदि मे मास का विधान और निषेध	४४
७ स्नान	१२	२६ व्यसन	४६
८ स्नान-निषेध	१४	२७ सात व्यसन और उनमे हानि	४७
९ तीर्थ	१६	२८ द्यूत	४९
१० मानस तीर्थ	१७	२९ मास	५१
११ जगमतीर्थ की प्रतीक्षा मे गगा	१९	३० मास-निषेध	५३
१२ मन शुद्धि के विना जलादि से आत्मशुद्धि नही	२२	३१ मासत्याग का महत्त्व	५५
१३ आध्यात्मिक तीर्थ	२४	३२ मास की ताकत कम	५६
१४ शुद्धि-शौच	२६	३३ मासाहार से होने वाले भयकर रोग	५७
१५ व्यावहारिक एव आध्यात्मिक दृष्टि मे वस्तुओ की शुद्धि	२७	३४ अमासाहारी	६०
१६ यज्ञ	३०	३५ मासभक्षको के लिये ध्यान देने योग्य बाते	६२
१७ हिंसात्मक यज्ञ	३१	३६ मद्य (मद्यनिषेध)	६५
१८ हिंसात्मक यज्ञो का निषेध	३२	३७ मद्यपान की मात्रा	६७
१९ आत्मयज्ञ (अहिंसात्मक यज्ञ)	३४	३८ मद्यपान के दुर्गुण	[illegible]
२० आत्मयज्ञ की श्रेष्ठता	३७	३९ शराबियो की दुर्दशा	[illegible]

		पृष्ठ
४०	तमाखू (तमाखू का प्रचार)	७४
४१	तमाखू मे जहर	७५
४२	सिगरेट	७७
४३	तमाखू का निपेध	७८
४४	तमाखू के समर्थक	८१
४५	चाय	८२

दूसरा कोष्ठक

		पृष्ठ
१	राजनीति	८३
२	भारत की राजनीतिक स्थिति	८५
३	राजनीतिज्ञ	९३
४	राष्ट्रपति पद के विपय मे चिंतन	९४
५	राजा-(राजा की महिमा)	९५
६	श्रेष्ठ राजा	९७
७	राजा के धर्म-कर्त्तव्य	१००
८	राजा की कमिया	१०३
९	अयोग्य राजा	१०५
१०	राजाओ के प्रकार	१०८
११	राज-गुरु	११२
१२	राज्य-मत्री	११३
१३	मत्री कितने हो ?	११४
१४	अयोग्य मत्री	११५
१५	राजदूत	११७
१६	विदेशो मे भारतीय दूतावास एव उच्चायुक्त	११९
१७	भारत मे विदेशी दूतावास एव उच्चायुक्त	१२१
१८	राजकर्मचारी	१२३
१९	गुप्तचर	१२४
२०	प्रजा	१२५
२१	यथा राजा तथा प्रजा	१२७
२२	राज्य	१३०
२३	सुराज्य (अच्छी सरकार)	१३१
२४	कुराज्य	१३२
२५	अराजकता	१३७
२६	स्वराज्य (प्रजातत्र राज्य)	१३८
२७	राष्ट्र-देश	१३९
२८	दुर्ग-किला	१४०
२९	राज्यकोप (खजाना)	१४१
३०	बल (सेना)	१४२
३१	शस्त्र	१४५
३२	युद्ध (युद्धनिपेध)	१४८
३३	युद्ध से पहले विचारणीय बातें	१५०
३४	युद्ध के कतिपय नियम	१५२
३५	युद्ध का प्रोत्साहन	१५३
३६	प्राचीन युद्ध के चित्र	१५५
३७	विश्व के कतिपय उल्लेखनीय युद्ध	१५९
३८	जय-पराजय	१६३

तीसरा कोष्ठक

		पृष्ठ
१	सेना	१६५

	पृष्ठ
२ स्वामी	१६७
३ स्वामी के कर्तव्य	१६८
४ स्वामी का प्रसाद	१६९
५ निन्दनीय स्वामी	१७०
६ सेवक	१७१
७ सेवक की दयनीयदशा	१७३
८ सेवा	१७५
९ राजसेवा	१७६
१० राजसेवक	१७७
११ नौकरी	१७९
१२ नौकर	१८०
१३ स्वाधीन-स्वतन्त्र	१८१
१४ स्वतन्त्रता	१८२
१५ स्वाधीनता-आजादी	१८३
१६ पराधीनता	१८४
१७ शासक	१८६
१८ शासन	१८७
१९ सत्ता	१८८
२० क्रांति और संघर्ष	१८९
२१ कानून	१९०
२२ नियम	१९२
२३ न्याय	१९३
२४ न्यायाधीश	१९५
२५ पंच	१९७
२६ न्यायकर्त्ताओं के उदाहरण	१९९
२७ वैश्य-वणिक्	२०२
२८ वणिक्-प्रशंसा	२०४

	पृष्ठ
२९ वणिक-निंदा	२०८
३० वाणिज्य-व्यापार	२११
३१ व्यापारी	२१३
३२ कृषक	२१६
३३ कृषि-खेती	२१७
३४ चारण-चारण जाति की विशेषता	२१९
३५ सोनार	२२२
३६ जाट	२२३
३७ असमव	२२५
३८ असमानता	२२८
३९ समानता-बराबर	२२९
४० श्रेष्ठ	२३२
४१ न्यूनाधिकता	२३३
४२ बिगाड़	२३५
४३ वृद्धि	२३७
४४ लाभ और हानिकारक	२३८
४५ निरुपाय	२३९
४६ दुर्ज्ञेय	२४०
४७ नहीं	२४१
४८ नहीं के समान	२४३
४९ नहीं से कुछ अच्छा	२४४

चौथा कोष्ठक

१ नीतिमान और नैतिकता	२४[illegible]
२ नैतिक शिक्षाएं	[illegible]
३ सामान्य नीति	[illegible]

	पृष्ठ
४ विज्ञान-प्रश्नोत्तरी	२५६
५ पर्व-त्योहार	२५८
६ जैन एव बौद्ध पर्व	२५९
७ हिन्दुपर्व	२६२
८ ईसाईपर्व	२६६
९ मुस्लिमपर्व	२६८
१० आश्चर्य	२६९
११ आश्चर्य के भेद	२७१
१२ आश्चर्यजनक वृक्ष	२७४
१३ आश्चर्यजनक पशु-पक्षी	२७५
१४ आश्चर्यजनक बहुमूल्य पुस्तकें	२७७
१५ आश्चर्यजनक प्रतियोगिताएँ	२७८
१६ आश्चर्यजनक स्मरणशक्ति	२८१
१७ अन्तरिक्ष मे मानव की आश्चर्यजनक उडान	२८३
१८ आश्चर्यजनक अन्य कई वस्तुएँ	२८७
१९ कतिपय अद्भुत व्यक्ति	२९४
२० शकुन	२९९
२१ शुभाशुभ शकुन	३०१
२२ शकुन एव उनकी आश्चर्यजनक बातें	३०५
२३ जादूगर एव उनके आश्चर्य	३०८
२४ ज्योतिप की जानकारी	३११
२५ ज्योतिपियों की चमत्कारी बातें	३१८
२६ वायु	३२२
२७ रेलगाडी एव मोटरें	३२४
२८ डाक एव तार	३२६
२९ सख्या	३२७
३० प्रकीर्णक	३३०
३१ रामायण मे प्रयुक्त किये जानेवाले मापाम्लोक	३३४

☆

वक्तृत्वकला के बीज—उपविषयानुक्रमणिका

पृष्ठ

पहला भाग
१ किसका कौन गुरु ? ७७
२ आचार्य की ८ सम्पदाएँ ८०
३ लोकधर्म १०९
४ धर्म कई तरह से होता है १३७
५ धर्म और सम्प्रदाय १४२

दूसरा भाग
१ बाल विवाह ४७
२ वृद्धविवाह के प्रसग पर ४७
३ लडके-लडकियो का मोल ५३
४ चार प्रकार की पतिव्रताएँ ८८
५ स्त्रियो के सोलह शृगार १२०
६ सतोष के तीन मार्ग १७०
७ क्रोध मे जहर २२४
८ पैशुन्य-निषेध २५५
९ अपनी आलोचना सुनना कठिन २६३
१० प्रार्थना मे द्वेष २६९
११ राग के भेद २७०
१२ रागान्ध २७२
१३ प्रेमी का विरह २९६
१४ मित्रता की रक्षा के चार उपाय ३१७

पृष्ठ
१५ मित्रता-भग के कारण ३२०
१६ अगुलिया एव अगूठा ३२८

तीसरा भाग
१ नम्रता का उपदेश १०
२ स्वप्नो की सख्या एव शुभाशुभता ९१
३ स्वप्न के प्रकार ९३
४ स्वप्नो की सत्यासत्यता ९५
५ स्वप्नफल की अवधि ९६
६ स्वप्नो का काम ९६
७ स्वप्न की चमत्कारी घटनाएँ ९७
८ स्वप्न रिकार्ड करने वाली मशीन ९९
९ घृणा-निषेध ११७
१० ज्ञान की विशेषता १८१
११ जातिस्मरण ज्ञान १८४
१२ ज्ञान मार्ग की सात भूमिकाए १८६
१३ इस्लाम धर्म के अनुसार परमज्ञान (मारिफत्त) पाने के लिए जरूरी बातें १८७
१४ आविष्कारकर्त्ता वैज्ञानिक २०१
१५ ज्ञान का दिवालियापन २३

उपविषयानुक्रमणिका भाग ४-५

पृष्ठ

१६ परीक्षा मे सफल कैसे हो २३५

चौथा भाग ११

१ असद् विचार ११

२ विचारो का परिवर्तन १८

३ उपदेश-दान २२

४ लेखनकला २३

५ वस्त्र बुनने की कला २४

६ गायनकला २६

७ नृत्यकला २७

८ तैरने की कला ३०

९ धर्मकला ३१

१० कलाकार

११ काव्य मे दोष देखने वाले ३७

व्यक्ति ५७

१२ गलगचिया के गद्यचित्र

१३ ग्रन्थ को संक्षिप्त करने वाले ६८

अनूठे लेखक ६९

१४ बुरे लेखक ८८

१५ समाचारपत्र

१६ अनुभवी वैद्य-डाक्टर वकील ९३

आदि ९८

१७ अद्भुत अनुभवी १०३

१८ दर्शन से लाभ १०३

१९ दर्शन के भेद १०८

२० दर्शनो का उद्भव १०८

२१ दर्शनो के प्रमाण १०९

२२ दर्शनाभास

पृष्ठ

२३ नास्तिकता का मूलकारण ११३

आज की पढाई ११५

२४ सम्यक्त्व के भेद

२५ सम्यक्त्व के लक्षण, भूषण ११६

दूषण और विशुद्धि १३४

२६ छ प्रकार के प्रश्न १५२

२७ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य १६४

२८ वेद पौरुषेय १८६

२९ सदाचार-दुराचार २००

३० एकादशी व्रत का ढोंग

३१ योग शब्द का दूसरे प्रकार २१०

में प्रयोग

३२ संयम से भ्रष्ट होते समय

१८ बातो का चिंतन २३१

३३ साधु दशा २८६

३४ गोचरी-सम्बन्धी ४२ दोष २९९

पाँचवाँ भाग १२

१ श्रावक के प्रकार १५

२ श्रावक के चार विश्राम १६

३ श्रावक के तीन मनोरथ १७

४ श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएं २०

५ सामायिक का महत्त्व २२

६ सामायिक के अधिकारी २२

७ सामायिक के भेद २२

८ सामायिक के अतिचार २३

९ सामायिक के ३२ दोष ४१

१० प्रायश्चित्त के नाम

	पृष्ठ
११ आलोचना कौन करता है?	४९
१२ प्रतिसेवना के दस प्रकार	५३
१३ आलोचनादाता के आठ गुण	५५
१४ आलोचना के भेद	५८
१५ मिच्छामि दुक्कड	५९
१६ प्रतिक्रमण	६२
१७ वैदिक सध्या	६३
१८ ध्यान के आलवनभूत सात कमल-चक्र	६६
१९ ध्यान के आलम्बनभूत चार ध्येय	७१
२० चार ध्यान एव धर्म ध्यान के भेद-प्रभेद	७२
२१ भोजन का पावनकाल	८४
२२ विटामिन	९९
२३ कौन कब आहार के इच्छुक	१०३
२४ भोजन के समय मौन	१०६
२५ कैलोरी	१०९
२६ सिद्धो के गुण	१५४
२७ ग्रहो और ब्रह्माण्डो के विषय मे वैज्ञानिको का मत	१८७
२८ देवो की कार्यक्षमता	२००
२९ देवो की आयु	२०१
३० देवो के भेद	२०२
३१ आश्चर्यकारी वृक्ष	२१८
३२ गणित की अपेक्षा से मनुष्यो के चार आश्रमो का रहस्य	२३४

	पृष्ठ
३३ भूगर्भ-ससार की खोज	२८०
३४ विश्व के महासागर एव महाद्वीप	२८२
३५ वर्तमान विश्व के देश, उनकी जनसख्या एव राजधानिया	२८६
३६ विश्व की लम्बी नदियाँ	२९६
३७ भूगोल के रिकार्ड	२९८
३८ ससार के बडे शहर और उनकी आवादी	३०१
३९ वर्तमान विश्व के निरक्षर और अधो की सख्या	३०२
४० विश्व के प्रलयकारी भूकम्प	३०३
४१ भारत की आवादी	३०५
४२ भारत गणराज्य के अन्तर-वर्ती राज्य	३०७
४३ भारत की जनसख्या का आयुविवरण	३११
४४ भारत के गाँव और शहर	३१२
४५ भारत मे पशुधन	३१३
४६ भारत मे दूध	३१३
४७ भारतीय इतिहास की प्रमुख तिथियाँ	३१५
४८ भारत मे साक्षरता	३१९
४९ भारत की बडी चीजें	३२१
५० सूर्योदय और सूर्यास्त सारणी	३२

	पृष्ठ
५१ संसार के प्रमुख नगरों के समय और दूरियां	३२८
छठा भाग	
१ संगति न करने योग्य व्यक्ति	४७
२ महानता के विघातक दोष	५७
३ विलंब न करने के काम	७२
४ गुणिजन-संगति	१०५
५ दोष को छोटा मत समझो	११७
६ दोष आते ही गुणों का पलायन	११७
७ दान के भूषण	१४३
८ दान के दोष	१४३
९ कृपण को दकार से घृणा	१६६
१० अद्भुत भिखारी	१७०
११ हरएक के पास मत मांग!	१७३
१२ रुपया	१८४
१३ पैसा	१८६
१४ चौदह रत्न	१८८
१५ विभिन्न देशों की मुद्राएँ	१८९
१६ दीनों की लक्ष्मी से प्रार्थना	२०६
१७ भारत के बड़े-बड़े उद्योगगृहों की कुल-पूंजी	२१४
१८ गरीब को मत सताओ!	२१६
१९ एक दमड़ी में राजाभोज	२२०
२० आयकर (इन्कम टैक्स)	२२३
२१ नकद और उधार	२३१
२२ आत्मा की परिमितता	२३९
२३ आत्मा की अलिंगिता	२४०
२४ आत्मस्थित होने के चार साधन	२५७
२५ रसना में तीन इन्द्रियां	२८६
२६ मन के विषय	२८९
२७ मन की पहचान	२८९
२८ मन की ताकत	२९०
२९ मन का पानी पर अद्भुत असर	२९६
३० शरीर की क्रियायें भी मुख्यतया मन के पीछे	२९५
सातवां भाग	
१ कटु सत्य में हानि	४७
२ समस्यापूर्ति	८०
३ प्रहेलिका	८१
४ अन्तर्लापिका	८३
५ क्रिया गुप्त	८४
६ राजस्थानी पहेलियां	८५
७ बातचीत में १३ वर्ष	९०
८ बात की रक्षा	९३
९ सुनने की विधि	१०६
१० शरीर का वजन	१२०
११ शरीर का दाहिना अंग	१२०
१२ शरीर-रक्षा	१२९
१३ व्यायाम के अयोग्य व्यक्ति	१३६
१४ रोग के कारण	१४३

	पृष्ठ
१५ समोहन विद्या के सहारे शल्यक्रिया	१६१
१६ गर्भगत जीव बाहर की बाते भी सुनता है	१७२
१७ प्राणियो की गर्भस्थिति	१७४
१८ जगत्प्रसिद्ध आदर्श बालक	१७८
१९ अभिभावक को विशेषध्यान देने योग्य कई बाते	१८०
२० वृद्ध और वृद्धत्व का सवाद	२०३
२१ मनुष्य जीवन के सौ वर्ष	२१२
२२ वाट इज लाइफ	२१६
२३ मरने के बाद गति	२४६
आठवा भाग	
१ मन्वन्तर कालगणना पद्धति	८
२ बौद्धिक क्षेत्र मे कमी	२०
३ सादगी के क्षेत्र मे कमी	२०
४ भ्रातृप्रेम मे कमी	२१
५ नैतिकता मे कमी	३७
६ एक मिनट मे	३८
७ कौन कितने समय मे	३८
८ पृथ्वी पर प्रति घटा गति	३८
९ पानी मे प्रति घटा गति	३९
१० वायु मे प्रति घटा गति	६१
११ भोजन का स्वभाव	६१
१२ विष का स्वभाव	६२
१३ असफलता के चार कारण	

	पृष्ठ
१४ अद्भुत साहसी छत्रपति शिवाजी	९७
१५ कार्य के प्रारभ मे ही हिम्मत हारने वालो के लिए	१०१
१६ काम मे शर्म	१०९
१७ निषिद्धकार्य के कर्ता	११६
१८ निषिद्ध कार्य का फल	११६
१९ निकम्मो के काम	१२३
२० विघ्न	१४४
२१ लोकप्रियता के इच्छुक निम्न २२ प्रश्न अपने आपसे पूछे	१५०
२२ आठ करण	१६७
२३ सुख की अशाश्वतता	१९८
२४ गृहस्थ बनने की योग्यता	२३७
२५ निंदनीय गृहस्थ	२३८
२६ कच्चा पाहुना	२४७
२७ पक्का पाहुना	२४७
२८ स्थान का महत्त्व	२५२
२९ स्वस्थान	२५४
३० पक्षपात	२७२
३१ स्वजनो के साथ व्यवहार	२७४
३२ निकृष्ट स्वजन	२७५
३३ भयानक एव सहायक स्वजन	२७५
३४ बहू का कष्टमय जीवन	३१३
३५ सास-बहू का व्यवहार	३१३

	पृष्ठ
३६ बेटे-बहू को वश करने की विधि	३१४

नौवा भाग

	पृष्ठ
१ सभी जातियों मे ब्राह्मण और चाण्डाल	२
२ स्नान के भेद	१२
३ जीवनभर नही नहाने वाले ख्रीतियन	१५
४ पाडवो की तीर्थयात्रा	२५
५ यज्ञ का महत्व	३०
६ पितर	४०
७ व्यसनो के कुफल	४८
८ व्यसनो का मूल द्यूत	४६
९ शराव की बोतल	७०
१० सिगरेट मे मार-काट	७८
११ आम चुनाव	८६
१२ ओहदे के अनुसार उच्च पदाधिकारियो का क्रम	९०
१३ भारत के प्रमुख राजनीतिक दल एव उनके चिन्ह	९४
१४ राष्ट्र (भारत की कतिपय ज्ञातव्य वस्तुएँ	९२
१५ नाना के विषय मे विविध	९३
१६ राजपूतो के प्रति व्यग	१०४
१७ छप्पन देशो की सेना और उस पर १६॥ खरब रुपये वार्षिक खर्च	१४३
१८ मुक्ति देने वाला युद्ध	१६२
१९ सेवक के कर्त्तव्य	१७१
२० सेवा से लाभ	१७५
२१ राजवल्लभ सेवक	१७८
२२ नौकर के विषय मे विशेष	१८०
२३ सत्ता का महत्व	१८८
२४ निर्णय के अजब तरीके	१९६
२५ वणिक की प्रकृति	२०२
२६ व्यापार के विषय मे विशेष ज्ञातव्य	२१२
२७ व्यापार मे हिसाब	२१२
२८ अनूठा व्यापारी एव दानी	२१३
२९ दिव्य दृष्टि	२१७
३० सत्य	२२७
३१ भारत मे कुआँरियो से कुआँरे अधिक	२३४
३२ बिगडने के बाद प्रयत्न व्यर्थ	२३६
३३ अद्भुत आत्मशक्ति	२८२
३४ पायनियर ११ और १०	२८४
३५ जीवनभर का लेखा-जोखा	२६१

वक्तृत्वकला के बीज ग्रन्थ मे १२८० विषय एव २४६ उपविषय हैं। सब मिलकर १५२६ गिनने मे आए हैं। प्रत्येक भाग में—विषय-उपविषय की सख्या निम्न प्रकार हैं

भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	योग
विषय	१२८	१४७	१४३	१४१	१०८	१५३	१२९	१६८	१६३	१२८०
उपविषय	५	१६	१६	३४	५१	३०	२३	३६	३५	२४६
योग	१३३	१६३	१५९	१७५	१५९	१८३	१५२	२०४	१९८	१५२६



विषयों का अकारादिक्रम

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
अक्ल के विषय कहावतें	३	१६०	अनगार	४	१४७
अच्छा काम	८	११२	अनशन	५	३६
अच्छी कविता	४	३४	अनाध्याय	४	७६
अज्ञान	३	२०६	अनित्यभावना	७	८
अज्ञानी	२	२११	अनुभव	४	६२
अति काम	८	१२६	अनुभवहीन	४	६६
अतिज्ञान-अल्पज्ञान	३	१८८	अनुरागी	२	२७२
अतिथि के लक्षण	८	१४६	अनेकपति-प्रथा	२	६५
अतिथिसत्कार	८	१४४	अन्तरिक्ष में मानव की आश्चर्यजनक उड़ान	६	१८३
अतिपरिचय अपमान का हेतु	८	१३२	अन्तिम नमस्कार की अनोखी प्रथाएँ	७	२५२
अति भोजन	५	११२	अन्धा	६	१८३
अतिमहत्वाश का निषेध	३	७६	अन्याय का धन	६	१६४
अद्भुत बलिष्ठ व्यक्ति	६	८६	अपना-पराया काम	८	१२५
अधम (तीन) पुरुष	६	६५	अपमान	३	३७
अधर्म	१	१५८	अपमान-निषेध	३	३६
अधिक अध्ययन	४	७७	अपरिग्रह	२	१२६
अधिक खानेवाले आदमी	५	१४४	अपव्यय-निषेध	६	२२७
अधिक सन्तान कष्ट का कारण	८	२८६	अपेक्षा से जीवन का कर्तव्य	१	१४
अधिक सन्तानवाले माँ-बाप	८	२८७	अब्रह्मचर्य	[illegible]	८०
अध्ययन	४	३१	अभयदाता	३	१२५

	भाग	पृष्ठ
अभयदान	६	१५४
अभिमान	३	१७
अभिमान के उदाहरण	३	३३
अभिमान के दुर्गुण	३	१९
अभिमान के भेद आदि	३	२३
अभिमानी	३	३१
अभ्याख्यान	२	२५७
अभ्यास	८	१०२
अभ्यास का महत्व	८	१०४
अमरत्व	७	२४३
अमासाहारी	९	६०
अयोग्य आचार्य	१	८९
अयोग्य मन्त्री	९	११५
अयोग्य राजा	९	१०५
अयोग्य श्रोता	७	११४
अराजकता	९	५०
अवसर	८	५१
अवसर चूकने के बाद	८	८
अविनीत	३	१०२
अविनीत शिष्य	१	४
अविवेकी	४	११
अशरणभावना	७	१३१
अश्रद्धावान (शकाशील)	४	१७६
असतोष	२	
असम्भव	९	
असत्य (असत्य का स्वरूप)	१	२३७

	भाग	पृष्ठ
असत्य की निन्दा	१	२४१
असत्य के भेद और फल	१	२३८
असत्य के विषय मे विविध	१	२४६
असत्य के सम्बन्ध मे कहावतें	१	२४९
असत्य वचन	१	२४३
असत्यवादी	१	२४४
असफलता मे धैर्य	८	९२
असमानता	९	२२८
असह्य बाते	२	१९१
अहिंसा	२	१७६
अहिंसा का उपदेश	१	१८३
अहिंसा की महिमा	१	१७८
अहिंसा के फल	१	१८१
आखें	९	२८१
आसू	३	१२१
आचारण विना ज्ञान	४	१८८
आचार (आचरण)	४	१८४
आचारवान	४	१८९
आचारहीन	४	१९२
आचार्य का शिष्य के प्रति कर्त्तव्य	१	८३
आचार्यों के प्रकार	१	८७
आज का काम कल पर मत छोडो	८	४३
आत्म-चिन्तन	६	२६४
आत्मज्ञ	६	२४८

आत्मर…
आत्मरक्षा
आत्मविजय
आत्मविश्वास
आत्मशुद्धि
आत्म-सम्मान
आत्मस्तुति निषेध
आत्म…
आ…

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
आत्मदमन	६	२६०	आपत्ति	८	२२३
आत्मनिन्दा	२	२६४	आय	६	२२३
आत्मप्राप्ति	६	२५६	आयु	७	२२२
आत्मयज्ञ (अहिंसात्मक यज्ञ)	६	३४	आयु क्षय	७	२३१
			आयुर्वेद एवं नाडी विज्ञान	७	१६४
आत्मयज्ञ की श्रेष्ठता	६	३७	आर्जव (सरलता)	३	६०
आत्मरक्षक	६	२५२	आलोचना	५	४६
आत्मरक्षा	६	२५०	आलोचना के दोष	५	५२
आत्मविजय	२	२६२	आलोचना के विषय में विविध	५	४९
आत्मविश्वास	६	२५४	आवश्यक	५	६१
आत्मशुद्धि	६	२५८	आवश्यकता	२	१३०
आत्म-सम्मान	६	२५३	आशा	२	१३७
आत्मस्तुति (स्व-प्रशंसा) निषेध	२	५२	आशा की प्रशंसा	१	१४३
आत्महत्या	७	२५०	आश्चर्य	६	
आत्मा	६	२३५	आश्चर्यकारी निर्ग्रन्थ	५	२२१
आत्मा का कर्तृत्व	६	२४१	आश्चर्यकारी बालक-बालिकाएँ	७	१६२
आत्मा का ज्ञान	६	२४५	आश्चर्यकारी मनुष्य	५	२६२
आत्मा का दर्शन	६	२४३	आश्चर्यकारी मनुष्यणियाँ	५	२७२
आत्मा का स्वरूप	६	२३७	आश्रय के भेद	६	२७१
आत्मा की महिमा	६	२६६	आश्चर्यजनक अन्य कई वस्तुएँ	६	२८७
आत्मा की शाश्वतता आदि	६	२३६	आश्चर्यजनक पशु-पक्षी	६	२७५
आत्मा के भेद	६	२७०	आश्चर्यजनक प्रतियोगिताएँ	६	२७८
आदत	८	७१	आश्चर्यजनक बहुमूल्य पुस्तकें	६	२७७
आध्यात्मिक शौर्य	६	२८			
आनन्द	८	१६३			
आनन्द की स्थिति	८	१६५			

	भाग	पृष्ठ
आश्चर्यजनक वृक्ष	६	२७४
आश्चर्यजनक स्मरणशक्ति	६	२८१
आसक्ति	२	१६२
आस्तिक	४	११०
आहार	५	८१
आहार किसलिये ?	४	३०५
इकरंगे-दुरंगे भक्त	१	५६
इच्छा	२	१४५
इज्जत-सम्मान	३	४४
इतिहास	४	६४
इन्द्रिय दमन	६	२७६
इन्द्रियाँ	६	२७२
इन्द्रियों की शक्ति	६	२७४
ईसाई पर्व	६	२६६
ईमानदार	१	२३४
ईर्ष्या	२	२४२
ईर्ष्यालु	२	२४४
ईर्ष्या सम्बन्धी दृष्टान्त और कहावतें	२	२४६
ईश्वर का जगत्कर्तृत्व चिन्तनीय	१	१३
ईश्वर की निन्दा भी	१	६५
ईश्वरीय ज्ञान एवं दर्शन	१	२२
उतावल	६	७३
उत्तम औषधियाँ	७	१५३
उत्तम पुरुष	६	६२
उत्तम पुरुषों का स्वभाव	६	६३

	भाग	पृष्ठ
उत्तम मरण	७	२४२
उत्सर्ग-अपवाद	४	१६१
उत्साह	८	६५
उत्साह हीनता	८	६६
उदार और उदारता	६	१३८
उद्यम	८	७५
उद्यम की प्रेरणा	८	७६
उद्यम से कार्यसिद्धि	८	७७
उद्यम से प्रकृति का परिवर्तन	८	८२
उद्यमी	८	८०
उधार	८	२३०
उपकार (अहसान)	६	१२६
उपदेश	६	१८
उपवास	४	३८
उपहास (मजाक-विनोद)	५	१३४
उपहास-निषेध	३	१३६
उल्टा काम	३	१३४
ऋण-कर्ज	८	२२८
एकत्वभावना	६	१४
एक पथ दो काज	७	१४०
औषधि	८	१५०
कटुवाणी	७	४८
कटुवाणी-निषेध	७	४६
कठिनाई	७	२८८
कतिपय अद्भुत व्यक्ति	८	२६४
कतिपय औषधियाँ	६	१५[illegible]
	७	

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
कतिपय जगत्प्रसिद्ध			कलिकाल के कौतुक	८	१५
सन्त-महात्मा	४	२६७	कलिकाल के प्रभाव में न		
कतिपय देशों की औसत			आने वाले	८	२६
आयु	७	२२६	कलिकाल से प्रभावित		
कथन के समान आचरण			भारत की स्थिति	८	१६
आवश्यक	४	१४३	कलिकाल के प्रभाव से		
कन्दर्पादि में लीन साधुओं			वस्तुओं के मूल्य में		
की गति	४	३३५	उत्तरोत्तर वृद्धि	८	२७
कन्यादान	२	५१	कल्पना	४	५४
कमी	८	२३१	कल्पना के उदाहरण	४	५६
करने योग्य काम	८	११२	कवि	४	३८
कर्त्तव्य	८	१४५	कविता	४	३२
कर्म	८	१५३	कविता का महत्त्व	४	३३
कर्म कर्त्ता के पीछे-पीछे	८	१६१	कविता-विरोध	४	३७
कर्मक्षय के बाद	८	१६६	कवि-प्रशंसा	४	४१
कर्मबन्ध	८	१६५	कवियों की प्रकृति	४	४२
कर्मानुसार फल	८	१५७	कवियों की शक्ति	४	४३
कर्मों का अवश्य भोग	८	१५६	कवियों के लिये		
कर्मों की विचित्र गति	८	१६२	विचारणीय बातें	४	४५
कल का काम आज ही			कषाय	३	६६
कर लो	८	४६	कषायत्याग	३	७१
कलह	२	२४६	कहावतें	७	६७
कलहकर्ता	२	२५३	कान और बधिरता	६	२७६
कलह से हानि	२	२५१	कानून	६	१६०
कला	४	२१	काम	२	२७
कला के लिये प्रसिद्ध			काम-धर्म	८	१०६
ऐतिहासिक स्थान	८	२६२	काम का महत्त्व	८	१११

	भाग	पृष्ठ
काम के भेद	२	३०
काम को अधूरा मत रखो	८	१४१
काम-भोग	२	३७
कामान्धो के उदाहरण	२	४२
कामासक्त	२	३८
कायर	६	८१
कारण	८	१०८
कार्य की असिद्धि	८	१४३
कार्य की सिद्धि	७	१४२
काल	८	१
किन्तु शब्द की करामात	७	२९
कुदरत	८	७३
कुपात्रदान	६	१५८
कुपुत्र	८	३००
कुमार्या	२	९७
कुमित्र	२	३११
कुराज्य	९	
कुलटा स्त्री	२	९९
कुलीन पुरुष	६	९२
कुसगति का असर	६	२४
कुसगति से हानि	६	७५
कृतज्ञता और कृतज्ञ	६	१३२
कृतघ्न	६	१३६
कृपण	६	१६३
कृपक	९	२१६
कृपि-खेती	९	२१७
क्रान्ति और सघर्ष	९	१८९

	भाग	पृष्ठ
क्रोध	२	२१३
क्रोध की उत्पत्ति आदि	२	२१७
क्रोध की स्थिति	२	२२१
क्रोध के दुर्गुण	२	२१५
क्रोध-त्याग	२	२२२
क्रोध पर काबू पाने वाले महापुरुष	२	२२८
क्रोधी	२	२२६
क्षमा	२	१८५
क्षमा का उपदेश	२	१८८
क्षमा के उदाहरण	२	१९२
क्षमापना	२	२००
क्षमावान	२	१८९
ख्याति-प्रसिद्धि	३	५५
गतानुगतिक ससार	५	१६९
गप्पी और गप्पें	७	९१
गया वक्त वापस नही आता	८	४९
गरज	३	१४७
गरीब और गरीबी	७	९१
गरीबी के चित्र	६	११७
गर्भ	७	१७३
गर्भाधान के विषय मे		
विवेक	७	७६
गुण	६	९४
गुणग्राहक बनो।	६	१०६
गुणग्राही के अभाव मे	६	१११

	भाग	पृष्ठ
गुणज्ञ	६	१०३
गुणशून्य नाम	६	११४
गुणहीन	६	११२
गुणी	६	१०४
गुणी शिष्य के कर्त्तव्य	१	१००
गुणो का नाश एव प्रकाश	६	१०२
गुणो का महत्व	६	६६
गुणो मे दोष	६	१२३
गुप्तचर	६	१२४
गुरु (गुरु की व्याख्याए)	१	६६
गुरु-आज्ञा	१	७३
गुरु की आवश्यकता	१	७१
गुरु की आशातना	१	१०६
गुरु के छत्तीस गुण	१	७८
गुरुभक्ति की विधि	१	६२
गुरु-महिमा	१	६८
गुरुशिक्षा	१	७३
गुरुशिक्षा के समय		
विनीत-अविनीत शिष्यो का		
चिन्तन	१	१०८
गृहस्थ	८	२३६
गृहस्थ को शिक्षा	८	२३६
गोचरी के नियम	८	२६६
गोचरी के भेद	८	२६५
घर	८	२८८
घृणा	३	११७
चतुर	३	२८०

	भाग	पृष्ठ
चाय	६	८२
चारण जाति की		
विशेषताए	६	२१६
चारित्र	४	१६५
चारित्र का महत्त्व	४	१६७
चारित्र की रक्षा	४	१७२
चारित्र से लाभ	४	१७६
चिकित्सा	७	१६१
चिन्तन-मनन	४	८
चिन्ता	३	१०७
चिन्तानिषेध	३	११०
चिन्ता से हानि	३	१०८
चोर	१	२५८
चोर के विषय मे कहावते	१	२६२
चोरी	१	२५०
चोरी का त्याग	१	२५६
चोरी के कारण	१	२५२
चोरी के भेद	१	२५४
चोरी का सुधार	१	२६०
जगत को वश मे करने का		
उपाय	५	१८४
जगन्नाथ की प्रतीक्षा मे		
गगा	६	१६
जन्म	७	१६६
जन्मभूमि-प्रदेश	८	२६६
जन्म-मृत्यु एव काल		
मृत्यु	७	१६३

	भाग	पृष्ठ
जन्म-सम्बन्धी अनोखी प्रथाएँ	७	१६७
जप	१	६१
जय-पराजय	६	१६३
जरा-वृद्धावस्था	७	१६६
जागरण	३	१०२
जाग्रत और सुप्त	३	१०५
जाट	६	२२३
जातिप्रेम के उदाहरण	२	२६७
जादूगर एव उसके आश्चर्य	६	३०८
जामाता-जमाई	८	३१०
जितेन्द्रिय	६	२७८
जिह्वा	६	२८५
जीवन	७	२११
जीवन की अस्थिरता	७	२१४
जीवन के हेतु आदि	७	११३
जीवन से लाभ	७	२१६
जैनपर्व	६	२५६
जैनधर्म एव उसका महत्त्व	१	११३
जैन सिद्धान्तानुसार काल के भेद	८	३
ज्ञान (ज्ञान की उत्पत्ति आदि)	३	१७३
ज्ञान और क्रिया	३	२०५
ज्ञान का उपदेश	३	१८२
ज्ञान की आवश्यकता	३	१७६
ज्ञान की महिमा	३	१८०
ज्ञान के भेद	३	१८४
ज्ञान के साथ चारित्र आवश्यक	४	१७०
ज्ञानदान	६	१६२
ज्ञान से लाभ	३	१७८
ज्ञानी	३	१९०
ज्ञानी अज्ञानी मे अतर	३	२१५
ज्योतिष की जानकारी	६	३११
ज्योतिषियो की चमत्कारी बातें	६	३१८
ठग भक्त	१	५२
डाक एव तार	६	३२
ढोग एव ढोगी	६	१४८
तत्व	४	२६
तप	५	३४
तप के भेद	५	३२
तप कैसे और किस लिए	५	३०
तप से लाभ	५	७४
तमाखू (तमाखू का प्रचार)	६	७६
तमाखू का निषेध	६	८१
तमाखू के समर्थक	६	७५
तमाखू मे जहर	६	२६१
तापस	४	२३२
तितिक्षा-सहनशीलता	८	२
तीर्थ	६	

	भाग	पृष्ठ
तीर्थ, यज्ञ एव बाह्य क्रिया-काण्डो को महत्त्व देनेवालो के लिए	६	२८
तिर्यञ्च-ससार	५	२१७
तुच्छ व्यक्तियो मे अधिक अभिमान	३	२६
तू-मैं	३	७१
तृष्णा	२	१५३
तृष्णाविजय	७	१६०
तेजस्वी-पुरुष	६	७५
त्याग	६	१८७
त्याग के भेद	४	१७८
त्यागी	८	१८०
थोडी-सी देर से नुकसान	८	८७
दया	८	१८८
दया की महिमा	१	१६०
दयालु	१	१६३
दरिद्र	६	७१६
दरिद्रता	६	७७१
दमन	४	१०६
दाता	६	१३६
दाता के उदाहरण	६	१८२
दान	८	१४३
दान की प्रेरणा	८	१४६
दान की महिमा	८	१८४
दान के भेद	६	१८
दान मे विवेक	४	१८६

	भाग	पृष्ठ
दुःख	८	२१६
दुःख का महत्त्व	८	२२२
दुःख की अधिकता	८	२१७
दुःख के बाद सुख	८	२०४
दुःख के भेद	८	२२०
दुःखनाश के उपाय	८	२२५
दुःख मे दुःख	८	२१६
दुःख मे प्रभु का स्मरण	१	६४
दुःख रूप ससार	५	१८३
दुःखी	८	२२६
दुनिया की ताकत	५	१८३
दुनिया के बडे धनी	६	२१०
दुर्ग (किला)	६	१४०
दुर्जन-दुष्ट	६	१५
दुर्जनसग-परित्याग	६	२२
दुर्जनो का स्वभाव	६	१८
दुर्जनो के साथ व्यवहार	६	२६
दुर्जेय	६	२४०
दुर्भाग्य-पापोदय	८	१८२
दुर्लभ मनुष्यजन्म को हारा मन !	५	१५८
दुविधा	८	२२६
दुष्टो का सुधार		
दुर्दिन	६	७३
दुष्प्राप्य धन		१३७
स्वधर्मियो के उदाहरण		१५३
दुस्समाचार ... की आवाजे	६	२८१

	भाग	पृष्ठ
दृश्यमान विश्व मे पशु-पक्षी	५	२३१
दृष्टि के समान सृष्टि	६	१७६
दृष्टिदोष एव उसके		
आश्चर्य	६	१२४
देव-ईश्वर	१	९
देव-ससार	५	२००
देशभक्त	८	२६८
देश विशेष के दोष-गुण	८	२७०
देशी-विदेशी भाषा	७	१७
दैविक चमत्कार की विचित्र बातें	५	२०३
दो-दो काम नही होते	८	१३७
दोष	६	११६
द्यूत	९	४९
द्रव्य	४	१५०
द्रव्यपूजा का रहस्य	१	२१
द्वेष	२	२६७
धन	६	१७५
धन का उत्पादन	६	१८०
धन का उपयोग	६	१८१
धन का खजाना (अमेरिका मे)	६	१८३
धन का प्रभाव	६	१७८
धन की निन्दनीयता	९	१९१
धन की भूख	१	१७६
धन के विविध रूप	६	१८४
(क) रुपया	६	१८४
(ख) पैसा	६	१८६
(ग) चौदह रत्न	६	१८८
(घ) विभिन्न देशो की मुद्राए	६	१८९
धनवान	६	२०८
धन से धर्म नही	६	२३१
धनिको की स्थिति	६	२१२
धर्म	१	१०८
धर्म की आवश्यकता	१	१२३
धर्म की उत्पत्ति आदि	१	१३६
धर्म की प्रेरणा	१	११८
धर्म की महिमा	१	११४
धर्म के ठेकेदार	१	१५५
धर्म के फल	१	१२४
धर्म के भेद	१	१२८
धर्म के लक्षण	१	११०
धर्म के विविध प्रसग	१	१३८
धर्मज्ञ	१	१५०
धर्म-प्राप्ति के उपाय	१	१३३
धर्म समझने के वाद	१	१३४
धर्मी	१	१५१
धर्मोपदेश किसलिए ?	१	१५४
धर्मोपदेश के अधिकारी	१	१४५
धीर पुरुष	६	६८
धूर्त-दगाबाज	६	३१
धैर्य	६	७०
धोखा और धोखेबाज	१	२७१

	भाग	पृष्ठ
ध्याता (ध्यान करने वाला)	५	७६
ध्यान	५	६७
ध्यान के लाभ	५	७४
न करने योग्य काम	८	१५५
नमस्कार	३	१३
नय	३	१५
नम्रता	३	९
नम्रता के लाभ	३	१०
नय-रचना	४	१५४
नरक के दुःख	५	१९३
नरकगामी कौन	५	१९७
नरक में जाने के कारण	५	१९६
नरक-संसार	५	१९०
नहीं	९	२४१
नहीं के समान	९	२४३
नहीं में कुछ अच्छा	९	२४४
नाम की [illegible]	८	७६
नामधारी साधु	४	३३०
नास्तिक	४	१३१
नास्तिकों का खंडन	४	१३३
निस्पृहता	८	१९३
निष्काम-व्यवहार	८	१८१
निकृष्ट जीवन	७	२२०
निकृष्ट वैर	७	१५९
निद्रा	३	८४
निद्रा के भेद	३	१००
निद्रा-निषेध	३	८७
निद्रालु ओझा	७	११८
निद्रा से लाभ	३	८६
निन्दक	२	२६६
निन्दनीय कवि	४	४६
निन्दनीय हस्पताल	८	२४२
निन्दनीय-मूर्खजीवन	३	२९४
निन्दनीय स्वामी	९	१७०
निन्दा	२	२५८
निन्दानिषेध	२	२६०
निन्दा से समभाव	२	२६२
निधन	९	१९२
निरपकारी	६	१३५
निरपराध	९	२३९
निर्ग्रन्थ	४	२९४
निर्बल और निर्बलता	६	२१३
निर्बल	६	८८
निर्भीक कवि गंग	४	४९
निर्लज्ज	३	१६२
निश्चय-व्यवहार नय	४	१५५
नींद की अद्भुत करतूतें	२	२९४
नीतिमान और नैतिकता	९	२४५
नेता	९	१६५
नैतिक शिक्षाएँ	९	२४३
नौकर	९	१८०
नौकरी	९	१७९
न्याय	९	१९३

	भाग	पृष्ठ
दृश्यमान विश्व मे पशु-पक्षी	५	२३१
दृष्टि के समान सृष्टि	६	१७६
दृष्टिदोष एव उसके	६	१२४
	६	
आश्चर्य	१	२००
देव-ईश्वर	५	२६८
देव-ससार	८	२७०
देशभक्त	८	१७
देश विशेष के दोष-गुण	७	२०३
देशी-विदेशी भाषा	५	१३७
दैविक चमत्कार की विचित्र बातें	८	११६
दो-दो काम नही होते	६	४६
दोष	६	१५०
द्यूत	४	२१
द्रव्य	१	२६७
द्रव्यपूजा का रहस्य	२	१७५
द्वेष	६	१८०
धन	६	१८१
धन का उत्पादन	६	
धन का उपयोग	६	१८३
धन का खजाना (अमेरिका मे)	६	१७८
धन का प्रभाव	६	१९१
धन की निन्दनीयता	६	१७६
धन की भूख	१	१८४
धन के विविध रूप	६	१८४
(क) रुपया	६	

	भाग	पृष्ठ
(ख) पैसा	६	१८६
(ग) चौदह रत्न	६	१८८
(घ) विभिन्न देशो की	६	१८९
मुद्राए	६	२०८
धनवान	६	१३१
धन से धर्म नही	६	२१२
धनिको की स्थिति	६	१०८
धर्म	१	१२३
धर्म की आवश्यकता	१	१३६
धर्म की उत्पत्ति आदि	१	११८
धर्म की प्रेरणा	१	११४
धर्म की महिमा	१	१५
धर्म के ठेकेदार	१	१२४
धर्म के फल	१	१२८
धर्म के भेद	१	११०
धर्म के लक्षण	१	१३८
धर्म के विविध प्रसग	१	१५
धर्मज्ञ	१	१
धर्म-प्राप्ति के उपाय	१	
धर्म समझने के बाद	१	
धर्मी	१	
धर्मोपदेश किसलिए ?	१	
धर्मोपदेश के अधिकारी	१	१४५
धीर पुरुष	१	६८
धूर्त-दगाबाज	६	३१
धैर्य	६	७०
धोखा और धोखेबाज	६	२७१
	१	

	भाग	पृष्ठ
ध्याता (ध्यान करने वाला)	५	७६
ध्यान	५	६७
ध्यान से लाभ	५	७४
न करने योग्य काम	८	११५
नमस्कार	३	१३
नम्र	३	११
नम्रता	३	६
नम्रता से लाभ	३	१०
नय-प्रमाण	४	१५४
नरक के दु ख	५	१६३
नरकगामी कौन	५	१६७
नरक मे जाने के कारण	५	१६६
नरक-ससार	५	१६०
नही	६	२४१
नही के समान	६	२४३
नही से कुछ अच्छा	६	२४४
नाम की सामायिक	५	२६
नामधारी साधु	४	२३०
नास्तिक	४	१११
नास्तिको का कथन	४	११३
नि स्पृहता	२	१५१
निकम्मा-बेकार	८	१२१
निकृष्ट जीवन	७	२२०
निकृष्ट वैद्य	७	१५६
निद्रा	३	८४
निद्रा के भेद	३	१००
निद्रा-निषेध	३	८७
निद्रालु श्रोता	७	११८
निद्रा से लाभ	३	८६
निन्दक	२	२६६
निन्दनीय कवि	४	४६
निन्दनीय गृहस्थाश्रम	८	२४२
निन्दनीय-मूर्खजीवन	३	२६४
निन्दनीय स्वामी	६	१७०
निन्दा	२	२५८
निन्दानिषेध	२	२६०
निन्दा मे समभाव	२	२६२
नियम	६	१६२
निरुपकारी	६	१३५
निरुपाय	६	२३६
निर्ग्रन्थ	४	२६४
निर्धन और निर्धनता	६	२१३
निर्बल	६	८८
निर्भीक कवि गग	४	४६
निर्लज्ज	३	१४
निश्चय-व्यवहार नय	४	१५
नीद की अद्भुत करतूते	३	२६
नीतिमान और नैतिकता	६	२४
नेता	६	१६
नैतिक शिक्षाएँ	६	२४
नौकर	६	१८
नौकरी	६	१७
न्याय	६	१६

	भाग	पृष्ठ
	६	१६६
न्यायकर्त्ता के उदाहरण	६	१६५
न्यायार्जित धन	६	२३३
न्यूनाधिकता	६	१६७
पच	६	२७४
पडित	३	२७६
पडितो की विशेषता	३	८५
पति का सर्वस्व पत्नी	२	७०
पति-पत्नी का सहवास अनियमित न हो	२	६६
पति-पत्नी की एकता	२	८७
पतिव्रता एव साध्वी स्त्री	२	६३
पतिव्रता के लिये पति सर्वस्व	२	१५४
पथ्य	७	२२७
परदुख से दुखी	८	१२१
पर-दोष	६	७८
परस्त्रीगमन-निंदा एव निषेध	२	८०
परस्त्रीगामी	२	८२
परस्त्री-त्यागी	२	१८४
पराधीनता	६	१३२
परिग्रह	२	१३५
परिग्रह के प्रकार	२	४६
परित्याग करने योग वाणी	७	१७०
परिवर्तनशील ससार	५	८४
परिश्रम की व्यर्थता	८	५७
परिस्थिति	८	

	भाग	पृष्ठ
	४	६६
परीक्षा	४	१००
परीक्षा आवश्यक	४	१०४
परीक्षा का समय	४	१०१
परीक्षाविधि	४	१२८
परोपकार	६	१३३
परोपकारी	६	२७८
परोपदेश-कुशल पण्डित	३	२५८
पर्व-त्योहार	६	१६०
पात्र-कुपात्र	६	१३८
पानी	५	१६०
पाप	१	१७०
पाप का पश्चात्ताप	१	१७२
पाप के प्रकार	१	१६२
पाप को छिपाओ मत।	१	१६८
पाप निवृत्ति का उपदेश	१	१७४
पापबन्ध	१	१६६
पापी	१	३३
पापी साधु	४	२८१
पिता	८	२५६
पिशुन (चुगल)	२	२६४
पुण्यो से पुत्रप्राप्ति	८	२८७
पुत्र	८	२
पुत्र के प्रति माता-पिता का कर्त्तव्य	८	२६५
पुत्र के विना	८	३०६
पुत्री (कन्या)	८	३०७
पुत्री की विदाई	८	

	भाग	पृष्ठ
पुत्री के योग्य-अयोग्यवर	८	३०९
पुत्रो के प्रकार	८	३०४
पुत्रो के लिये अनर्थ	८	२९६
पुनर्जन्म की वास्तविकता	७	१६८
पुनर्विवाह	२	६५
पुराणानुसार-विष्णु के दस अवतार	१	१५
पुरुषार्थ	८	८३
पुस्तक (शास्त्र)	४	७८
पुस्तक-प्रकाशन	४	८७
पुस्तको का चयन	४	८०
पूजा	१	१९
पूजा के आठ फूल	१	२०
पेट	५	१३४
पैशुन्य (चुगली)	२	२५५
पौराणिक कालगणना पद्धति	८	८
पौषध	५	२८
प्रकृति	८	६७
प्रकृति नही बदलती	८	६९
प्रकीर्णक	९	३२०
प्रजा	९	१२५
प्रत्याख्यान	४	१८१
प्रतिमा-निषेध	१	१६
प्रतिमापूजा-निषेध	१	१७
प्रत्युपकार (उपकार का बदला)	६	१३०
प्रभावशाली वक्ता	७	७१
प्रभु-आज्ञा	१	२८
प्रभु-भजन	१	५७
प्रमाद (आलस्य)	३	७६
प्रमाद के भेद	३	७८
प्रमाद-त्याग	३	७९
प्रमादी (आलसी)	३	८१
प्रमादी के विषय मे कहावतें	३	८३
प्रशसा	३	५०
प्रशसनीय गृहस्थाश्रम	८	२४१
प्रसन्न	३	१६६
प्रसन्नता (खुशमिजाजी)	३	१६५
प्राचीन एव आधुनिक कवि	४	५१
प्राचीन युद्ध के चित्र	९	१५५
प्रामाणिक ग्रन्थ	४	८३
प्रायश्चित	५	४०
प्रायश्चित के भेद	५	४२
प्रेम	२	२८२
प्रेम का नाश	२	२९०
प्रेम का निर्वाह	२	२८८
प्रेम की प्रेरणा	२	२९२
प्रेम की महिमा	२	२८६
प्रेम के भेद	२	२९१
प्रेम-बन्धन	२	२८७
प्रेमी	२	२९४
फकीर	४	२६२
बडा आदमी और बडप्पन	९	९०
बल (पराक्रम)	६	९०

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा

	भाग	पृष्ठ
बल (सेना)	९	१४२
बलवान व्यक्ति	६	८४
बहू	८	३१२
बात	७	८६
बात का निर्वाह	७	६६
बात करते समय सावधानी		६३
बालक	७	१७३
बालको की उच्छृखलता	७	१६१
बालको की सरलता	७	१८८
बालको के गुण और दोष	७	
बालको के निर्माण की कुछ विधियाँ	७	१८०
बालको को बिगाडने एव सुधारने वाले अभिभावक	७	१८५
बिगाड	९	२३७
बींद-बींदणी की अद्भुत जोडी	२	६८
बुद्धि एव उसके फल और गुण	३	२५८
बुद्धि का महत्त्व	२	२५२
बुद्धि के भेद	३	२५४
बुद्धिमत्ता	३	२६२
बुद्धिमान्	२	२६४
बुद्धिमान् एव मूर्ख मे अन्तर	३	२७२

	भाग	पृष्ठ
बुद्धिमानो के कर्त्तव्य	३	२७०
बुराई-दुर्जनता	६	४१
बुरे लेखक	४	७०
बेईमानी के चित्र	१	२३५
बोलने योग्य वाणी	७	३८
ब्याज	६	२३४
ब्रह्मचर्य	२	१
ब्रह्मचर्य की दुष्करता	२	३
ब्रह्मचर्य की नव-गुप्तियाँ (बाडें)	२	१५
ब्रह्मचर्य की महिमा	२	४
ब्रह्मचर्य के फल	२	६
ब्रह्मचर्य सम्बन्धी उदाहरण	२	१८
ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी उपदेश	२	७
ब्रह्मचारी	२	१०
ब्रह्मचारी को शिक्षा	२	१२
ब्राह्मण	६	१
ब्राह्मण के अनेक रूप	६	६
ब्राह्मण के लक्षण	६	४
ब्राह्मण के विपय मे विशेष ज्ञातव्य	६	८
भक्त	१	३६
भक्ति का स्वरूप	१	३१
भक्ति की महिमा	१	३३
भक्ति के भेद	१	३४
भक्ति के विषय मे स्फुट विचार	१	३६

भय
भय आवश्यक
भयभीत
भयसम्बन्धी ९
भयसम्बन्धी
भलाई (सज्ज
भलाई-बुराई
भवितव्यता (नियति)
भवितव्यत
भविष्य
भाग्य
भा

	भाग	पृष्ठ
भक्तो के लिये शिक्षा	१	४७
भक्तो के वश भगवान	१	४६
भगवान का निवास	१	२५
भजन बिना जीवन सूना	१	६३
भयकर भूले	३	१५८
भय	३	१२२
भय आवश्यक	३	१२४
भयभीत	३	१२७
भयसम्बन्धी कहावते	३	१२८
भयसम्बन्धी दृष्टान्त	३	१२६
भलाई (सज्जनता)	६	३८
भलाई-बुराई की अमरता	६	४४
भवितव्यता (होनहार-नियति)	८	१८०
भवितव्यता के दृष्टान्त	८	२६७
भविष्य की सूचनाएँ	८	२७
भाग्यवान	८	१८०
भाग्यहीन	८	१८५
भाग्यानुसार लाभ	८	१७३
भारत	५	३०५
भारत की आबादी	५	३०५
भारत गणराज्य के अन्तरवर्ती राज्य	५	३०७
भारत की जन-संख्या का आयु विवरण	५	३११
भारत मे बे घर और घर वाले	५	३१२
भारत मे पशु धन	५	३१३
भारत मे दूध	५	३१३
भारतीय इतिहास की प्रमुख तिथियाँ	५	३१५
भारत मे साक्षरता	५	३१६
भारत की बडी चीजें	५	३२१
भारत की कतिपय विशेष ज्ञातव्य बातें	५	३२३
सूर्योदय-सूर्यास्त सारणी	५	३२६
ससार के प्रमुख नगरो के समय एव दूरिया	५	३२८
भारत की राजनैतिक स्थिति	६	८५
भारत के कुछ दर्शनीय स्थान	८	२५७
भारत मे विदेशी दूतावास एव उच्चायुक्त	६	१२१
भावना	७	१
भावनाकी प्रमुखता	७	३
भावना के भेद	७	७
भावनानुसार फल	७	४
भावना मे लाभ	७	६
भाषण	७	८७
भाषा (वाणी)	७	१६
भाषा के प्रकार	७	२१
भिन्नता	२	३२८
भिक्षु	४	२५०

बल (सेना)
बलवान व्यक्ति
बहू
बात
बात का निर्वाह
बात करते समय
सावधानी
बालक
बालको की उच्छृंखलता
बालको की सरलता
बालको के गुण और दोष
बालको के निर्माण की
कुछ विधियाँ
बालको को बिगाडने
एव सुधारने वाले
अभिभावक
बिगाड
बीद-बीदणी की अद्भुत
जोडी
बुद्धि एव उसके फल
और गुण
बुद्धि का महत्त्व
बुद्धि के भेद
बुद्धिमत्ता
बुद्धिमान्
बुद्धिमान् एव मूर्ख मे
अन्तर

भाग पृष्ठ
६ १४२
६ ८४
६ ३१२
८ ८६
७ ६६
७
७ ९३
७ १७३
७ १९१
७ १८८
७ १८०
७ १८५
६ २३७
६८
२
२५८
३ २५२
२ २५४
३ २६२
३ २६४
३
३ २७२

बुद्धिमानो के कर्त्तव्य
बुराई-दुर्जनता
बुरे लेखक
बेईमानी के चित्र
बोलने योग्य वाणी
ब्याज
ब्रह्मचर्य
ब्रह्मचर्य की दुष्करता
ब्रह्मचर्य की नव-गुप्तियाँ
(बाडें)
ब्रह्मचर्य की महिमा
ब्रह्मचर्य के फल
ब्रह्मचर्य सम्बन्धी उदाहरण
ब्रह्मचर्य सम्बन्धी उपदेश
ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी
ब्रह्मचारी
ब्रह्मचारी को शिक्षा
ब्राह्मण
ब्राह्मण के अनेक रूप
ब्राह्मण के लक्षण
ब्राह्मण के विषय मे
विशेष ज्ञातव्य
भक्त
भक्ति का स्वरूप
भक्ति की महिमा
भक्ति के भेद
भक्ति के विषय मे
स्फुट विचार

भाग पृष्ठ
३ २७०
३ ४
६ ७०
४ २३५
१ ३८
७ २३४
६ १
२ ३
२
२ १५
२ ७
२
२ १८
२ ७
२ १०
२ १२
२
६ ६
६ ४
६
८
६ ३६
१ ३१
१ ३३
१ ३४
१
१ ३६

	भाग	पृष्ठ
भक्तो के लिये शिक्षा	१	४७
भक्तो के वश भगवान	१	४९
भगवान का निवास	१	२५
भजन बिना जीवन सूना	१	६३
भयकर भूले	३	१५८
भय	३	१२२
भय आवश्यक	३	१२४
भयभीत	३	१२७
भयसम्बन्धी कहावतें	३	१२८
भयसम्बन्धी दृष्टान्त	३	१२९
भलाई (सज्जनता)	६	३८
भलाई-बुराई की अमरता	६	४४
भवितव्यता (होनहार-नियति)	८	१८०
भवितव्यता के दृष्टान्त	८	२६७
भविष्य की सूचनाएं	८	२७
भाग्यवान	८	१८०
भाग्यहीन	८	१८५
भाग्यानुसार लाभ	८	१७३
भारत	५	३०५
भारत की आबादी	५	३०७
भारत गणराज्य के अन्तरवर्ती राज्य	५	३०८
भारत की जन-संख्या का आयु विवरण	५	३११
भारत में के घर और घर वाले	५	३१८

	भाग	पृष्ठ
भारत मे पशु धन	५	३१३
भारत मे दूध	५	३१३
भारतीय इतिहास की प्रमुख तिथियाँ	५	३१५
भारत मे साक्षरता	५	३१९
भारत की बडी चीजे	५	३२१
भारत की कतिपय विशेष ज्ञातव्य बातें	५	३२३
सूर्योदय-सूर्यास्त सारणी	५	३२६
ससार के प्रमुख नगरो के समय एव दूरिया	५	३२८
भारत की राजनैतिक स्थिति	९	८५
भारत के कुछ दर्शनीय स्थान	८	२५७
भारत मे विदेशी दूतावास एव उच्चायुक्त	९	१२१
भावना	७	१
भावनाकी प्रमुखता	७	३
भावना के भेद	७	५
भावनानुसार फल	७	४
भावना से लाभ	-	६
भाषण	६	८७
भाषा (वाणी)	५	१६
भाषा के प्रकार	५	३१
भिन्नता	८	३-
भिक्षु	४	

	भाग	पृष्ठ
भूख	५	१२८
भूख मे स्वाद	५	१३०
भूखा	५	१३२
भूखा क्या नही करता	५	१३३
भूल	३	१४९
भूल के विषय मे विविध	३	१५६
भूल को स्वीकार करना	३	१५४
कठिन	३	१५१
भूल पर हास्य	३	२५२
भूल सुधार	२	३४
भोग	५	८४
भोजन	५	१०१
भोजन का ध्येय	५	१०३
भोजन का समय	५	१०८
भोजन की मात्रा	५	८५
भोजन की विधि	५	१०२
भोजन की शुद्धि	५	१०७
भोजन के बाद	५	९१
भोजन के भेद	५	१०५
भोजन के समय दान	५	८८
भोजन कैसा हो ?	५	९५
भोजन मे आवश्यक तत्त्व	५	३१७
भ्राता (भाई)	८	१
मगलाचरण	१	७५
मदकषायी-तीव्रकषायी	३	१४५
मतलब	३	६५
मद्य (मद्यनिषेध)	६	

	भाग	पृष्ठ
मद्यपान की मात्रा	६	६७
मद्यपान के दुर्गुण	६	८६
मन शुद्धि	६	२९९
मन शुद्धि के अभाव मे	६	३०२
मन शुद्धि दुष्कर	६	३०१
मन शुद्धि के विना जलादि		
से आत्मशुद्धि नही	६	२२
मन	६	२८८
मन के विषय	६	२८८
मन के गुण	६	२८९
मन की पहचान	६	२८९
मन का वेग	६	२८९
मन की ताकत	६	२९०
मन का तार	६	३१०
मन का स्वभाव	६	२९१
मन की उपमाएँ	६	३१३
मन की मुख्यता	६	२९४
मन के आश्रित वन्ध-	६	२९२
मोक्षादि		
मन के पीछे सुख-दुःख	८	२१३
मन के विना कुछ नही	६	२९७
मन के विषय मे विविध	६	३१६
मन को शिक्षा	६	३०३
मनचाहा काम	८	१३५
मनुष्य का कर्तव्य	५	२३७
मनुष्य का महत्त्व	५	२४०
मनुष्य का स्वभाव	५	२३५

	भाग	पृष्ठ
मनुष्य की दस अवस्थाए	५	२४४
मनुष्य के प्रकार	५	२४६
मनुष्य के लिये शिक्षाए	५	२३८
मनुष्य के विषय मे ज्ञातव्य बातें	५	२७५
मनुष्य जन्म की दुर्लभता	५	२५६
मनुष्य जन्म की प्राप्ति	५	२५३
मनुष्य जन्म की श्रेष्ठता	५	२५४
मनुष्यलोक	५	२७७
मनुष्य-ससार	५	२३२
मनोनिग्रह	६	३०४
मनोनिग्रह के मार्ग	६	३०६
मनोनिग्रह से लाभ	६	३०८
मन्त्री कितने हो ?	६	११४
ममता	२	१६४
ममता और समता	२	१६६
ममता के विषय मे कहावते	२	१६७
मरण	७	२३४
मरण के भेद आदि	७	२४८
मरते समय भी निर्भय	७	२४१
मरने के बाद	७	२४४
मर्मघातक वाणी	७	५०
महत् पुरुषो का मन मान	३	४१
महत्वपूर्ण शिक्षाए	३	२४५
महान् कवि	४	५२
महान् हु न	८	२१८

	भाग	पृष्ठ
महापाप	१	१६४
महापुरुष-महात्मा	६	४९
महापुरुषो का पराक्रम	६	५३
महापुरुषो का सम्पर्क	६	५८
महापुरुषो के विषय मे विविध	६	५५
महाव्रत	४	२०२
मागलिक तत्त्व	१	२
मागलिक पद्य	१	४
मांस	९	५१
मास की ताकत कम	९	५६
मासत्याग का महत्त्व	९	५५
मास-निषेध	९	५३
मास भक्षको के लिये ध्यान देने योग्य बातें-	९	६२
मासाहार से होने वाले भयकर रोग	९	५७
माता	८	२७७
माता-पिता	८	२८२
माता-पिता के अनुरूप पुत्र	८	२९१
मानत्याग	३	२४
मानवता	५	२६०
मानस तीर्थ	९	१७
माया (कपट)	३	६३
मायात्याग का उपदेश	३	६७
मायावी व्यक्ति	३	६५
मित भोजन	५	२१०

	भाग	पृष्ठ
मित्र	२	३०३
मित्र की आवश्यकता	२	३१०
मित्र के गुण-दोष	२	३०६
मित्रता	२	३१६
मित्रता की प्रेरणा	२	३२१
मित्रता न करने योग्य व्यक्ति	२	३२०
मित्र बनाने के विषय में	२	३१३
मिथ्यात्व के भेद	४	१४४
मिथ्यादर्शन	४	१४३
मिथ्यादृष्टि	४	१४७
मिलावट	४	२६४
मीठी वाणी	१	३३
मुक्त आत्मा	७	१५२
मुक्ति के सुख	५	१५६
मुनि	५	२४३
मुफ्त का खानेवाले	४	११६
मुस्लिमपर्व	५	२६८
मूर्ख	६	२८७
मूर्ख का संग त्याज्य	३	२६५
मूर्ख को उपदेश	३	२६१
मूर्खता	३	२६७
मूर्खता के उदाहरण	३	३०२
मूर्ख वक्ता	३	७८
मूर्ख श्रोता	७	१०६
मूर्खों की मान्यता	७	२६३
मृत्यु का भय	३	२४०

	भाग	पृष्ठ
मृत्यु की अप्रियता	७	२३८
मृत्यु की निर्दयता	७	२३७
मृत्यु-विज्ञान	७	२३६
मेहमान (पाहुना)	८	२४७
मोक्ष (मुक्ति)	५	१४२
मोक्ष की परिभाषाएँ	५	१४३
मोक्ष के साधन	५	१४८
मोक्षगामी कौन?	५	१५०
मोक्षमार्ग	५	१४७
मोक्षस्थान	५	१४५
मोह	२	२६८
मोहक्षय	२	३००
मौन	७	६८
मौन की प्रेरणा	७	६६
मौन की महिमा	७	१०१
मौन से लाभ	७	१०३
यज्ञ	६	३०
यथाराजा तथा प्रजा	६	१२७
यथाशक्ति काम	८	१२७
यश कीर्ति	३	५८
यश के भूखे वक्ता	७	७६
याचक	६	१६
याचना	५	६७६
युक्ति एवं न्याय से ग्रंथों की प्रामाणिकता	४	८५
युद्ध (युद्धनिषेध)	६	१४८
युद्ध का प्रोत्साहन	६	१५३

त्रियों का
युद्ध के कतिपय
युद्ध से पहले बातें
योग
योगमहिमा
योगियों के
योगी
योग्य श्रोता
यौवन
यौवन का अन
रसिक श्रोताओं में कवि
राक्षसी खुराक
राग
राग-द्वेष
राग-द्वेष के
राज काम
राजगुरु
राजदूत
राजनी
राज
रा

	भाग	पृष्ठ
युद्ध के कतिपय नियम	६	१५२
युद्ध मे पहले विचारणीय बातें	६	१५०
योग	४	२०६
योगमहिमा	४	२०८
योगियो के चमत्कार	४	२१५
योगी	४	२११
योग्य श्रोता	७	११२
यौवन	७	१६६
यौवन का अनर्थकारित्व	७	१६८
रसिक श्रोताओ के अभाव मे कवि	४	४८
राक्षसी खुराक वाले व्यक्ति	५	११७
राग	२	२७०
राग-द्वेष	२	२७४
राग-द्वेष के क्षय से लाभ	२	२७६
राज कर्मचारी	६	१२३
राजगुरु	६	११२
राजदूत	६	११७
राजनीति	६	८३
राजनीतिज्ञ	६	६३
राजसेवक	६	१७७
राजसेवा	६	१७६
राजा (राजा की महिमा)	६	६५
राजा की कमिया	६	१०३
राजा के धर्म (कर्त्तव्य)	६	१००
राजाओ के प्रकार	६	१०८
राज्य	६	१३०
राज्यकोष (खजाना)	६	१४१
राज्य-मन्त्री	६	११३
रात्रि भोजन के त्याग से लाभ	५	१२७
रात्रिभोजन-निषेध	५	१२१
रात्रिभोजन से हानि	५	१२५
रामकृष्णपरमहस का अदभुत अभ्यास	८	१०७
रामायण मे प्रयुक्त किये जाने वाले भाषाश्लोक	६	३३४
राष्ट्रपतिपद के विषय में चिन्तन	६	६४
राष्ट्र (देश)	६	१३६
रासायनिक तुलनात्मक चार्ट	५	६६
रिवाज (रूढि)	३	१६२
रिश्वत	१	१३६
रिश्वत के बयान	१	२६७
रिश्वत न लेनेवाले विरले	१	२७०
रिश्वती राज्यकर्मचारी	१	२६८
रेलगाडी एव मोटरें	६	३२४
रोग	७	१४३
रोग के प्रकार	७	१४५
रोगी	७	१४७
रोगी की सेवा	७	१४६
रोदन	३	११८
लदन मे सवा लाख वेश्याएँ	२	१२७

	भाग	पृष्ठ
भूगोल के रिकार्ड	५	२९८
ससार के बडे शहर और उनकी आबादी	५	३०६
वर्तमान विश्व के निरक्षर और अधो की सख्या	५	३०२
विश्व के प्रलयकारी भूकम्प	५	३०३
विश्वास	४	१३६
विश्वास के अयोग्य	४	१३९
विश्वासघात	४	१४२
विश्राम	८	९०
विषय-वासना	२	२३
वृद्ध	७	२०२
वृद्ध ऐसा चिंतन करें ?	७	२०९
वृद्धो का सम्मान	७	२०५
वृद्धो के प्रकार	७	२०७
वृद्धि	९	२३७
वेश्या-निन्दा	२	१२४
वैज्ञानिको के मतानुसार पृथ्वी आदि का जन्म-काल	५	२७९
वैदिक सस्कृति मे ब्राह्मण और शूद्र	९	९
वैद्य	७	१५५
वैद्यो के प्रकार	७	१५७
वैयावृत्य	५	६५
वैर	२	२३०
वैर के बदले	२	२३९

	भाग	पृष्ठ
वैर-त्याग	२	२३२
वैराग्य	३	१६८
वैराग्य की महिमा	३	१६९
वैराग्यवान	३	१७१
वैरी	२	२३४
वैरी के साथ व्यवहार	२	२३६
वैवाहिक रीति-रिवाज का रहस्य	२	५८
वैश्य (वणिक्)	९	२०२
व्यय	६	२२५
व्यर्थ अभिमान	३	२७
व्यर्थ काम	८	११८
व्यवहार	८	१४८
व्यवहारिक एव आध्यात्मिक दृष्टि से वस्तुओ की शुद्धि	९	२७
व्यसन	९	४६
व्यापारी	९	२१३
व्रत	४	१९९
शकुन	९	२९९
शकुनज्ञ एव उनकी आश्चर्यजनक बातें	९	३०५
शत्रु के रूप मे पुत्र	८	३०२
शम (शान्ति)	२	२०५
शराबियो की दुर्दशा	९	७२
शरीर	७	११९
शरीर का महत्त्व	७	१२९
शरीर का वेग		१३४

शरीर का व्यायाम
शरीर की अनित्यता
शरीर की उपमाएं
शरीर की निंदनीयता
शरीर के अन्दर
शस्त्र
शान्ति
शान्ति की महिमा
शारीरिक दोष पर आधारित अ
शासक
शासन
शिकार
शिक्षा
शिक्षा के योग्य पात्र
शिक्षाग्रहण
शिक्षा-दान
शिष्टों और
मित्र
शिष्यों

	भाग	पृष्ठ
शरीर का व्यायाम	७	१३२
शरीर की अनित्यता	७	१२८
शरीर की उपमाएँ	७	१३१
शरीर की निंदनीयता	७	१३०
शरीर के अन्दर	७	१२२
शस्त्र	६	
शान्ति	२	२०९
शान्ति की महिमा	२	२०८
शारीरिक दोष पर		१४५
आधारित अधमता	६	६७
शासक	६	१८६
शासन	६	१८७
शिकार	१	१९९
शिक्षा	३	२३६
शिक्षा के योग्य-अयोग्य पात्र	३	२४३
शिक्षाग्रहण	३	२३८
शिक्षा-दान	३	२४२
शिष्टो और दुष्टो की मित्रता	२	३१८
शिष्यो को आचार्य का उपदेश	१	८५
शिष्यो पर अनुशासन करते समय	१	१०२
शील	४	१९६
शुद्धि-शौच	६	२६
शुभाशुभशकुन	६	३०१

	भाग	पृष्ठ
शूद्र के विषय मे विशेष	६	११
शूरता और कायरता	६	८३
शूर-वीर पुरुष	६	७८
शोक	३	१११
शोक-निषेध	३	११४
श्रद्धा	४	१२७
श्रद्धावान	४	१२९
श्रम	८	८५
श्रम की कमाई	८	८७
श्रमण	४	२५२
श्रवण (सुनना)	७	१०४
श्रवण का असर	७	१०६
श्राद्ध	६	४०
श्राद्ध आदि मे मास का विधान और निषेध	६	४४
श्राद्ध के योग्य-अयोग्य ब्राह्मण	६	४२
श्राद्ध को न मानने वालो का मतव्य	६	४३
श्रावक (श्रावक की पूर्व भूमिका)	५	१
श्रावक का स्वरूप	५	६
श्रावक के गुण	५	८
श्रावक के विषय मे विविध	५	१५
श्रावक धर्म	५	१२
श्रेष्ठ	६	२२२

	भाग	पृष्ठ
श्रेष्ठ जीवन	७	२१७
श्रेष्ठ राजा	६	६७
श्रेष्ठ वैद्य	७	१५६
श्रोता	७	११०
सक्षिप्तवाणी	७	१५
सख्या	६	३२७
सगठन	२	३२२
सगति के अनुसार गुण-दोष	६	४५
सग्रह	६	२३२
सत	४	२६४
सतान	८	२८४
सतो का सताप	४	२८६
सतोष	२	१६८
सतोष का उपदेश	२	१७२
सतोष से लाभ	७	१७१
सतोषी	२	१७४
सयम	४	२२२
सयम (दीक्षा) का समय आदि	४	२२९
सयम की दुष्करता	४	२२६
सयम के भेद	४	२३४
सयम मे सुख-दुःख	४	२२८
सयम से भ्रष्ट होने के अठारह स्थान	४	२३१
सयम से लाभ	४	२२४
सयोग के साथ वियोग	८	२३३

	भाग	पृष्ठ
सयोजक	४	६५
सशय	४	१३४
ससार	५	१५७
ससार का पागलपन	५	१७१
ससार का स्वभाव	५	१७४
ससार का स्वरूप	५	१५६
ससार की विशालता	५	१८६
ससार के भेद	५	१६१
ससार को उपमाएँ	५	१८०
सच्चाई के उदाहरण	५	२२६
सच्चा धर्माचरण	१	१४१
सच्चे भक्त	१	४४
सच्चे व्यक्ति	१	२२२
सच्चे व्यक्ति का चिन्तन	१	२२३
सच्चो का सम्मान	१	२२७
सज्जन	१	१
सज्जन-दुर्जन का अन्तर	६	३४
सज्जनो का स्वभाव	६	५
सज्जनो के स्वभाव की	६	८
निश्चलता	६	९६
सती-प्रथा	२	१८८
सत्ता	६	२०१
सत्य	१	२१२
सत्य का उपदेश	१	२०८
सत्य की महिमा	१	२१३
सत्य के पालन मे कठिनाई	१	२०६
सत्य के प्रकार	१	

	भाग	पृष्ठ
सत्य के विषय मे कहावतें	१	२२८
सत्य के विषय मे विविध	१	२१४
सत्य वचन	१	२१६
सत्य वचन की प्रेरणा	१	२१८
सत्यवादी	१	२२४
सत्सगति	६	१०
सत्सगति का प्रभाव	६	११
सद्भाग्य-पुण्योदय	८	१७६
सफलता	८	९०
सबको दु ख	५	१६६
सभ्यता	४	२०४
समता	२	२११
समय	८	३४
समय का सदुपयोग	८	३७
समय की कीमत	८	३५
समयानुसार काम	८	४०
समयोपयोगी वाणी	७	४२
समर्थ-पुरुष	६	७७
समाधि	५	८०
समानता (बराबर)	९	२२९
सम्मति	४	१२
सम्मान की इच्छा का निषेध	३	४६
सम्यक्त्व का महत्व	४	१२०
सम्यक्त्व की दुर्लभता	४	११८
सम्यक्त्व से लाभ	४	११९
सम्यग्ज्ञान	३	१८६
सम्यग्दर्शन (सम्यक्त्व)	४	११४

	भाग	पृष्ठ
सम्यग्दृष्टि	४	१२३
सरल एव कुटिल व्यक्ति	३	६२
सलाह के विषय मे विविध	४	१५
सलाह लेना जरूरी	४	१४
ससुराल	८	३११
सहज एव सच्चा प्रेम	८	२८५
सहयोग	८	२३४
सहवास के लिये निषिद्ध समय एव स्थान	२	७१
सहारा-सहानुभूति	२	२३५
सासारिक सुख	८	२०१
सात व्यसन और उनसे हानि	९	४७
साधना	४	२४८
साधु	४	२३९
साधुओ का निवासस्थान	४	३०८
साधुओ का विहार	४	३१४
साधुओ की गोचरी	४	२९१
साधुओ के गुण	४	२८५
साधुओ को शिक्षा	४	२२८
साधुओ के पात्र	४	३१२
साधुओ के बारह सभोग और उनका विच्छेद	४	३२७
साधुओ के लिये कल्प अकल्प	४	३२२
साधुओ के वस्त्र	४	३१०
साधुओ के सुख	३	३२५

	भाग	पृष्ठ
साधु का आहार	४	३०२
साधु की भाषा	४	३१७
साधु-सगति	४	२८६
साधु-दर्शन	४	२८७
सामान्य नीति	४	२५३
सामायिक	६	१९
सामायिक का प्रभाव	५	२५
सामायिक के विषय मे विविध	५	७२
सावद्य सत्य का निषेध	५	२२०
सावधानी और असावधानी	१	६३
साहस	८	६७
साहित्य	८	६२
सिगरेट	४	७७
सिद्ध भगवान	६	२५३
सिद्धान्त	५	१६३
सुख	४	१६७
सुख के भेद	८	२०६
सुख के स्रोत	८	२०८
सुख-दु ख	८	२१२
सुख-दुख का जोडा	८	२१४
सुख-दु खमय ससार	८	१६७
सुख मे धर्म की विस्मृति	५	२०३
सुखी	८	२०६
सुपात्रदान	८	१५६
सुपुत्र	६	२६८
सुपुत्र-कुपुत्र	८	३०३
सुबुद्धि एव कुबुद्धि	८	२५७
	३	

	भाग	पृष्ठ
सुभिक्ष-दुर्भिक्ष के लक्षण	८	१२
सुभार्या	२	६१
सुभाषित-सूक्ति	७	३६
सुमित्र एव सच्चामित्र	२	३०७
सुयोग्य आचार्य	१	७९
सुराज्य [अच्छी सरकार]	६	१३१
सुषम-दु षमकाल के लक्षण		१०
सुस्त्री-प्रशसा	८	१४४
सेवक	१	१७१
सेवक की दयनीय दशा	६	१७३
सेवा	६	१७५
सोनार	६	२२२
सोने के समय	६	८९
सोलह सस्कार	३	१७५
स्त्रियो की सबलता	७	११२
स्त्री की निरकुशता	२	११०
स्त्री के दोष	२	१०४
स्त्री के लिये निकृष्ट उपमाएँ	२	१०६
स्त्री के विषय मे कहावतें	२	१२२
स्त्री-धन	२	१२१
स्त्रीनाश के कारण	२	११९
स्त्री-सम्मान	२	११७
स्त्री-स्वभाव	२	१०२
स्थविर	४	२५८
स्थान	८	२५१

	भाग	पृष्ठ		भाग	पृष्ठ
स्थान-त्याग	८	२५५	स्वाधीन (स्वतन्त्र)	६	१८१
स्थान-भ्रष्ट	८	२५३	स्वाधीनता	६	१८३
स्नान	६	१२	स्वाध्याय	४	७३
स्नान-निषेध	६	१४	स्वाध्याय-ध्यान की प्रेरणा	५	७८
स्नेह	२	२७६	स्वामी	६	१६७
स्नेहत्याग	२	२८१	स्वामी का प्रसाद	६	१६६
स्याद्वाद	४	१५६	स्वामी के कर्त्तव्य	६	१६८
स्वजन-ज्ञाति	८	२७३	स्वार्थ	३	१४३
स्वकृत कर्म ही सुख-दुःख के दाता	८	१५५	स्वास्थ्य-आरोग्य	७	१३८
			हमी आनेवाली वातें	७	६१
स्वतन्त्र	६	१८२	हठ (आग्रह)	३	१६०
स्वदोष	६	११६	हाजिर जवाव	३	२८२
स्वधर्म-परधर्म	१	१४८	हाँजीडे (खुशामदी)	३	१४८
स्वपक्ष	८	२७२	हाँ मे हाँ मिलाने वाले	७	६४
स्वप्न	३	६०	हाथ कमाया काम	८	१३६
स्वप्रशसक	३	५४	हास्य	३	१३१
स्वभाव	८	५८	हास्य-निषेध	३	१३३
स्वभाव का परिवर्तन कठिन	८	६२	हिंसा	१	१६४
स्वभाव न छोडने वाले	८	६५	हिंसा के प्रकार	१	१६७
स्वाभाविकता नही छिपती	८	६६	हिंसात्मक यज्ञ	६	३१
स्वराज्य (प्रजातन्त्र राज्य)	६	१३८	हिंसात्मक यज्ञो का निषेध	६	३२
स्वरो का रहस्य एव उनके आधार पर भविष्य की सूचनाएँ	८	७६	हिंसा मे धर्म नही	१	१६८
			हिन्दुपर्व	६	२६२
			हिम्मत	८	६६
स्वस्थ (नीरोग)	७	१४०	हिम्मतहार मत वनो !	८	१००

वक्तृत्वकला के बीज भाग १ से ६ मे
उद्धृत ग्रन्थ एव व्यक्ति

ग्रन्थ

१ अंगिरास्मृति
२ अगुत्तरनिकाय
३ अग्निपुराण
४ अणुव्रत (मासिक)
५ अत्रिसंहिता
६ अत्रिस्मृति
७ अथर्ववेद
८ अध्यात्मकल्पद्रुम
९ अध्यात्मरामायण
अध्यात्मसार
१ अध्यात्मोपनिषद्
१२ अनुयोगद्वार सूत्र
१३ अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका
१४ अपरोक्षानुभूति
१५ अभिज्ञानशाकुन्तल (शाकुन्तल)
१६ अभिधम्मपिटक
१७ अभिधानचिन्तामणि (हैमकोप)
१८ अभिधानराजेन्द्र कोप
१९ अमर-उजाला (दैनिक)
२० अमरभारती (मासिक)
अमितगति-श्रावकाचार

२२ अमूल्य शिक्षा
२३ अर्चना और आलोक
२४ अवेस्ता
२५ अष्टकप्रकरण
२६ अष्टाङ्गहृदय
२७ आइने-अकबरी
२८ आकर्षणशक्ति
२९ आर्कलैंड (दैनिक)
३० आगम और त्रिपिटक एक अनुशीलन
३१ आचाराङ्गचूर्णि
३२ आचाराङ्गनिर्युक्ति
३३ आचाराङ्गसूत्र
३४ आचार्य शिवनारायण की रिपोर्ट
३५ आतुरप्रत्याख्यान
३६ आत्मपुराण
३७ आत्मविकास
३८ आत्मानुशासन
३९ आपका व्यक्तित्व
४० आपस्तम्बधर्मसूत्र
४१ आपस्तम्बस्मृति
४२ आप्तमीमांसा
४३ आवश्यक अवचूरि

४४ आवश्यक निर्यु
४५ आवश्यक
४६ आवश्यकसूत्र
४७ आवा अद्वी (पारसी धर्म
४८ इञ्जील
४९ इतिवुत्तक
५० इतिहा
५१ इतिहाससम
५२ इन्लवक्तृता विपयक पु
५३ इष्टोपदेश
५४ इस्लाम
५५ ६२
५६ ७
५७ ७७१
५८ ७
५९ उत्त
६०
६१

४४ आवश्यक निर्युक्ति
४५ आवश्यक मलयगिरि
४६ आवश्यकसूत्र
४७ आवा अद्वी सुर्यश्त (पारसी धर्मग्रन्थ)
४८ इजील
४९ इतिवुत्तक
५० इतिहासतिमिरनाशक
५१ इतिहाससमुच्चय
५२ इब्नबतूता-लिखित भारत-यात्रा विषयक पुस्तक
५३ इष्टोपदेश
५४ इस्लामधर्म क्या कहता है ?
५५ ईश्वरगीता
५६ ईशावास्योपनिषद्
५७ उज्ज्वलवाणी
५८ उत्तररामचरित
५९ उत्तराध्ययन-टीका
६० उत्तराध्ययन निर्युक्ति
६१ उत्तराध्ययन-वृहद् वृत्ति
६२ उत्तराध्ययनसूत्र
६३ उदान
६४ उद्भटसागर
६५ उपदेशतरङ्गिणी
६६ उपदेश प्रासाद
६७ उपदेशमाला
६८ उपदेशसुमनमाला
६९ उपासकदशाङ्गसूत्र
७० उर्दू शेर
७१ ऋग्वेद
७२ ऋषिभाषित
७३ ऐतरेयब्राह्मण
७४ ओघनिर्युक्ति
७५ औपपातिकसूत्र
७६ कठोपनिषद्
७७ कथालोक (मासिक)
७८ कथासरित्सागर
७९ कमल नाहटा का संग्रह
८० कल्पतरु
८१ कल्पसूत्र
८२ कल्याण (मासिक)
८३ कल्याण-गोअंक
८४ कल्याण-बालक अंक
८५ कल्याण-संत अंक
८६ कल्याण-सत्कथाङ्क
८७ कविता कौमुदी
८८ कवितावली
८९ कस्तूरी प्रकरण
(कहावतें)
९० (क) अंग्रेजी कहावतें
९१ (ख) अरबी कहावतें
९२ (ग) इटालियन कहावतें
९३ (घ) ईरानी कहावतें
९४ (ङ) उर्दू कहावतें
९५ (च) गुजराती कहावतें
९६ (छ) चीनी कहावतें

९७ (ज) जर्मनी कहावतें
९८ (झ) जापानी कहावतें
९९ (ञ) डच कहावतें
१०० (ट) डेनिस कहावतें
१०१ (ठ) पजावी कहावतें
१०२ (ड) पारसी कहावतें
१०३ (ढ) बगला कहावतें
१०४ (ण) मराठी कहावतें
१०५ (त) मालावारी कहावतें
१०६ (थ) राजस्थानी कहावतें
१०७ (द) रूसी कहावतें
१०८ (ध) सस्कृत कहावतें
१०९ (न) हिन्दी कहावते
११० कात्यायन स्मृति
१११ कादविनी
११२ किरातार्जुनीयम्
११३ किशनबावनी
११४ कार्तिकेयानुप्रेक्षा
११५ कुमारपाल चरित्र
११६ कुमारसम्भव
११७ कुरानशरीफ
११८ कुरुक्षेत्र
११९ कुवलयानन्द
१२० कूटवेद
१२१ केनोपनिषद्
१२२ केन्टकी का उद्देश्य
१२३ कौटिलीय-अर्थशास्त्र
१२४ खुले आकाश मे

१२५ गच्छाचार-प्रकीर्णक
१२६ गणधरवाद
१२७ गरुडपुराण
१२८ गलगचिया
१२९ गीता
(श्रीमद् भगवद् गीता)
१३० गीताञ्जलि
१३१ गीताभाष्य
१३२ गुजराती पद्य
१३३ गुरुग्रन्थ साहिब
१३४ गुर्जर भजनपुष्पावली
१३५ गुलिस्ता
१३६ गृहस्थ-धर्म
१३७ गोतम कुलक
१३८ गोतम स्मृति
१३९ गोपथ ब्राह्मण
१४० गोम्मटसार
१४१ गोरक्ष-शतक
१४२ गोवर्धन सप्तशती
१४३ घटखर्पर का नीतिसार
(नीतिसार)
१४४ चढती कला
१४५ चन्दराजानो राम
१४६ चन्दचरित्र (सस्कृत)
१४७ चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र
१४८ चरकसहिता
१४९ चरकसूत्र
१५० चर्पटपजरिका

१५१ चरित्ररक्षा
१५२ चाणक्यनीति
१५३ चाणक्यसूत्र
१५४ चित्राम की
१५५ चीनी
१५६ चेतना (
१५७ छान्दोग्यो
१५८ जनगण (
१५९ जतीरासा
१६० जपुजी सा
१६१
१६२ जागृति (
१६३ जातक
१६४ जापानी
१६५ जावाल
१६६ जाह्नवी
१६७ जीव
१६८ जी
१६९ जीवन
१७० जीवन
१७१ जीवा
१७२ जै
१७३ जैनप
१७४ जैन
१७५ जैन
१७६ जै
१७७ ज्ञा
१७८

१५१ चरित्ररक्षा
१५२ चाणक्यनीति
१५३ चाणक्यसूत्र
१५४ चित्राम की चोपी
१५५ चीनी सुभाषित
१५६ चेतना (मासिक)
१५७ छान्दोग्योपनिषद्
१५८ जनगण (साप्ताहिक)
१५९ जतीरासा
१६० जपुजी साहिव
१६१ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति
१६२ जागृति (मासिक)
१६३ जातक
१६४ जापानी लोककथा
१६५ जावालश्रुति
१६६ जाह्नवी
१६७ जीवकल्प
१६८ जीवनप्रेरणा
१६९ जीवनलक्ष्य
१७० जीवन सौरभ
१७१ जीवाभिगमसूत्र
१७२ जैनत्व की झाकी
१७३ जैनपाडवचरित्र
१७४ जैनभारती
१७५ जैनसिद्धान्तदीपिका
१७६ जैनसिद्धान्तवोल सग्रह
१७७ ज्ञातासूत्र
१७८ ज्ञानप्रकाश
१७९ ज्ञानसार
१८० ज्ञानार्णव
१८१ टॉड राजस्थान
१८२ टी वी हैण्डबुक
१८३ डेली मिरर (दैनिक)
१८४ ड्यूनेडिन
१८५ ढाका-रेजिडेन्ट
१८६ तत्त्वानुशासन
१८७ तत्त्वामृत
१८८ तत्त्वार्थसूत्र
१८९ तन्दुलवैचारिक
१९० तपोष्टक
१९१ ताओ-उपनिषद्
(ताओ तेह किंग)
१९२ ताण्ड्यमहाब्राह्मण
१९३ तात्त्विक-त्रिशती
१९४ तालमुद
१९५ तिरुकुरल
१९६ तीन बात
१९७ तुलसी कवितावली
१९८ तैत्तिरीय-आरण्यक
१९९ तैत्तिरीय-उपनिषद
२०० तैत्तिरीय ब्राह्मण
२०१ तोरा
२०२ त्रिषष्ठि-शलाकापुरुष
चरित्र
२०३ थेरगाथा
२०४ दक्षसहिता

२५६ निश्चयपञ्चात्
२६० नीतिवचन (पुरानी बाइबिल)
२६१ नीतिवाक्यामृत
२६२ नैतिक पाठमाला
२६३ नैतिक विज्ञान
२६४ नैषधीयचरित्र
(नैषध)
२६५ न्यायदीप
२६६ न्युयार्क ट्रिब्यून हेराल्ड
२६७ पचतत्र
२६८ पचदशी
२६९ पचाशक
२७० पचास्तिकाय
२७१ पजाबकेसरी
२७२ पजाबी कविता
२७३ पथ के गीत
२७४ पद्मपुराण
२७५ पद्मानन्द महाकाव्य
२७६ पब्लियस साइरस
२७७ परमात्मद्वात्रिंशिका
२७८ परमानन्द पचविंशति
२७९ पराशरसहिता
२८० पराशरस्मृति
२८१ पहेलवी टेक्स्ट्स
२८२ पाच बात
२८३ पातजलयोग दर्शन
२८४ पारस्करस्मृति
२८५ पार्श्वनाथ-चरित्र
२८६ पिण्डनिर्युक्ति
२८७ पुरानी बाइबिल
२८८ पुरुषार्थसिद्धियुपाय
२८९ पूर्वमीमासा
२९० पैवन्द
२९१ प्रकरणरत्नाकर
२९२ प्रज्ञापनासूत्र
२९३ प्रणिपातदण्डक-षडावश्यक टीका
२९४ प्रवचनडायरी
२९५ प्रवचनसार
२९६ प्रवचनसारोद्धार
२९७ प्रशमरति
२९८ प्रश्नव्याकरणसूत्र
२९९ प्रसगरत्नावली
३०० प्राचीनचरित्रकोष
३०१ प्राचीनसग्रह
३०२ प्रायश्चित्तसमुच्चयवृत्ति
३०३ प्रास्ताविक श्लोकशतक
३०४ बगश्री
३०५ बबई-समाचार
३०६ बाइबिल
३०७ बालभारती
३०८ बुद्ध और बौद्धसाधक
३०९ बुद्धचरित्र
३१० बृहत्कल्प-भाष्य
३११ बृहत्कल्पसूत्र
३१२ बृहत्पराशरसहिता
३१३ बृहदारण्यकोपनिषद्

३१४ बृहद्द्रव्यसंग्रह
३१५ बृहन्नारदीयपुराण
३१६ बृहस्पतिस्मृति
३१७ वेंदीदाद (पारसी ध०)
३१८ बोधिचर्यावतार
३१९ ब्रह्मग्रन्थावली
३२० ब्रह्मपुराण
३२१ ब्रह्मबिन्दूपनिषद्
३२२ ब्रह्मवैवर्तपुराण
३२३ ब्रह्मानन्दगीता
३२४ ब्यावलो
३२५ भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
३२६ भक्तामर-विवृति
३२७ भक्तिसूत्र
३२८ भगवतीसूत्र
३२९ भर्तृहरि-नीतिशतक
३३० भर्तृहरि-वैराग्यशतक
३३१ भर्तृहरि-शृंगारशतक
३३२ भवभूति के गुणरत्न
३३३ भविष्यपुराण
३३४ भामिनीविलास
३३५ भारत का आर्थिक व व्यापारिक भूगोल
३३६ भारतज्ञानकोष
३३७ भारत भारती
३३८ भारत भारती मान चित्रावली
३३९ भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिका
३४० भारत सरकार द्वारा प्रकाशित हेल्थबुलेटिन
३४१ भारतीय-अर्थशास्त्र
३४२ भाल्लवीय श्रुति
३४३ भावपाहुड
३४४ भावप्रकाश
३४५ भाषाश्लोकसागर
३४६ भिक्षु न्याय कर्णिका
३४७ भूदान पत्रिका
३४८ भोज प्रबन्ध
३४९ मज्झिमनिकाय
३५० मत्स्यपुराण
३५१ मनुस्मृति
३५२ मनोनुशासन
३५३ मन्थन
३५४ मरकुस (नयी बाइबिल)
३५५ मरणसमाधि प्रकीर्णक
३५६ मरुधर-केसरी-ग्रन्थावली
३५७ मरुभारती
३५८ महानिद्देस पालि
३५९ महानिर्वाणतन्त्र
३६० महानिशीथभाष्य
३६१ महानिशीथ सूत्र
३६२ महापुराण
३६३ महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक
३६४ महाभारत
३६५ मानो न मानो।
३६ मारवाड़ी भजनमाला
३६७ मार्कण्डेयपुराण
३६८ मार्गशी
३६९
३७० मिदरास निर्ग (यहूदी
३७१ मिलाप (दैनि
३७२ मिलिन्दप्रश्न
३७३ मुक्ति
३७४ मुण्ड
३७५ मुतातुलसाद
३७६ मुद्राराक्षस
३७७ मुनि श्री
३७८ मूलाचार
३७९ मृच्छकटि
३८० मेगबीन
३८१ मेघदूत
३८२ मेहम द
३८३ मैत्राय
३८४ मो
३८५ मो
३८६ मो
३८७
३८८ मोर
३८९
३९०
३९१
३९२ य
३९३

३६७ मार्कण्डेयपुराण
३६८ मार्गशीर्षएकादशी-माहात्म्य
३६९ मालविकाग्निमित्र
३७० मिदरास निर्गमन रव्वा (यहूदी धर्मगन्थ)
३७१ मिलाप (दैनिक)
३७२ मिलिन्दप्रश्न
३७३ मुक्तिकोपनिषद्
३७४ मुण्डकोपनिषद्
३७५ मुतातुलसादीन
३७६ मुद्राराक्षस नाटक
३७७ मुनि श्री जवरीमलजी का सग्रह
३७८ मूलाचार
३७९ मृच्छकटिक
३८० मेगजीन डाइजेस्ट
३८१ मेघदूत
३८२ मेडम दी स्नाल
३८३ मैत्रायणी आरण्यक
३८४ मोक्षपाहुड
३८५ मोक्षप्रकाश
३८६ मोक्षाष्टक
३८७ मोरली दी आरमामेट
३८८ मोहमुद्गर
३८९ मौनवाणी
३९० यजुर्वेद
३९१ यज्ञरहस्य
३९२ यतिधर्म समुच्चय
३९३ यशस्तिलकचम्पू
३९४ यश्त (पारसी धर्मग्रन्थ)
३९५ यश्न („ „)
३९६ याज्ञवल्क्यस्मृति
३९७ यालकल शिमेओ (यहूदी धर्मग्रथ)
३९८ यू एन डेमोग्राफिक इयर बुक १९६६ तथा १९७०-७१
३९९ यू री पी डी जे
४०० यूहन्ना के समाचार (नई वाईविल)
४०१ योगदर्शनभाष्य
४०२ योगदृष्टिसमुच्चय
४०३ योगविन्दु
४०४ योगवाशिष्ठ
४०५ योगशास्त्र
४०६ योगशिखोपनिषद्
४०७ योगसार
४०८ योगसूत्र
४०९ रगभूमि
४१० रघुवश
४११ रत्नाकरपञ्चविंशिका
४१२ रश्मिमाला
४१३ राजपूतीकथा
४१४ राजप्रश्नीयसूत्र
४१५ राजवार्तिक
४१६ रामचरितमानस (तुलसीरामायण)

४१७ रामजशरसायण
४१८ रामशतसई
४१९ राष्ट्रदूत (दैनिक)
४२० रीड मेगजीन (अमेरिका)
(रूपक)
४२१ गुजराती रूपक
४२२ राजस्थानी रूपक
४२३ लघुयोगवाशिष्ठसार
४२४ लघुवाक्यवृत्ति
४२५ लूका (नई बाइबिल)
४२६ लेटिनसूत्र
४२७ लोक-प्रकाश
(लोकोक्तियां)
४२८ (क) अरबी लोकोक्ति
४२९ (ख) चैक लोकोक्ति
४३० (ग) लेटिन लोकोक्ति
४३१ (घ) वेल्स लोकोक्ति
४३२ (ड) स्पेनिश लोकोक्ति
४३३ वशिष्ठस्मृति
४३४ वायुपुराण
४३५ वाल्मीकिरामायण
४३६ विक्रमचरित्र
४३७ विक्रमोर्वशीयनाटिका
४३८ विचित्रा (त्रिमासिक)
४३९ विज्ञान के नये आविष्कार
४४० विदुरनीति
४४१ विनयपिटक
४४२ विपाकसूत्र
४४३ विवेकचूडामणि
४४४ विवेकविलास
४४५ विशुद्धिमग्गो
४४६ विशेषावश्यक
४४७ विशेषावश्यकचूर्णि
४४८ विशेषावश्यक-भाष्य
४४९ विश्वज्ञानकोष
४५० विश्वदर्पण
४५१ विश्वमित्र (दैनिक)
४५२ विश्वविजय पञ्चाग
४५३ विश्वामित्रस्मृति
४५४ विष्णुपुराण
४५५ विष्णुस्मृति
४५६ वीतरागस्तोत्र
४५७ वीर अर्जुन (दैनिक)
४५८ वीस्परत् (पारसी धर्मग्रन्थ)
४५९ वेदान्तदर्शन
४६० वैदिकधर्म क्या कहता है?
४६१ वैदिक विचार-विमर्शन
४६२ वैद्यक शास्त्र
४६३ वैद्यरसराजसमुच्चय
४६४ वैशेषिकदर्शन
४६५ व्यवहारचूलिकाभाष्य
४६६ व्यवहार-भाष्य
४६७ व्यवहारसूत्र
४६८ व्याख्यान का मसाला
४६९ व्याख्यानमणिमाला
४७० व्याख्यानरत्नमंजूषा

उद्धृत ग्र

४७१ ०
४७२
४७३ श्रता
४७४ शक
४७५
४७६ शकु
४७७
४७८
४७९
४८०
४८१ शा
४८२ श
४८३
४८४
४८५
४८६
४८७
४८८
४८९
४९०
४९१
४९२
४९३
४९४
४९५
४९६
४९७
४९८

उद्धृत ग्रन्थ एवं व्यक्ति

४७१ व्याससहिता
४७२ व्यासस्मृति
४७३ व्रताव्रत की चौपाई
४७४ शकरप्रश्नोत्तरी
४७५ शखस्मृति
४७६ शकुनावली
४७७ शतपथब्राह्मण
४७८ शयस्त ला शयन्त
४७९ शान्तसुधारस
४८० शान्तिगीता
४८१ शार्ङ्गधर
४८२ शास्त्रवार्तासमुच्चय
४८३ शिवगीता
४८४ शिवपुराण
४८५ शिवसहिता
४८६ शिशुपालवध
४८७ शील की नववाड
४८८ शीलपाहुड
४८९ शुकबोध
४९० शुक्रनीति
४९१ शुक्लयजुर्वेद
४९२ श्राद्धपितृमीमासा
४९३ श्राद्धविधि
४९४ श्रावकधर्मप्रकाश
४९५ श्रावकधर्म प्रज्ञप्ति
४९६ श्रावकप्रतिक्रमण
४९७ श्रावक रूपचन्दजी
४९८ श्रीमद्भागवत (भागवत)
४९९ श्री विलक्षण अवधूत-स्वरोदय
५०० श्वेताश्वतरोपनिषद्
५०१ षट्प्राभृत
५०२ षड्दर्शनसमुच्चय
५०३ सक्षिप्त जैनमहाभारत
५०४ सगीत पृथ्वीराज
५०५ सजीवनी बूटी
५०६ सतवचन
५०७ सबोधसत्तरि
५०८ सबोधि
५०९ सयुक्तनिकाय
५१० सवेगद्रुमकन्दली
५११ सचित्र-विश्वकोप (विश्वकोप)
५१२ सत्यार्थ प्रकाश
५१३ सप्तव्यसनसन्धान काव्य
५१४ समातरग
५१५ समयसार
५१६ समर्थाचे सामर्थ्य
५१७ समवायाग सूत्र
५१८ समाधिशतक
५१९ सम्मतितर्क प्रकरण
५२० सम्यग्दर्शन
५२१ सरलमनोविज्ञान
५२२ सरिता (पाक्षिक)
५२३ सर्जना
५२४ सवैया शतक

५२५ सहलतस्तरी
५२६ साख्यदर्शन
५२७ साकेत
५२८ सामवेद
५२९ सामान्यज्ञान एव व्यक्तिपरिचय
५३० सामायिकसूत्र
५३१ सावधानी रो समुद्र
५३२ साहित्यदर्पण
५३३ सिद्धान्तकौमुदी
५३४ सिन्दूरप्रकरण
५३५ सुखमणि साहब
५३६ सुत्तनिपात
५३७ सुत्तपाहुड
५३८ सुत्तपिटक
५३९ सुबोधपद्माकर
५४० सुभाषितरत्नखण्ड-मजूषा
५४१ सुभाषितरत्नभाण्डागार
५४२ सुभाषितरत्नसदोह
५४३ सुभाषितसचय
५४४ सुभाषितावली
५४५ सुश्रुतसहिता
५४६ सूक्तमुक्तावली
५४७ सूक्तरत्नावली
५४८ सूत्रकृताग सूत्र
५४९ सेक्वल लाइफ ड्यूरिंग वर्ल्डवार
५५० सोरठासग्रह
५५१ सोवियतभूमि
५५२ सौरपरिवार
५५३ स्कन्दपुराण
५५४ स्टडीज इन डिसीट
५५५ स्थानाग-टीका
५५६ स्थानागसूत्र
५५७ स्याद्वादमजरी
५५८ स्वप्नवासवदत्ता
५५९ स्वप्नशास्त्र
५६० स्वरशास्त्र
५६१ स्वर-साधना
५६२ हउश्मज्दा
५६३ हजरत बुखारी और मुस्लिम
५६४ हठयोग-प्रदीपिका
५६५ हदीसशरीफ
५६६ हनूमन्नाटक
५६७ हरिजन सेवक
५६८ हरितस्मृति
५६९ हरिभद्रयोगविंशिका
५७० हरिभद्रीय-आवश्यक
५७१ हरिभद्रीयाष्टक टीका
५७२ हर्षचरित्र
५७३ हिंगुलप्रकरण
५७४ हितोपदेश
५७५ हिन्द समाचार
५७६ हिन्दी मिलाप (दैनिक)
५७७ हिन्दुस्तान (दैनिक)
५७८ हिन्दुस्तान (साप्ताहिक)
५७९ हृदयप्रदीप
५८० होडाचक्र

१ अकबर
२
३ अगस्त्य
४ अफला
५ अ
६ अबु
७ अबूद
८ अब्दु
९ अम
१०
११ अर
१२
१३ अल
(ए
१४ ०
१५ अ
१६
१७
(
१८
१९
२० आ
२१

व्यक्ति नामावली

१ अकबर
२ अक्खाभक्त
३ अगस्त्य मुनि
४ अफलातून
५ अबीदाउद
६ अबुमुर्ताज
७ अबूदकर केतानी
८ अब्दुल हसन
९ अमरमुनि
१० अरविन्द घोष
११ अरस्तू (जरथुस्त्र)
१२ अलजर
१३ अल्काट
(एमो ब्रासन अल्काट)
१४ अल्फान्सीकर
१५ अष्टावक्र
१६ असोन दी चासिल
१७ आईजक डिजराइली
(डिजराइली)
१८ आईन्स्टीन
१९ आचार्य उमाशंकर
२० आचार्य तुलसी
२१ आचार्य रजनीश
२२ आदम स्मिथ
२३ आरकिंग
२४ आरजू
२५ आरिलियम
२६ आस्टिन
२७ आस्टिन मेले
२८ आस्नि ओमले
२९ इंगरसोल
३० इजिल
३१ इकबाल
३२ इन्द्रचन्द नौलखा
३३ इब्बेसिना
३४ इब्राहीम लिंकन (लिंकन)
३४ इमर्सन (एमर्सन)
३६ ई० एच० चेपिन
३७ इशा अल्लाखाँ
३८ ईसरदास
३९ ईसा
४० उद्दा
४१ उद्यमवादी
४२ उमास्वाति
४३ ऊ थाट
४४ ए० ए० हाफक्रिन्स

४५ एक इंगलिश विचारक
४६ एक युवक अन्यायी
४७ एच० जी० बोन
४८ एच० जी० वेल्स
४९ एच० डब्ल्यू० बीचर
५० एच० मोर
५१ एञ्जिलो
५२ एञ्जिलस
५३ एडविन मार्कहम
५४ एडिसन(जी० एफ० एडिसन)
५५ ए० ड्यू० पाई
५६ एनन
५७ एनीबीसेन्ट
५८ एपिक्टेट्स
५९ एफ० एल० किमेन्स
६० ए० मिली
६१ एम० जी० लिश्वर
६२ एमी० एल०
६३ एरियल यूनानी
६४ एलाह्वीलर
६५ एल्वर्ट हुगार्ड
६६ एलोशियस
६७ एविड
६८ एस० सी० श्रीवास्तव
६९ ओलवर गोल्डस्मिथ
(गोल्डस्मिथ)
७० ओविद
७१ ओडोरपार्कर
७२ कन्डोरसेंट
७३ कन्फ्यूशियस (कागफ्यूत्सी)
७४ कर्मवादी
७५ कवि उदयराज
७६ कवि अमरदान
७७ कवि ऋद्धुलाल
७८ कवि कालिदास
७९ कवि कृपाराम
८० कवि कृष्णदास
८१ कवि केशव
८२ कवि क्षेमेन्द्र
८३ कवि गग
८४ कवि गिरधर
८५ कवि ग्वाल
८६ कवि घनश्याम
८७ कवि घाघ
८८ कवि घासीराम
८९ कवि जगन्नाथ
९० कवि जाल
९१ कवि जिनहर्ष
९२ कवि जुगतदान
९३ कवि जुगल
९४ कवि दिनकर
९५ कवि दीन
९६ कवि दीनदरवेस
९७ कवि दीप
९८ कवि देवीदास
९९ कवि धर्मसिंह

व्यक्ति
१०० कवि
१०१ कवि
१०२ कवि
१०३ कवि
१०४ कवि
१०५ कवि
१०६ कवि
१०७ कवि
१०८ कवि
१०९ कवि
११० कवि
१११ कवि
११२ कवि
११३ कवि
११४
११५
११६
११७ क
११८ कवि
११९
१२०
१२१ क
१२२
१२३ प
१२४
१२५
१२६ कवि
१२७ कवि

१०० कवि नाथूलाल
१०१ कवि नारायण
१०२ कवि पद्माकर
१०३ कवि परसराम
१०४ कवि पीपा
१०५ कवि प्रताप
१०६ कवि वनारसीदास
१०७ कवि वाकीदास
१०८ कवि वोधा
१०९ कवि ब्रह्म
११० कवि ब्रह्मदत्त
१११ कवि ब्रह्मानन्द
११२ कवि भड्डुली
११३ कवि भूधरदास
११४ कवि मयाराम
११५ कवि माघ
११६ कवि मान
११७ कवि मोहन
११८ कवि रणजीत
११९ कवि रतन
१२० कवि रहीम
१२१ कविराज हरनामदास
१२२ कवि राम
१२३ कवि रामचरण
१२४ कवि लिखमेश
१२५ कवि विल्हण
१२६ कवि विहारी
१२७ कवि वृन्द
१२८ कवि वेताल
१२९ कवि सग्रामदास
१३० कवि सहदेव
१३१ कवि सुन्दरदास
१३२ कवि सुजान
१३३ कवि सूरत
१३४ कवि सूर्यमल
१३५ कवि हस
१३६ कामवेल
१३७ कारनट
१३८ कार्डिनल
१३९ कार्ल मार्क्स
१४० कार्लाइल
१४१ कालवादी
१४२ किंग्सले
१४३ किडलिपर
१४४ किवकट
१४५ किसनिया
१४६ कुन्दकुन्दाचार्य
१४७ कुसुमदेव
१४८ कूपर
१४९ केटो
१५० केम्पी
१५१ कैथराल
१५२ कैनेथ वालसर
१५३ कैलाश जैन
१५४ कोलरिज
१५५ कोलम्बस

१५६ कोल्टन
१५७ क्वार्ल्स
१५८ खलील जिब्रान
१५९ गंगादास जी चारण
१६० गांधी
१६१ गालिब
१६२ गिबन
१६३ गिलपिल
१६४ गुरु गोरखनाथ
१६५ गुरु नानक (नानक)
१६६ गुरु वशिष्ठ
१६७ गेटे
१६८ गेराबाल्डी
१६९ गोल्डो जी
१७० गोवर्धनाचार्य
१७१ ग्रेनविल
१७२ ग्रेविल
१७३ ग्लेडस्टन
१७४ घटखर्पर
१७५ घासीरामजी स्वामी
१७६ चकवस्त
१७७ चन्दन मुनि
१७८ चर्चिल
१७९ चाणक्य
१८० चिलो
१८१ चिकागो के डा० सेन
१८२ चेम्फर्ड
१८३ चेस्टर फिल्ड
१८४ चैतन्य महाप्रभु
१८५ चैनिंग
१८६ जमनालाल जैन
१८७ जयचन्दलाल छाजेड
१८८ जयशंकरप्रसाद
१८९ जयाचार्य
१९० जर्मी टेलर
१९१ जवाहरलाल नेहरू
१९२ जहो रस्किन (रस्किन)
१९३ जॉन आरबुथनॉट
१९४ जॉन एस सी एवट
१९५ जॉन ब्राइट
१९६ जॉन मिल्टन
१९७ जॉन लॉक
१९८ जॉनसन
१९९ जॉन स्टुआर्ट मिल
२०० जामी
२०१ जाथ
२०२ जॉर्ज इलियट
२०३ जॉर्ज चैपमेन
२०४ जॉर्ज हॉबर्ट
२०५ जाविदान ए० खिरद
२०६ जी० गफ
२०७ जीनपाली
२०८ जी० सी० क्वेटनबर्ग
२०९ जुन्नून
२१० जुन्नेद बगदादी
२११ जुबर्ट

मेरा नामावली

ब्रेन विल
ज० नोफेन
जे० पी० सी०
ज० पी०
ज० फरोस
जेम्सगार फिल्ड
जे० रास्ह
बा० हावेज
बेक
टप्पर
ग्राइन एडवड्स
टामस कैम्पिस
टानमेज
टालस्टाय
गी० एल० वा
टी० कोगन
टोल्झन
स्नोम्स
टैगोर (
विश्वकवि)
ह० ल०
डाइट रॉट
डाइब
डाल्टन
डार्योजि
डारस्टोल
डॉविन
डॉ० एलो

२१२ जेग विल
२१३ जे० नोफेन
२१४ जे० पी० सी० बर्नाड
२१५ जे० पी० हॉलेण्ड
२१६ जे० फरीस
२१७ जेम्जगार फिल्ड
२१८ जे० राल्ड
२१९ जो० हावेज
२२० जौक
२२१ टप्पर
२२२ टाइन एडवर्ड्स
२२३ टामस कैम्पिस
२२४ टालमेज
२२५ टालस्टाय
२२६ टी० एल० वास्वानी
२२७ टी० कोगन
२२८ टेनीशन
२२९ टेलीटस
२३० टैगोर (रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्वकवि)
२३१ ड० ल० जॉर्ज
२३२ डाइट रॉट
२३३ डाड्रिज
२३४ डान्टन
२३५ डायोजिनिस
२३६ डारेन्टोल
२३७ डार्विन
२३८ डॉ० एलेग्जी केरेल
२३९ डॉ० एल्फ्रेड
२४० डा० करेले
२४१ डॉ० कार्लवीच
२४२ डॉ० कैलाशचन्द्र दुवे
२४३ डॉ० गरास जे० रोल्ड
२४४ डॉ० जे० एच० केलोग
२४५ डॉ० डौग्लस मेकडोनल्ड
२४६ डॉ० फोर्ड एम० डी०
२४७ डॉ० लुकास शेम्पोनीअर
२४८ डॉ० वाई० पी० कपूर
२४९ डॉ० विलियम वेस
२५० डॉ० विलियम लेम्ब
२५१ डॉ० वोन नुरडन
२५२ डॉ० सर जेम्स शियर
२५३ डॉ० स्पैंस
२५४ डॉ० हरदयाल माथुर
२५५ डिवेन्स
२५६ डी० एल० मूडी
२५७ डी० जे० रोल्ड
२५८ डे० नि० एल० वेक्टर
२५९ डेलकार्नेगी
२६० डेविस ग्रेसन
२६१ ड्राइडेन
२६२ तिरमजी
२६३ तिरुवल्लुवर
२६४ तोतापुरी
२६५ तोमर
२६६ तोलाराम चोपडा

२६७ ग्रायण्ट
२६८ थामस केम्पी
२६९ थामस पेन
२७० थामस फूलर
२७१ थियोग्निस
२७२ थेलस
२७३ थैकरे
२७४ थोरो
२७५ थ्यू फ़ास्टस
२७६ दवार
२७७ दाते
२७८ दादा धर्माधिकारी
२७९ देवेश्वर
२८० देवी रानी विदुला
२८१ धनमुनि (प्रथम)
२८२ धूमकेतु
२८३ नकुलेश्वर
२८४ नजिन
२८५ नरसी भगत
२८६ नरेन्द्रकुमार
२८७ नलिन
२८८ नाथजी
२८९ निकोलस चेम्फर्ट
२९० निपट निरजन
२९१ नियतिवादी
२९२ निर्मला हरवशसिंह
२९३ नीत्से
२९४ नेपोलियन (नेपोलियन बोनापार्ट)

२९५ पडित श्रद्धाराम जी
२९६ पत (सुमित्रानन्दन पत)
२९७ पटोरिया
२९८ पास्कल
२९९ पीथागोरस
३०० पुरुषोत्तमदास टडन
३०१ पृथ्वीराज सुराणा
३०२ पेट्रार्क
३०३ पैट्रार्च
३०४ पैरेक्लीज
३०५ पोप
३०६ प्रेमचन्द
३०७ प्रेमनिधि
३०८ प्रेमसुख सेवक
३०९ प्रेमादेवी रामायणी
३१० प्रो० किथ
३११ प्रो० विल्सन
३१२ प्लुटार्क
३१३ प्लूटार्च
३१४ प्लेटन
३१५ प्लेटो
३१६ फिलिप्स ब्रुक्स
३१७ फिलिडग
३१८ फीनेलन
३१९ फेवर
३२० फोथ
३२१ फ्रैंकलिन
३२२ फ्रैंच-सेना के सर्जन जनरल

३२३ बटलर
३२४ बर्नार्ड शा
३२५ बलवर
३२६ बाइल्ड
३२७
३२८ बाबू
३२९ बालजक
३३०
३३१ बीडेल
३३२ बुडरो
३३३ बुलवर
३३४ बुल्लेश
३३५
३३६ बृहू
३३७ बेकन
३३८ बेन
३३९ बेली
३४० बैन्हे॰
३४१ बो
३४२ ब्रह्म
३४३ ॰
३४४ भव
३४५
३४६
३४७
३४८
३४९
३५०

व्यक्ति नामावली

३२३ बटलर
३२४ बर्नार्ड शा
३२५ बलवर
३२६ वाइल्ड
३२७ वाउपलर्स
३२८ बाबू गुलाबराय
३२९ बालजक
३३० बाबरीसाहिब
३३१ बीडेल
३३२ वुडरो विल्सन (विलसन)
३३३ बुलवर लिटन
३३४ बुल्लेशाह
३३५ बूलकोट
३३६ बृहस्पति
३३७ बेकन (फ्रांसिस बेकन)
३३८ बेन जान्सन
३३९ बेली
३४० बैन्डेल फिलिप
३४१ बो बी
३४२ ब्रह्मदेवसिंह
३४३ ब्लेर
३४४ भवरलाल चडालिया
३४५ भगवतीचरण वर्मा
३४६ भगवान् व्यास (वेदव्यास)
३४७ भर्तृहरि
३४८ भवभूति
३४९ भावदेव सूरि
३५० भिक्षु स्वामी
३५१ मदन द रियु
३५२ मदनमोहन चटर्जी
(मास्टर मोहन)
३५३ म० बेकर
३५४ मर्फी
३५५ महर्षि मरीचि
३५६ महर्षि रमण
३५७ महाकवि भारवि
३५८ महात्मा तिलक
३५९ महात्मा बुद्ध (गौतम बुद्ध)
३६० महात्मा भगवानदीन
३६१ महावीरप्रसाद द्विवेदी
३६२ महेन्द्रकुमार वशिष्ठ
३६३ माण्टेन
३६४ मान्टेस्की
३६५ मान्टेस्क्यू
३६६ माकटेन
३६७ मार्डन बेकरीज
३६८ मालचन्द बैद
३६९ मि० जे० एच० ओलीवर
३७० मिकावर
३७१ मि० जे० एच० ओलीवर
३७२ मि० थोमस जे० रीगन
३७३ मिनेन्दर
३७४ मिलिन्द
३७५ मिल्टन
३७६ मुनि वच्छराज
३७७ मुहम्मद-बिन-बशीर

४३४ लेनिन
४३५ लेवेटर
४३६ लेडी मोटग्यू
४३७ लैसिंग
४३८ लोकमान्य तिलक
४३९ वनेर
४४० वरले
४४१ वर्क
४४२ वर्डसवर्थ
४४३ वल्लभदेव
४४४ वान हापर
४४५ वावकेशियो
४४६ वायग्टन
४४७ वायरन
४४८ वायर्स
४४९ वारटल
४५० वाल्टेयर
४५१ वाशिगटन इर्विन
४५२ विक्टर ह्यूगो
४५३ विजयधर्मसूरि
४५४ विज्म
४५५ विनोवा भावे
४५६ विलकाक्स
४५७ विलियम जेम्स
४५८ विलियम पिट
४५९ विलियम पेन
४६० विवेकानन्द
४६१ विशनदयाल गोयल
४६२ विशप कम्बरलैंड
४६३ विशप वर्नेट
४६४ विशप हॉल
४६५ विष्णु शर्मा
४६६ वीरजी
४६७ वोकला
४६८ वोस्ता
४६९ व्यास
४७० शकराचार्य
४७१ शरद्चन्द्र
४७२ शशिकान्त शर्मा
४७३ शिकागो के शरीर शास्त्री
शिलर
४७४ शिवानन्द
४७५ शीलनाथ
४७६ शुक्राचार्य
४७७ शुभचन्द्राचाय
४७८ शेक्सपियर
४७९ शेखशादी (शादी)
४८० शैली
४८१ शोपेन हावर
४८२ श्री कालूगणी
४८३ श्री डालगणी
४८४ श्रीमती क्रूडनर
४८५ श्रीमद् राजचन्द्र
४८६ श्लोग्लैन
४८७ सचियालालजी नाहटा
४८८ सत आगस्तिन

वक्तृत्वकला के बीज-शुद्धिपत्र

[पहला भाग]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	१	तत्सवितु	ओ३म् भूर्भुव स्वस्तत्सवितु
६	४	हम सब	हम सब प्राणप्रिय, दुखविनाशक सुखरूप एव
२४	५	समस्त	सभी वृक्ष कल्पवृक्ष है, समस्त
३१	१६	लब्ध्वा	लब्ध्वा
४८	१२	अहिंसा	अहिंसा, सत्य
५६	६	सावण साजा	सोम साजा
७१	८	समित्पाणि	समित्पाणि भक्त को
७६	२	विडम्बका	विडम्बना
९०	२३	छूट गया	(कर्त्तव्य की सूचना 'सारणा' है, अकर्त्तव्य का निषेध 'वारणा' है और भूल होने पर कर्त्तव्य के लिए कठोरता के साथ शिक्षा देना 'पडिचोयणा' है।)
१०६	१०	हलाहल	हालहल
१०९	५	वत्थुसहाओधम्मो (कुदकुद)	धम्मो वत्थुसहाओ (कार्तिकेयानुप्रेक्षा ४७८)
११३	२१	दोप न लगे।	दोप न लगे। फिर वह विधि चाहे वेदो मे हो अथवा धर्मशास्त्रो मे हो, उसे मानने मे कोई आपत्ति नही है।
११५	८	निवृत्ति	निर्वृति

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति
११८	७
१२०	१७
१३५	६
१४८	१७
१५४	१७
१६१	१४
१८५	१७
२०६	१२
२०८	११
२१६	११
२१६	१२
२३९	९
२३९	२
२५४	२१
२५५	२
२५५	५
२५९	१३
२६८	१
२७०	
	३
	२१
	२६

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११८	७	धम्मो	धम्मे
१२०	१७	२३७	२३८
१३५	६	१४५।८४	४५८४
१४८	१७	भविष्य पुराण मे	भविष्य पुराण, प्रतिसर्गपर्व ५८।५३ मे
१६४	१७	स्वामीवध	स्वामिद्रोह
१८१	१४	प्रेमवश	प्रेमवश पुत्र की बुद्धि से
१८५	१७	न मारे	न मारे और न मरवाये
२०६	१२	१०।७७	१०।७४१
२०८	११	जजमान	जमान
२१६	११	और	×
२१६	१२	करती है	करती है, सब मगलो की माता है
२३६	६	सकना	सकना 'काहलत्व' दोष है। मुख मे बोल न सकना
२३६	२	वारु भृंणैशम्	वारुणं भृंशम्
२५४	२१	१४।११।८४	११।८४
२५५	२	१४।८३।१	८३।१
२५५	५	१४।४।२	४।२
२५६	१३	महाभारत	महाभारत शाति पर्व, ७३३
२६८	१७	नोट	मी का नोट
२७०	६	सेठने	नेठ

[दूसरा भाग]

३	८	नकते हैं	सकते हैं, गदहे नहीं उठा सकते।
२१	७	ब्रह्मचर्य के	अब्रह्मचर्य के
२६	१०	के	×

शुद्धि पत्र

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	२०	मनुस्मृति २।९४	महाभारत आदिपर्व ८५।५० तथा मनुस्मृति २।९४
३४	८	अपनी इच्छानुसार	×
३४	८	पुरुषो को	पुरुषो को प्राप्त होकर
४३	७	फेफडे	ग्लैंड्स
५४	२	वार्य	वार्प
५९	८	रहकर	×
६२	१	मीठी	ऐंठी
६५	१५	श्लोक ३३।४१२३	१२३।१३-१४
१०९	३	जिणसाण	जिणसासण
११३	६	च माया	च या माया
१४१	१	ना छाडो	छाडो
१४९	१२	१।७५९	१०।७५९
१६१	१	सकप्पओ	सकप्पयओ
२००	८	अब्भुट्ठिओ ओह	अब्भुट्ठिओह
२०३	१२	तुम	तुमने
२१७	९	उपाधि	उपधि
२१९	१७	रहा है ?	रहा है? मैं चाण्डाल थोडा ही हूं।
२१९	१८	मैं चाण्डाल थोडे ही हूं।	×
२२४	१८	कूरगगहूक	कूरगहूक
२४५	१५	उसे	उससे
२४७	१	तारीफ	यो तारीफ
२४७	२१	परादु खये	पराये दु ख
२५३	१	कलह करो असमाहिकरे	कलहकरे
२५९	८	कोई नहीं है	कोई दोष नही है
२६८	१३	पन्नत्ते	पन्नत्ता
२७९	५	१।५	१३।६

पृष्ठ
३२२
३२३
३२७
३२७

१०
२१
२८
४३
६०
७८
९४
१५१
१५३
१७९
१८९
१८९
२००
२२४
२६०
२६३
२७८
२८१
२९८
२९८
३०२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२२	९	दूर के	के दूर
३२३	११	१२-१३	तीन पंक्तियाँ काटनी हैं।
३२७	१	सबने	सब
३२७	८	रुपयो	रुपयो को

[तीसरा भाग]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	१९	तस्वीर	तक्सीर
२१	१३	जहाँ	जहाँ मे
२८	२	तीरवालियाँ	वीरवालियाँ
४३	५	६।१०	१६।१०
६०	१५	तेपु	भूतेपु
७८	४	जय	जूय
९४	६	देशात्यो	देशोत्यो
१५१	६	भूख	भूल
१५३	५	किसी से	किसी ने
१७६	१८	गिर जाने पर	गिर जाने पर भी
१८९	५	अनुभूत	अनुभूति
१८९	१२	पिच्चुग्घाडिओ	निच्चुग्घाडिओ
२००	२०	कितनी	कितनी ही
२२४	१२	तो	तो भी
२६०	१२	गोदा थाय	गोदा खाय
२६३	१०	कहती	यो कहती
२७८	१२	नोपाध्याया	नोपाध्याय
२८१	६	पवन-माफ	पवन से साफ
२९८	२	लाई	ताई
२९८	१०	पापी	पाणी
३०२	१४	कहा के	कहा से

पृष्ठ
२९७
२९८
३०४
३१५
३२७

[चौथा भाग]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	११	मेला	मेला
४४	७	करणोशरा	करणोत्तरा
४४	१३	पृथ्वीराजनाटक	संगीत पृथ्वीराज
७४	७	मावो	भवो
१०१	७	घसना, कटना	घिसना, काटना
११०	६	किरियादी	किरियावादी
११६	१	समकत्व	सम्यक्त्व
१४३	१८	नइरस्य	नरस्य
१५६	१०	अणण्हफले	अणण्हयफले
१६५	१४	छारित्र	चारित्र
१७६	४	सेलेसी	जीवे सेलेसी
१८६	१४	आयारकुसले	आयारकुसले (व्यवहार ३/५)
२०८	६	योग्य	योग
२३१	१६	दुस्सामए	दुस्समाए
२३६	१३	साधन	साधव
२४१	२	हद्धि	तद्धि
२४१	२	पुरुषस्या	पुरुषस्या
२५५	७	निग्रंन्थ	निर्ग्रन्थ
२५६	१०	विकुर्षणा	विकुर्वणा
२६२	१२	जो	×
२६३	६	णपि	णवि
२७७	८	जिसमे	जिनमे
२७९	६	तेरह हैं	तेरा है
२९२	१२	माप्रयेत्	माश्रयेत्
२९३	८	नमिया	न सिया
२९५	६	भिक्षपि	भिक्षापि

२८
२८
३५
३६
३६
३७
४६
५३
६१
६३
६३
६६
६७
६७
७२
७८
७९
९२
१२०
१२५

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६७	७	मवइकमित्ता	मवकमित्ता
२६८	२३	चाहे दो	चाहे तो
३०४	६	खाइम	न्वाइम, साइम
३१५	६	आचाराग श्रुत २, अ ३,उ १	बृहत्कल्प ११३६
३२७	५	अब्भुट्ठारोत्ति	अब्भुट्ठाणेत्ति

[पाँचवाँ भाग]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	१८	नृप	नृत्य
२८	२२	धगीशय्मा	धजी शय्या
३५	१२	प्रिय	प्रिय एव
३६	४	मैत्रायणी	तैत्तिरीय
३६	६	अर्थात्	दुराधर्ष है अर्थात्
३७	९	पडराणतवो	पड्णणतवो
४६	१४	कथानुसार	कथनानुसार
५३	२१	०।७३३	१०।७३३
६१	८	आणोवओगे	अणोवओगे
६३	७	२६।१	२६।११
६३	११	लुम्यतु	लुम्पतु
६६	१२	२६।३	२६।४३
६७	१३	शुभैक	शुभैक
६७	१३	सूक्ष्या	सूक्ष्मा
७२	१३	आवायविजए	अवायविजए
७८	५	ध्यानपि	ध्यानादपि
७९	१०	नकर	मकार
९७	१०	उवणा	ठवणा
१२०	२	परान्ने	परान्न
१२५	११	छपकली	मकडी

शुद्धि-पत्र

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवां

०२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२८	६	जिघञ्छा	जिघञ्छा
१२९	१३	जस	जड़
१३५	२१	मोमणी	मोभणी
१३७	१	पण चीरी	पण पेटचीरी
१४१	४	३१२	३११
१४४	५-६	पुरुषतत्त्व	X
१४६	५	२।१६।५८	२।११।५६
१५०	१२	कामसच्चय	कम्मकचुय
१५१	४	उस उस	उस
१५२	४	६।२।१६६।१	५।२।१६६।१
१५४	१२	नपुसकलिंग	नपुसकलिंगसिद्ध
१६६	३	१११	११।१०
१६८	८	८३ हजार	८६ हजार
१८४	२२	मिदह मिदह	छिदह मिदह
१८५	१७	घर	घर
१९५	१२	पूर्वकथा	पूर्वकथना
२०५	१७	डाल	डालकर
२२७	१२	तैत्तिरीय ताराड्य	ताण्ड्य
२४०	२	पण्णत्ता	पण्णत्ताओ
२४४	१	सुलमाइ	णो सुलमाइ
२५७	१८	१,१६	१,१६
२६२	१३	३४६६	३४०६
२८८	४	२५,७२,०००	२५,७२,६००
२९१	१३	७०५	६०५
२९१	१६	१,७०,०५	१,७०,८५
२९१	१८	६,६०००	६,६००
२९४	१६	३६८३	३६८८
२९६			

पृष्ठ	पंक्ति
२९७	११
३०१	२१
३०२	२६
३०३	३५
३१२	४६
३१४	६२
३१५	
३१६	
३१६	
३२४	
३२४	
३२४	
३२५	
३२५	
३२५	
३२६	
३२७	
३२७	

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६७	७	२५००	१५००
३०१	४	७६,६४,२०७	७६,६४,२०७
३०२	१३	जव सख्या	जन सख्या
३०३	१६	१६५५	१५५६
३१२	१७	६ प्रतिशत	६० प्रतिशत
३१४	४	७ करोड मन	७० करोड मन
३१५	५	१५००-२०००	१५००-१०००
३१६	१०	१ लाख	११ लाख
३१६	११	२१ अगस्त	३१ अगस्त
३२४	१२	३॥ लाख	३॥। लाख
३२४	१७	४४ ८८	४४ ६८
३२४	२३	उनके	ऊनके
३२५	८	१८६०	१६६०
३२५	११	८०	६०
३२५	१५	५३८	५३६
३२६	१३	१६ ०२	१६ ०१
३२७	८	१७ १२	१७ ११
३२७	६	५ ४२	५ ४१

[छठा भाग]

११	१६	शान्ति	शांति
२१	७	निरुप्य	निरूप्य
२६	७	शाम्येन्	शाम्येत्
३५	२१	गृह्णाति	गुणान् गृह्णाति
४६	१३	प्रश्रय-विनय का होना	प्रश्रय-आश्रय देने का गुण होना
६२	५	चढता है	बनता है

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७६	३	जो देता लेता नही। आधा मर्द वह है, जो लेता है पर देता नही	जो देता है, लेता नही, आधा मर्द वह है, जो लेता भी है और देता भी है।
८४	७	सुबोध	सुयोध
८५	१४	वलिमत्त	वलियत्त
१००	७	रागद्वेषो	रागद्वेषी
१०७	२	षट्षद	षट्पद
१७६	१३	उसे	इसे
१९३	४	दुर्वत्ता	दुर्वृत्ता
२०५	२०	तल्णे	तल्पे
२०६	२२	दृण्ड	दृण्ढं
२४१	८	कामधेनु मेरी आत्मा ही	मेरी आत्मा ही कामधेनु
२४३	२	व अरे	वा अरे
२६५	१४	बहिरा	बाहिरा
२६६	११	नास्य	नात्य
२७०	१४	वाहिरप्पा	वहिरप्पा
२७२	११	कर्णो	कर्णौ
२७२	१६	आदि	आदि पाँच
२७४	७	शिश्नो	शिश्नो
२७६	१	इदि	इंदिया
२८२	१	जिसकी	जिसके
२८३	८	राव्यान्ध	रात्र्यन्ध
२८६	१५	भ्रू	भ्रू
३१३	१७	हाथ	हत्था
		[सातवा भाग]	
३	३	तप्पये	तप्पते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	४	पुंरिस	पुरिस
३६	१८	के	के लिए
४७	१	अहित	ऐसी अहित
४८	३	अग्निदण्ड	अग्निदाह
५६	१६	नाऽवाजिना वाजिना	नाऽवाजिन वाजिना
५६	१६	गर्द	गर्दभ
६६	२१	स्वल्पभापी	सत्यभापी
६६	४	५०	८०
८१	३	पतिव्रता	पतिव्रत
८४	४	लघिष्ठेद	लघिष्ठेद
९४	२६	मूछ	मूद
११७	५	भी मैं	मैं भी
१२०	१०	मस्तिक	मस्तिष्क
१२२	६	परिणामो	परिमाणो
१३४	१५	वेगात्	वेगान्
१३७	७	२० मई	१५ जून
१४३	३	रसादिदोपो	रसादिधातुओ
१४३	११	अपराध से	उपशय मे
१४७	२	गुण	गुणा
१४९	५	मच्चाई	सफाई
१५४	१४	मुमूर्पाणा	मुमूर्पूणा
१७२	१	अनसुना	सुना-अनसुना
१९२	६	नाल	वाल
२३५	११	पुर ने	पूर न
२५३	४	पैगोडा को	पैगोडा क

[आठवा भाग]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०	१७	हवन मी	हवन की

वक्तृत्वकला के बीज भाग दसवाँ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५	१३	५१० से ५२५-४५० से ४७५	४५० से ४७५-५१० से ५२५
५३	२३	परौं	पैरो
६०	१५	सिद्धि	सिद्ध
६५	१	जहन्ति	जहति
८२	६	उसकी	उनकी
८४	२५	पहले के दो	×
१२३	१६	वह धनुर्धारी निन्द्य है। जो युद्ध भूमि मे मरते समय एव कमान पर तीर चढाकर एकाग्रचित से लक्ष्यवेध करने मे ममोह का प्रदर्शन करता है।	वह धनुर्धारी वेकार है, जो युद्ध-भूमि मे एव कमान पर तीर चढाते समय समोह का प्रदर्शन करे। इसी प्रकार वह तपस्वी भी निकम्मा है, जो मरणान्त कष्ट मे और मन को समाधिस्थ करने मे विमूढ-सा वन जाये।
१२५	५	दाक्ष्यं	दाक्ष्य
१३०	२	ज्ञान	जान
१३०	१५	सेवते	मेवेत
१४१	१४	कुण सरसी	कुण करसी
१४३	४	होते	होती
१४६	१५	व्यवहरज्ञो	व्यवहारज्ञो
१७३	८	पर	पर भी
१८८	८	जाती है	चली ही जाती है
१८६	१६	वोर	मोर
२४१	२३	इन्होने	उन्होने
२४३	६	कानी है।	कानी है, काली है।
२४८	१४	रवाना	विदा
२५८	१६	शाला	शाम्य

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ प

१ १

२३६

२८१ २८

२८२ १

२९६ १

३०२ ११

३०४ ६

३०६

३१२

३१४

४ २

१२

१७

२७

४६

६२

८५

११५

१२८

१५७

१५७

१५८

१५९

१७७

१८२

१८२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७६	१	छापने	छपाने
२८१	२	स्मृत	स्मृता
२८२	२०	खोद	खोदकर
२९६	१२	आई	आई एव वे मर गयी
३०२	१५	माने	मुझे वहन माने
३०४	१२	अति	अधि
३०६	३	प्राप्यस्यति	प्राप्स्यति
३१२	७	श्वश्वा	श्वश्रूवा
३१४	४	ढेली	डली

[नौवा भाग]

४	२२	तसपाणे	तसे पाणे
१२	१३	पायिव	पार्थिव
१७	७	विशुद्धिमनम	विशुद्धिर्मनस
२७	२१	पाप्पो	पापा
४६	१३	और	और व्यसन मे
६२	८	स्नानितो	स्नानिनो
८५	६	वर्प मे	वर्प ने
११५	२	कायतया	कार्यतया
१२८	४	लगा	लगा एव
१५७	१७	बदलो	बादलो
१५७	२०	घटो	घटो की
१५८	७	त्रग	त्रङ्ग
१५६	१२	१८६६	१८६१
१७७	१६	पर	पर भी
१८२	६	स्वतन्त्र	स्वतन्त्रता
१८२	११	बुल्वर	बुल्वरलिटन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध (१९४३-४८)	शुद्ध (१९४३-४८)
१८६	१९	पानी	पानी मे
२२१	१७	पर	पर भी
२२१	१८	वर्ष की	वर्ष से
२३४	३	गिवाड	विगाड
२३५	१	हानिकारण	हानिकारक
२३८	६	टेढो	डेढो
२३८	१३	हवलदारी	हवालदारी
२३८	१३	कटाने का	कराने का
२५१	४	इस दिन	इस दिन से
२६३	२१	के	×
२६३	२१	स्मृत	स्मृति
२६८	११	चमरेन्द्र ने	चमरेन्द्र
२७२	१२	काका	का
२८४	५	वहुत मे	वहुत से
३००	१६	श्वान को	श्वान के
३०१	१५	नीलयस	नील टास
३०३	१६	जाऊँ	जाऊँ तो
३०५	१४	साथ	अनुसार
३११	१०	भाद्रपक्ष	भाद्रपद
३११	१८	पुरो	पुरी
३१६	५	इसका	इसका स्थान
३२२	१३	क्वार्ल्स	क्वर्ल्स
३३०	२०	पजावी कहाव	गुजराती कहावत
३३१	३	मेह	नेह
३३२	१४	काणे	काणो
३३२	१५	मनो	ममो
३३२	२२		

[
के
पर
प्र
१
मार्गो
धर्म
पदम्य,
है।
के स्व
नियम
है।
सु
छ
लिए
की
में,
क

मुनिश्री धनराज जी द्वारा लिखित—साहित्य

एक विहंगावलोकन

[मुनि श्री धनराज जी द्वारा सकलित-सगृहीत महान ग्रथ वक्तृत्वकला के बीज भाग १ से ६ तक का सपूर्ण परिचय पाठक पिछले पृष्ठो पर पढ चुके हैं। अब उनके अन्य साहित्य का सक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत है।]

१ मनोनिग्रह के दो मार्ग

इस पुस्तक मे मन को निग्रह करने के लिए स्वाध्याय और ध्यान रूप दो मार्गों का गहनतम विवेचन है। वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा आदि स्वाध्याय के भेद-प्रभेद प्रथम मार्ग के मूल आधार हैं। पिण्डस्थ, पदस्थ, रूपस्थ एव रूपातीत ध्यान की विविध पद्धतिया दूसरे मार्ग मे वर्णित है। पार्थिवी, आग्नेयी, वायवी, वारुणी, तत्वरूपवती नामक सचित्र धारणाओं के स्वरूप ध्येयसिद्धि के लिए विशेष चिन्तन प्रस्तुत करते हैं। योग के यम, नियम आदि आठो अगो का गार्ह्य विवेचन भी पाठको के लिए बहुत उपयोगी है। दोनों मार्गों मे क्रमश वीस और चौंतीस विषयो पर महत्त्वपूर्ण तथ्यो का सुन्दर विवेचन मन को निग्रह करने के लिए पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत करता है। छ प्रकार के सचित्र आवर्त तथा श्री कर्मचन्दजी स्वामी का ध्यान साधकों के लिए विशेष सबलभूत है। मुनि श्री चन्दनमलजी स्वामी द्वारा लिखित पुस्तक की प्रस्तावना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। पुस्तक का दूसरा सस्करण सन् १९६८ मे श्री सम्पतरायजी बोरड, मोहनलालजी बरडिया बी कॉम द्वारा सपादित श्रीमती फत्तूनी देवी बोरड, गगानगर ने 'प्रेम प्रिन्टिंग प्रेस' आगरा मे मुद्रित कराया है। मूल्य १ र २५ पैसे।

२. सोलह सतियां

यह पुस्तक, जैन इतिहास में वर्णित, प्रमुख रूप से सोलह सतियो के जीवन-वृत्तो से अलकृत है। ये जीवनवृत्त इस अवसर्पिणी काल मे भगवान ऋषभनाथ के समय से लेकर भगवान महावीर के जीवन काल मे घटित होने वाली झाकियां प्रस्तुत करते है। इन जीवनवृत्तो मे आध्यात्मिकता, सामाजिकता, राष्ट्रीयता तथा नागरिकता का सजीव चित्रण है। श्रमण-सस्कृति पर आधारित ये जीवनवृत्त जैन साहित्य-धारा की प्राचीनता का स्वयभू प्रमाण है। इस पुस्तक सोलह सतियो के साथ जैन ग्रन्थो मे वर्णित शीलवती, चेलना, अजना, मदनरेखा इन चार महासतियो का जीवन-वृत्त भी परिशिष्ट मे प्रस्तुत है। प्रत्येक जीवनवृत्त के साथ उसकी आधारभूत विशेषता भी प्रस्तुत की गई है। इस सर्वजनप्रिय पुस्तक का तृतीय सस्करण सन् १९७२ मे श्री भवरलालजी दसानी, कलकत्ता द्वारा श्री श्रीचन्दजी मुराना 'सरस' के लिए 'राष्ट्रीय आर्ट प्रिन्टर्स' मे प्रकाशित किया गया है। **मूल्य २ रुपये।**

३. प्रश्न-प्रकाश

प्रस्तुत कृति मे जैनदर्शन के मौलिक तत्वज्ञान का सक्षेप मे महत्त्वपूर्ण विवेचन है। प्रत्येक तत्व को प्रश्नोत्तर के माध्यम से सरल भाषा मे प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक की उपयोगिता उसकी नौ हजार प्रतियो के प्रकाशन से स्वत सिद्ध हो जाती है। आबालवृद्ध मे तत्वज्ञान अधिक से अधिक प्रसारित हो, इसी भावना से इस पुस्तक की रचना हुई है। इसका पाचवां सस्करण ई० सन् १९७२ मे बनेचद-लूणकरण-मानमल सिंघी, शार्दूलपुर द्वारा 'श्री विष्णु प्रिन्टिंग प्रेस' आगरा, मे प्रकाशित हुआ है। **मूल्य ८० पैसे।**

४. लोक-प्रकाश

यह पुस्तक लोक का स्वरूप विषयक प्रश्नोत्तरो से सकलित है। इसमें विशेष रूप मे धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल, जीव इन छ द्रव्यो का विस्तृत विवेचन है। जैन आगमो पर आधारित बहुत ही सरल भाषा मे

उपयोगी तथ्यो का निरूपण किया गया है। तत्वज्ञान के साथ व्यवहार-ज्ञान का भी हिन्दी भाषा मे विस्तृत वर्णन सभी के लिए विशेष उपयोगी है। इसमे प्रस्तुत सामग्री पुन पुन पठन-पाठन करने योग्य है। इसका प्रकाशन 'श्री जैन तेरापथी सभा' बालोतरा ने कराया है। यह पुस्तक ४७ प्रामाणिक आगम ग्रन्थो के उदाहरणो युक्त नव पुजो मे विभक्त है। इसकी भूमिका वर्तमान सेशन जज श्री सोहनराज जी कोठरी ने लिखी है। मूल्य १ रु २५ पैसे।

५. ज्ञान-प्रकाश

इस कृति मे जैन दर्शन की आधारशिला-रूप पाँच ज्ञानो का विस्तृत विवेचन है। उनके भेद, प्रभेद आगम शास्त्रीय साक्षियो के साथ अतीव सरल भाषा मे सकलित किए गये है। विद्वान अध्येता के लिए इसमे चिन्तन एव मनन के अतिरिक्त अपनी गवेषणा के अनुरूप यथेष्ट सामग्री प्राप्त है। जैन शिक्षार्थियो के लिए तो यह एक अमूल्य सहायक ग्रन्थ सिद्ध हो सकता है। परा मनोविज्ञान के आधार पर कतिपय सत्य घटनाएँ भी पुस्तक मे उल्लिखित हैं। पुस्तक पाच पुजो मे विभक्त तथा ११८ प्रश्नो के विस्तृत उत्तरो का महत्त्वपूर्ण सकलन है। इस पुस्तक की भूमिका समाजभूषण श्री छोगमलजी चोपडा बी ए, बी एल ने लिखी है तथा सम्पादन कार्य श्री गुलाबचन्द वैद द्वारा हुआ है। यह पुस्तक सन् १९६२ मे श्री जैन श्वेताम्बर तेरापथी सभा सीनागर (बीकानेर) द्वारा प्रकाशित तथा 'आदर्श मुद्रणालय' बीकानेर मे मुद्रित हुई है। मूल्य १ रुपया।

६. दर्शन-प्रकाश

भारतीय संस्कृति मे प्राचीन व अर्वाचीन सिद्धान्तो के प्रवर्तको तथा उनके द्वारा प्रवर्तित धर्म-सम्प्रदायो का चिन्तन-मनन इस पुस्तक मे प्रस्तुत है। दर्शनशास्त्र के अध्येताओ के लिए पुस्तक मे वर्णित विवेचन विशेष उपयोगी है। प्रश्नोत्तरो के माध्यम से तत्व की यथार्थता का दिग्दर्शन कराया गया है। सभी धर्म सम्प्रदाय के भेद-प्रभेदो तथा उनके सिद्धान्तो का सुविस्तृत विवेचन उदारता की भावना से ओतप्रोत है। पुस्तक मे कही पर किसी दर्शन को ऊँचा या नीचा

बताने का प्रयत्न नही किया गया है। दर्शन से सम्बन्धित ऐतिहासिक व पारम्परिक परिज्ञान भी विशद रूप से परिवर्णित है। पुस्तक मे नय-निक्षेप, सप्तभगी आदि समस्त पहलुओ पर विस्तार से प्रकाश डालने के साथ-साथ बौद्ध दर्शन, नैयायिक, वैशेषिक, साख्य, योग, मीमासक, वेदान्त, चार्वाक, आदि दर्शनो पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त मुस्लिम, ईसाई, ताओ एव कन्फ्यूशियस, सिक्ख, यहूदी, पारसी आदि धर्मों का दिग्दर्शन भी पुस्तक मे कराया गया है। प्रत्येक विवेचन प्रामाणिक धर्मग्रन्थो पर आधारित है। १९ पुजो मे विभक्त वह पुस्तक सन् १९७३ मे श्री ईश्वरदास, चरणदास जैन टोहाना द्वारा 'सजय साहित्य सगम' के लिए 'राष्ट्रीय आर्ट प्रिन्टर्स' मे प्रकाशित हुई है। **मूल्य २ रुपये ५० पैसे।**

७. चारित्र-प्रकाश

जैन आगमो मे वर्णित पाच चारित्रो पर विशद प्रकाश देने वाली यह पुस्तक है। सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्मसपराय एव यथाख्यात चारित्र के भेद-प्रभेद इसमे विशेष रूप से वर्णित है। सरल भाषा मे छोटे-छोटे २३८ प्रश्नो के माध्यम से जैन मुनियो के कठिन चारित्र सम्बन्धी जिज्ञासाओ का समुचित समाधान है। महाव्रत, अणुव्रत आदि साधनापरक प्रक्रियाओ के नियमोप-नियम भी उल्लिखित हैं। चारित्रधर्मोपासको के लिए इस पुस्तक का पठन-पाठन बहुत उपयोगी हो सकता है। नव पुजो मे विभक्त यह पुस्तक बालोत-रानिवासी श्रीमती सुआदेवी छाजेड द्वारा सन् १९६६ मे 'भारत प्रिन्टर्स' जोधपुर मे मुद्रित हुई है। **मूल्य २ रुपये ५० पैसे।**

८. श्रावकधर्म-प्रकाश

जैन आगमो मे वर्णित श्रमणोपासको के लिए बारह व्रतो का विस्तृत वर्णन मय यह पुस्तक है। श्रावक आचरणो से सम्बन्धित भगवद्वाणी के व उत्तरवर्ती आचार्यों द्वारा प्रेरणाजन्य बनाये विधि-विधानो के आधारो पर १४९ समाधान-कारक प्रश्नो के उत्तर इसमे दिये गये हैं। पुस्तक पन्द्रह पुन्जो मे विभक्त है एव शास्त्रीय आधार पर बारह व्रतो का सुन्दर विवेचन है। श्रावक धर्म उपासको के लिए पुस्तक विशेष मननीय है। पुस्तक का दूसरा सस्करण मोमराज

तिलोकचद पुगलिया, डूगरगढ द्वारा 'राष्ट्रीय आर्ट प्रिन्टर्स' आगरा मे प्रकाशित हुआ है। मूल्य १ रुपये ५० पैसे।

६. मोक्ष-प्रकाश

मोक्ष-मार्ग पर अनवरत चलने वाले पथिक के लिए यह पुस्तक आलोक-स्तम्भ है। जैन दर्शन के अद्वितीय सिद्धात कर्मवाद का विस्तृत विवेचन इसका मूल आधार है। आठ कर्मो के भेदोपभेद, कर्म-प्रकृतियाँ, कर्मानुबन्ध के कारण, कर्मस्थिति, कर्मस्वरूप, कर्मनिवारणता आदि अनेक ज्ञातव्य तथ्यो से सम्बन्धित प्रश्नो के विस्तृत उत्तर रूप यह पुस्तक है। प्रत्येक उत्तर आगम शास्त्रीय उद्धरणो से युक्त है। इस आलोकस्तम्भ के प्रकाश मे साधक ज्ञानाराधना की उपासना करता हुआ मोक्षप्राप्ति को सरल व सुगम बना सकता है। पुस्तक सन् १९७१ मे 'आदर्श साहित्य सघ द्वारा दिल्ली मे प्रकाशित हुई है। मूल्य ५ रुपया ५० पैसे।

१०. पच्चीस बोल का सरल विवेचन

इसमे पच्चीस बोल के थोकडे की बहुत-ही सीधी सादी भाषा मे व्याख्या की गयी है। बाल-वृद्ध एव महिलायें इसको पढकर सहज मे ही जैन तत्त्व का गम्भीर रहस्य समझ सकते हैं। मूल्य १ रुपया ५० पैसे।

११. चमकते चाँद

इस पुस्तक मे जैन श्वेताम्बर तेरापथी सघ के प्रभावशाली नव आचार्यो के जीवन वृत्तो का सुन्दरतम चित्रण है। इस गौरवपूर्ण सक्षिप्त इतिहास मे कतिपय घटनाएँ तो बहुत मार्मिक तथा रोचक हैं। पुस्तक मे आचार्यो के सक्षिप्त परिचय के साथ उनके जन्म सवत् गाँव, दीक्षा, पट्टारोहण, आदि वर्णनो का दिग्दर्शन विशेष महत्त्वपूर्ण है। पुस्तक की उपयोगिता उसकी तृतीय आवृत्ति से स्वत सिद्ध हो जाती है। वि स २०२८ मे पुस्तक का तृतीय सस्करण श्री रत्नीराम जैन कैथल मडी (हरियाणा) द्वारा प्रेम प्रिंटिंग प्रेस आगरा मे मुद्रित हुआ है। पुस्तक की भूमिका मुनि श्री चन्दनमलजी द्वारा लिखी गई है। मूल्य ४० पैसे।

१६. सच्चा धन

यह पुस्तक जैन तत्वज्ञान कण्ठाग्र करने के लिए विशेष उपयोगी है। पुस्तक केवल पठनीय ही नहीं है, अपितु सदा-सदा के लिए पास में रखने योग्य है। पुस्तक श्री दयाराम बृजलाल टोहाना मण्डी द्वारा मुद्रित है।

मूल्य ३० पैसे

१७. चौदह नियम

इस पुस्तक में जैन श्रावकों के प्रतिदिन धारण करने योग्य चौदह नियमों का विशद विवेचन है जो प्रत्येक जैन श्रावक के लिये पढ़ने के योग्य है। इस पुस्तक के नौ संस्करण (लगभग १८,००० पुस्तकें) छप चुके हैं। इसका वर्तमान प्राप्तिस्थान आदर्श साहित्य संघ, चूरू है।

☐ गुजराती रचनाएँ

१८. धर्म एटले शुं ?

इसमें तेरापंथ के आदि-पुरुष श्री भिक्षु स्वामी प्ररूपित दया-दान का विवेचन है। यह पुस्तक श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बम्बई से प्रकाशित है।

१९. परीक्षक बनो ?

इसमें जैन आगमानुसार साधुओं के आचार-विचार का विस्तृत विवेचन है। इसका प्रकाशन भी श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बम्बई ने किया है।

संपूर्ण साहित्य प्राप्त करने के लिए संपर्क करें।

मोतीलाल पारख ☐ **इन्द्रचन्द नौलखा**

श्यामसुखा हाऊस **अभयकुमार राजकुमार नौलखा**

ईंटों का चौक पो० बीकानेर दहीमंडी पो० ग्वालियर

१६. सच्चा धन

यह पुस्तक जैन तत्वज्ञान कण्ठाग्र करने के लिए विशेष उपयोगी है। पुस्तक केवल पठनीय ही नही है, अपितु सदा-सदा के लिए पास में रखने योग्य है। पुस्तक श्री दयाराम बृजलाल टोहाना मण्डी द्वारा मुद्रित है।

मूल्य ३० पैसे

१७. चौदह नियम

इस पुस्तक मे जैन श्रावकों के प्रतिदिन धारण करने योग्य चौदह नियमों का विशद विवेचन है, जो प्रत्येक जैन श्रावक के लिये पढने के योग्य है। इस पुस्तक के नौ संस्करण (लगभग १८,००० पुस्तकें) छप चुके हैं। इसका वर्तमान प्राप्तिस्थान आदर्श साहित्य संघ, चुरु है।

□ गुजराती रचनाएँ :

१८. धर्म एटले शुं ?

इसमे तेरापथ के आदि-पुरुष श्री भिक्षु स्वामी प्ररूपित दया-दान का विवेचन है। यह पुस्तक श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बम्बई से प्रकाशित है।

१९. परीक्षक बनो ?

इसमे जैन आगमानुसार साधुओं के आचार-विचार का विस्तृत विवेचन है। इसका प्रकाशन भी श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बम्बई ने किया है।

संपूर्ण साहित्य प्राप्त करने के लिए संपर्क करें।

मोतीलाल पारख □ इन्द्रचन्द नौलखा
श्यामसुखा हाऊस अभयकुमार राजकुमार नौलखा
रांघड़ों का चौक पो० बीकानेर दहीमंडी पो० ग्वालियर

मुनि श्री धनराज जी की अप्रकाशित रचनाएँ

संस्कृत

१ देवगुरुधर्म-द्वात्रिंशिका
२ प्रास्ताविक-श्लोकशतकम्
३ ऐकाह्निक-श्रीकालुशतकम्
४ श्रीकालुगुणाष्टकम्
५ श्रीकालुकल्याणमन्दिरम्
६ भाविनी
७ ऐक्यम्
८ श्रीभिक्षुशब्दानुशासनलघुवृत्ति-तद्धितप्रकरणम्

गुजराती

९ गुर्जरभजनपुष्पावलि
१० गुर्जरव्याख्यानरत्नावलि

हिन्दी

११ वैदिकविचारविमर्शन
१२ संक्षिप्तवैदिक विचारविमर्शन
१३ अवधान-विधि
१४ संस्कृत बोलने का सरल तरीका
१५ दोहा-संदोह
१६ व्याख्यान-मणिमाला
१७ व्याख्यानरत्नमञ्जूषा
१८ जैनमहाभारत-जैनरामायण आदि बीस व्याख्यान
१९ उपदेशसुमन माला
२० उपदेशद्विपञ्चा

राजस्थानी

२१ धनबावनी
२२ सवैयाशतक
२३ औपदेशिक ढालें
२४ प्रास्ताविक ढालें
२५ कथाप्रबन्ध
२६ ७ बड़े व्याख्यान
२७ ग्यारह छोटे व्याख्यान
२८ सावधानी को समुद्र

पञ्जाबी

२९ पञ्जाब-पच्चीसी